

UNIVERSAL
LIBRARY

OU_180695

UNIVERSAL
LIBRARY

'—552—7-7-66—10,000

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

No. H83

Accession No. G. H. 2264

36152
101 सिंह, राजेश्वर प्रसाद
भाषी

This book should be returned on or before the date
marked below.

सरस्वती-सिरीज़ नं० ६३

साथी

राजेश्वरप्रसादसिंह

3/126



प्रकाशक

इंडियन प्रेस लिमिटेड

प्रयाग

सरस्वती-सिरीज

स्थायी परामर्शदाता—डा० भगवानदास, पण्डित अमरनाथ झा, भाई परमानंद, डा० प्राणनाथ विद्यालङ्कार, श्री सत्यदेव विद्यालङ्कार, पं० द्वारिका-प्रसाद मिश्र, संत निहालसिंह, पं० लक्ष्मणनारायण गर्द, बाबू संपूर्णानन्द, श्री बाबूराव विष्णुपराकर, पण्डित केदारनाथ भट्ट, व्योहार राजेन्द्रसिंह, श्री पदमलाल पुत्रालाल बख्शी, श्री जैनेन्द्र कुमार, बाबू वृन्दावनलाल वर्मा, सेठ गोविन्ददास, पण्डित ज्ञानेश चटर्जी, डा० ईश्वरीप्रसाद, डा० रमाशंकर त्रिपाठी, डा० परमात्माशरण, डा० बेनीप्रसाद, डा० रामप्रसाद त्रिपाठी, पण्डित रामनारायण मिश्र, श्री संतराम, पण्डित रामचन्द्र शर्मा, श्री महेश-प्रसाद मौलवी फाजिल, श्रीरायकृष्णदास, बाबू गोपालराम गहमरी, श्री उपेन्द्र-नाथ “अशक्त”, डा० तारानंद, श्री चन्द्रगुप्त विद्यालङ्कार, डा० गोरखप्रसाद, डा० सत्यप्रकाश, श्री अनुकुलचन्द्र मुकर्जी, रायसाहब पण्डित श्रीनारा-यण चतुर्वेदी, रायबहादुर बाबू श्यामसुन्दरदास, पण्डित सुमित्रानन्दन पंत, पं० सूर्यकान्त त्रिपाठी ‘निराला’, पं० नन्ददुलारे वाजपेयी, पं० हजारिप्रसाद द्विवेदी, पण्डित मोहनलाल महतो, श्रीमती महादेवी वर्मा, पण्डित अयोध्या-सिंह उपाध्याय ‘हरिऔध’, डा० पीताम्बरदत्त बख्वाल, डा० धीरेन्द्र वर्मा, बाबू रामचन्द्र टंडन, पण्डित केशवप्रसाद मिश्र, बाबू कालिदास कपूर, इत्यादि, इत्यादि ।

रहस्य-रोमांच

साथी

दो नवयुवकों और एक नवयुवती का साहसपूर्ण पराक्रम ।

राजेश्वरप्रसादसिंह

Checked 1965

१

तोंगा रुका। वे उत्तरे और ताँगेवाले को रुके रहने का आदेश देकर नदी-तट की ओर चल पड़े। वे तीन थे—एक नवयुवती और दो नवयुवक। जिस सड़क पर वे चल रहे थे, वह एक छोटी-सी बस्ती के अन्दर होकर तट की ओर जाती थी।

थोड़े से घरों की वह बस्ती नगर की सीमा में तो अवश्य थी, किन्तु नगर के धुँये-धक्कड़, शोर-गुल, भीड़-भाड़ से दूर थी। बृहदाकार वृक्षों के एक मुरमुट में वह बसी हुई थी और उसके नीचे जाह्नवी बहती थी।

नगर के उस भाग में शान्ति का पूर्ण राज्य था। कोलाहल से ऊबे हुए लोग शान्ति की खोज में अकसर उधर आ निकलते थे।

सड़क खत्म हो गई, बस्ती की सीमा आ गई। सुविस्तृत रेताला मैदान सामने आ गया। तट से आती हुई ठण्डी हवा के झोंके उनके थके-माँदे शरीरों में नव-स्फूर्ति का संचार करने लगे।

“बड़ा रद्दी सप्ताह था।” मीरा ने कहा।

“बिलकुल रद्दी।” राजमोहन ने कहा।

“बेशक रद्दी था,” रामलाल बोला—“लेकिन सभी सप्ताह तो हमारे लिए एक-से रहते हैं—बिलकुल रूखे-फीके।”

वे फिर अपने-अपने विचारों में निमग्न हो गये। एक झाड़ी के समीप रुककर राजमोहन ने गुलाब के कई फूल तोड़े। मीरा ने फूल ले लिये। दो क्षण तक गौर से देखकर, सूँघकर, मुँह बिचकाकर उसने उन्हें ज़मीन पर फेंक दिया।

“फूल भी काले पड़ गये !” उसने कहा—“इस गन्दे शहर की गन्दगी यहाँ भी पहुँच गई ।”

राजमोहन उस फूल की ओर खेदपूर्ण दृष्टि से देखने लगा, जो मीरा के जूते के नीचे पड़कर कुचल गया था ।

“इसमें फूलों का क्या क्रसूर है ?”

“मुझसे भूल हुई, राजू,” मीरा ने कहा—“इन फूलों के साथ मैंने बेशक अन्याय किया । लेकिन तुम जानते हो कि मेरे मन की दशा क्या है । अगर मैं इस शहर में दो-एक साल और रहा, तो मेरी दशा भी इन्हीं फूलों की सी हो जायगी । यह विचार आनन्ददायक तो नहीं है ?”

राजमोहन चुप रहा । प्रश्न के उस पहलू पर उसका ध्यान नहीं गया था ।

जरा देर में वे रेत के एक टीले पर पहुँच गये । मीरा अस्त-व्यस्त बैठ गई और घुटनों पर हाथ बाँधकर जल-धारा की ओर देखने लगी । राजमोहन चित लेट गया और जिज्ञासा-भरी दृष्टि से आकाश की ओर ताकने लगा । रामलाल उन दोनों से कुछ दूर हटकर आराम से बैठ गया और जेब से पाइप और पाउल निकालकर पाइप में तम्बाकू भरने लगा ।

“अब बतलाओ, मीरा,” इतमीनान से पाइप जलाकर उसने कहा—“वह बात क्या है ?”

“जरा ठहरो, सुनने दो ।”

“क्या सुन रही हो ? मुझे तो कुछ सुनाई नहीं देता ।”

राजमोहन हँस पड़ा ।

“बात यह है, रामलाल,” उसने कहा—“कि तुम्हारे कान प्रकृति-संगीत सुनने के लिए नहीं बनाये गये हैं । मीरा सुन रही है—समार का मधुर आलाप, पक्षियों का कल-गान ।”

“अच्छा, यह बात है ! मुझे तो, भाई, रेडियो ज्यादा पसन्द है ।”

“यही तो बात है ।”

रामलाल कश पर कश खींचने लगा । दस मिनट बीत गये । उन दोनों की खामोशी उसे फिर खलने लगी ।

“अच्छा, मोरा, हवा और चिड़ियों के गाने सुनने की तुम्हारी सनक अगर पूरी हो चुकी हो, तो अब यह बतलाने की कृपा करो कि मुझे तुम लोग यहाँ क्यों घसीट लाये हो ।”

“सङ्गीत का मजा नहीं ले सकते, तो सुगन्ध ही का आनन्द लो ।” राजमोहन ने कहा—“हफ्ते भर फ्रैक्टरी में चमड़े और तेल की दुर्गन्ध सूँघते-सूँघते नाक में दम हो गया । इस वक्तूँ दिमाग कुछ-कुछ ताजा होने लगा है । देखो, कैसी भीनी-भीनी सुगन्ध हवा में लदी चला आ रही है ! तुम्हारे पाइप की बू भी इस सुगन्धित वायुमण्डल को दूषित नहीं कर पा रही है ।”

“बहुत बढ़िया तम्बाकू है । यह तेज ज़रूर है लेकिन सस्ती है और चूँकि यह तेज है, इसलिए इसे ज्यादा पिया नहीं जा सकता ।”

“खूब ! इसी तरह किफायत से चलते रहोगे, तो एक दिन करोड़पति बन जाओगे ।”

“वेशक बनूँगा—ज़रूर बनूँगा ।”

राजमोहन ने दीर्घ निःश्वास खींचा । रामलाल तनकर बैठ गया ।

“तुम दोनों अपने को न जाने क्या समझते हो ।” उसने कहा—“चूँकि तुम लोग साहित्य का अध्ययन करते हो और सङ्गीत और सिनेमा का आनन्द लूटते फिरते हो और मैं शार्टहेण्ड और टाइप-राइटिंग सीखता हूँ, इसलिए समझते हो कि मुझसे बहुत बड़े हो । लेकिन ज़रा गौर करो तो तुम्हें मालूम हो जाय कि तुम भी जीवन से वही चाहते हो जो मैं चाहता हूँ । राजमोहन विश्व-विख्यात लेखक

बनना चाहते हैं। मीरा सुन्दर वस्त्र चाहती हैं, बहुमूल्य आभूषण चाहती हैं, आनन्द की अनेक सामग्रियाँ चाहती हैं। मुझे आकाश-कुसुम तोड़ने की सनक नहीं है और न मैं उसके स्वप्न देखने ही में अपना समय नष्ट करता हूँ। मैं धन पैदा करना चाहता हूँ—आवश्यकता से बहुत अधिक धन। और धन पैदा कर लेने के बाद मैं यह तय करूँगा कि उसे किस काम में लगाऊँ।”

मीरा बेचैन हो उठी। चिन्ता की रेखाएँ उसके ललाट पर व्यक्त हो गईं। जो क्षणिक शान्ति उसे वहाँ प्राप्त हुई थी वह फिर छिन गई।

“हम दोनों ने कभी अपने को तुमसे बड़ा नहीं समझा,” कोमल स्वर में उसने कहा—“और मैं जानती हूँ कि जो कुछ तुमने कहा है उसका अधिकांश सत्य है। यह सच है कि मैं सुन्दर वस्त्र और बहुमूल्य आभूषण चाहती हूँ। लेकिन इससे भी अधिक मैं यह चाहती हूँ कि संसार में भ्रमण करूँ, सुन्दर स्थानों में निवास करूँ, सुन्दर सज्जीत सुनूँ और उन लोगों को अपने समीप रखूँ जो मुझे पसन्द हों। धन कमाकर मैं इन कामों में लगाऊँगी। तुम अपने धन को क्या करोगे?”

“शक्ति प्राप्त करूँगा।”

“और उस शक्ति को किस तरह इस्तेमाल करोगे?” राज-मोहन ने पूछा।

दो क्षण तक रामलाल चुपचाप पाइप पीता रहा।

“आर्थिक जगत् में अपने लिए मैं एक विशेष स्थान बनाऊँगा।” उसने उत्तर दिया—“मैं बड़े-बड़े कारखाने खोलूँगा और बेच दूँगा, दूसरों के कारखाने खरीदूँगा और बेचूँगा और हर सौदे में धन पैदा करूँगा। लोग मेरी तरफ़ इशारा करेंगे। बैंकों के मैनेजर मेरे पास सलाह और सहायता माँगने आयेंगे। मैं चाहूँगा कि मुझमें ऐसी शक्ति हो कि जिसे चाहूँ उसे बर्बाद कर दूँ।”

“ऐसी दशा में यह स्पष्ट है, मीरा,” राजमोहन ने कहा—“कि हमारा काम बहुत कठिन नहीं है। वज्जीराबाद में रहकर तुम अपने हौसले पूरे नहीं कर सकेगे, रामलाल। हम तुम्हें यहाँ यह खुश-खबरी सुनाने के लिए लिवा लाये हैं कि हमने अब यह शहर छोड़ देने का इरादा कर लिया है। और हम यह चाहते हैं कि तुम भी हमारे साथ चलो।”

“कहाँ जाओगे तुम लोग ?” रामलाल ने पूछा।

“कालीनगर।” दोनों ने एक साथ उत्तर दिया।

“चाचाजी से आज्ञा ले चुके हो ?”

“अभी नहीं।” मीरा ने कहा—“आज रात को हम उनसे बात करेंगे। हमने सोचा कि अगर तुम भी चलने को राजी हो जाओगे तो हमारा काम बड़ा आसान हो जायगा। चाचाजी से तुम बेधड़क बात कर लेते हो, हम लोग कुछ हिचकते हैं।”

“तुम लोगों के पास कितने रुपये हैं ?” रामलाल ने पूछा।

“मीरा के पास चार सौ साठ रुपये हैं, मेरे पास सात सौ पचासी,” राजमोहन ने उत्तर दिया—“एक हजार रुपये तुम्हें कल मिलेंगे और डाकखाने में भी तुम्हारे कुछ रुपये जरूर जमा होंगे।”

रामलाल मुस्कराया। उसकी पास-बुक उसके लिए बहुमूल्य वस्तु थी।

“कुछ हैं तो लेकिन काफी नहीं हैं।” उसने कहा—“खैर, काम तो चल ही जायगा। हम लोग एक साथ रहेंगे तो खर्च ज्यादा नहीं पड़ेगा। वहाँ तुम लोग क्या करोगे ?”

“राजमोहन पत्रकार और लेखक बनेंगे,” मीरा ने उत्तर दिया—

“जब तक इन्हें अपने लेखों और पुस्तकों से काफी आमदनी नहीं होने लगेगी तब तक के लिए ये किसी समाचारपत्र के कार्यालय में नौकरी कर लेंगे। लेकिन मेरा खयाल है कि इन्हें बहुत दिनों तक नौकरी नहीं करनी पड़ेगी। शीघ्र ही ये बड़े-बड़े

समाचारपत्रों के संवाददाता, स्वतंत्र पत्रकार और प्रसिद्ध लेखक बन जायेंगे।”

“और तुम ?”

“मैं अभिनेत्री बनूँगी। लेकिन पहले कुछ दिनों तक मैं इनका रचनाएँ टाइप करूँगी और काम चलाने के लिए कोई छोटी-मोटी नौकरी कर लूँगी। मेहनती आदमी कालीनगर में बेकार नहीं रह सकता और अगर फ़िज़लख़र्ची न की जाय, तो थोड़े से रुपयों से भी वहाँ काम चल सकता है।”

“ऐसी बात है ?”

वे रामलाल की ओर चिन्तित दृष्टि से देखने लगे। बाल्यकाल से एक ही घर में रहने के कारण वे उसे काफ़ी समझते थे। वे जानते थे कि उसके और उनके दृष्टिकोणों में ऐसे मौलिक विभेद हैं जो किसी तरह मिट नहीं सकते। उन्हें मालूम था कि उसका जीवन-मार्ग उनके जीवन-मार्ग से बिल्कुल अलग है। फिर भी उनकी यह प्रबल इच्छा थी कि वह उनका साथ दे। उससे आर्थिक सहायता पाने का उन्हें ज़रा भी आशा नहीं थी, लेकिन उनका ख़याल था कि अगर वह उनके साथ रहेगा तो उनकी अनेक कठिनाइयाँ आसानी से हल हो सकेंगी। उसका सुदृढ़ आत्म-विश्वास उनके लिए अत्यधिक आकर्षक था।

पाइप पीता हुआ, भावशून्य दृष्टि से जल-धारा की ओर देखता हुआ, रामलाल पूर्ण तल्लीनता से विचार कर रहा था। इन दोनों का बोझ क्या उसके ऊपर पड़ेगा ? नहीं, नहीं। ऐसा मौक़ा तो अपने जीवन में वह कभी आने ही न देगा कि उसे किसी का बोझ उठाना पड़े। एक न एक दिन तो उसे कालीनगर जाना ही होगा और इन लोगों के साथ जाने से उसका कुछ बिगड़ेगा नहीं। इसके अतिरिक्त एक बात और है। वह एक विचारमात्र है, किन्तु उसके महत्त्व को वह अस्वीकार नहीं कर

सकता। हाँ, इस बात का वह जरूर खयाल रखेगा कि वह उसके उद्देश्यों के मार्ग में कोई बाधा उपस्थित न कर सके। मीरा बड़ी सुन्दर है। अभी वह एक अधखिली कली है। उसका सुकैमल शरीर अभी अपने विकास-काल में है। एक दिन यह अर्ध-विकसित कली पूर्णतः विकसित हो जायगी। तब शायद संसार की कोई सुन्दरी उसका मुक्ताबला न कर सकेगी। उस समय यदि—

“मैं भी चलूँगा।” निश्चयपूर्ण स्वर में उसने कहा।

“शाबाश!” प्रसन्न होकर उत्साहपूर्ण स्वर में राजमोहन बोला—“तुमसे हमें ऐसी ही आशा थी।”

“धन्यवाद!” मुस्कराकर मीरा ने कहा—“तुम्हारा निश्चय सुनकर मुझे बड़ी खुशी हुई।”

“चाचाजी से कब बात करोगी?” रामलाल ने पूछा।

“आज रात को भोजन के उपरान्त।” मीरा ने उत्तर दिया—
“हम यहाँ अब एक दिन भी ठहरना नहीं चाहते। यहाँ से जाने की बात सोचते-सोचते मैं तो बिलकुल उतावली हो गई हूँ। ज़रा सोचो तो, कैसा आनन्द रहेगा! तुम दोनों को चमड़े की उस गन्दी फ़ैक्टरी में दिन भर माथा-पच्ची नहीं करनी पड़ेगी, मुझे भी सारे दिन उस रही स्कूल में लड़कियों के साथ भाँय-भाँय नहीं करनी होगी। चाचाजी के उस मनहूस घर से हमारा पिण्ड छूट जायगा, और उनकी कठोर धार्मिकता हमें आये-दिन तङ्ग न कर सकेगी। मैं तो समझती हूँ कि उस घर में कुछ दिन और रहूँगी तो अवश्य मर जाऊँगी।”

राजमोहन ने सिर हिलाकर सहमति प्रकट की।

बाबू श्यामलाल वर्मा वज्जीराबाद के प्रतिष्ठित नागरिक थे। बीस साल पहले आपने उस नगर में चमड़े की एक बहुत बड़ी फैक्टरी क्रायम की थी, जिसमें चमड़े का हर तरह का सामान तैयार होता था। वह फैक्टरी आज भी सुव्यवस्थित ढङ्ग से चल रही थी। तीन बार आप वज्जीराबाद म्यूनिसिपल बोर्ड के अध्यक्ष चुने जा चुके थे और चाहते तो चौथी बार भी अवश्य चुन लिये जाते। कठोर धार्मिकता आपमें कूट-कूटकर भरी थी। आप उदार-हृदय भी थे। अनेक सार्वजनिक संस्थाएँ आपसे दान प्राप्त कर चुकी थीं और करती रहती थीं।

आपकी वयस ५८ वर्ष की थी और आप विधुर थे। आपके कोई सन्तान नहीं थी। पत्नी के देहावसान के बाद आपका जीवन पूर्णतया एकाकी बन गया था और शायद एकाकी ही बना रहता यदि संयोगवश एकाएक आपके ऊपर मोरा कपूर, राजमोहन वर्मा और रामलाल सिनहा के पालन-पोषण का भार न आ जाता। तानों के माता-पिता मर चुके थे और बाबू श्यामलाल के अतिरिक्त उनका कोई ऐसा नातेदार या हितैषी न था जो उनके भरण-पोषण का भार वहन कर सकता। राजमोहन उनका भतीजा था, रामलाल भानजा था और मोरा उनके एक वनिष्ठ मित्र की पुत्री थी। तीनों को आपने अपने संरक्षण में ले लिया। इस कार्य से आपको प्रसन्नता हुई या अप्रसन्नता, यह कहना कठिन है, क्योंकि कोई व्यक्ति ऐसा न था जिससे आप अपने मन की बात कहते हों।

अपने विचारों और आदर्शों के अनुसार आपने तीनों का पालन-पोषण किया और उन्हें समुचित शिक्षा दिलवाई। प्रेजुएट हो चुकने के बाद राजमोहन और रामलाल आपकी फैक्टरी में

काम करने लगे और मोरा एक स्थानीय पाठशाला में अध्यापिका हो गई। शिक्षण-कार्य के अतिरिक्त मोरा नित्य प्रातःकाल फ़ैक्टरी में जाकर दो-एक घंटा पत्रादि टाइप करती थी और वर्मा-भवन की देख-भाल करती थी। तीनों को उनकी सेवाओं के लिए मासिक वेतन मिलता था।

वर्मा लेदर फ़ैक्टरी में राजमोहन एक साधारण पद पर नियुक्त था, क्योंकि वह अपने अभिभावक की दृष्टि में अयोग्य था। रामलाल सुयोग्य कार्यकर्ता प्रमाणित हो चुका था, इसलिए वह एक महत्त्वपूर्ण पद पर प्रतिष्ठित था। वह और भी तरक्की करता यदि कार्य-संचालन के सम्बन्ध में उनसे नित्य विवाद न करता रहता।

वर्मा-भवन अपने स्वामी के सर्वथा अनुरूप था। वह मकान था तो काफी बड़ा, लेकिन सुन्दर नहीं था। उसकी सूरत से वैसी ही गम्भीरता और वैसी ही कट्टर सादगी टपकती थी जैसी बाबू साहब की आकृति पर बरसती थी। उन्हें उससे कोई शिकायत न थी, किन्तु उनके आश्रितों की सम्मति भिन्न थी।

रात में भोजन के उपरान्त बाबू साहब ने कहा—“मोरा ! अभी साढ़े आठ बजे महामाया के मन्दिर में स्वामी सेवानन्द का ‘व्यवसाय और धर्म’ पर भाषण होगा। स्वामीजी बड़े प्रकाण्ड पण्डित हैं। मेरी इच्छा है कि तुम और राजमोहन उस सभा में जरूर शरीक हो। रामलाल को तो शायद शार्टहैंड साखने जाना है।”

“नहीं, चाचाजी, उस सभा में मैं न जा सकूँगा। मुझे सामान बाँधना है।”

“सामान बाँधना है ! इसका क्या मतलब ?”

“बात यह है, चाचाजी, कि राजमोहन, रामलाल और मैंने वज्जीराबाद छोड़ देने का निश्चय कर लिया है। मैं अपने और राजमोहन की तरफ से बोल रही हूँ। रामलाल अपनी बात खुद कहेंगे। आपने हम दोनों के ऊपर अब तक जो कृपा की है

उसके लिए हम अत्यन्त कृतज्ञ हैं, लेकिन अब आगे हम उससे लाभ उठाना नहीं चाहते। हम यहाँ सन्तुष्ट नहीं हैं।”

“असन्तुष्ट होने का कारण ?”

“वज्जाराबाद हमें वह सब नहीं दे सकता जो हम चाहते हैं। सारी बातें ठीक तरह बयान कर पाना मेरे लिए कठिन है, चाचाजी, लेकिन एक बात बिलकुल निश्चित है और वह यह है कि हमारा इरादा पक्का है। हम ऐसी जगह काम करना और जीवन व्यतीत करना चाहते हैं जहाँ कम से कम कुछ समय तक ऐसे वातावरण में साँस ले सकें जो सुन्दर हो और जहाँ की सारी वस्तुएँ चित्ताकर्षक हों।”

“संसार के किस कोने में तुम लोग उस अद्भुत वातावरण की खोज करोगे ?”

“सबसे पहले कालीनगर में।”

तब बाबू साहब राजमोहन की ओर मुड़े।

“अपने बारे में कुछ कहना चाहते हो ?” उन्होंने पूछा।

“मीरा ने जो कुछ कहा है उसके प्रत्येक शब्द से मैं सहमत हूँ।” उसने उत्तर दिया—“आपकी सहायता और संरक्षण के लिए मैं हृदय से कृतज्ञ हूँ, लेकिन फ़ैक्टरी का काम मुझे पसन्द नहीं है। मैं इस शहर से जाना चाहता हूँ।”

“तुम बिलकुल अयोग्य कर्मचारी हो। मेरी फ़ैक्टरी को तुमसे कोई लाभ नहीं है। दस-बोस रकम में भी तुम सही-सही जोड़ नहीं सकते, रजिस्ट्रों की खाना-पूरी भी तुम ठीक तौर पर नहीं कर सकते। कालीनगर में अपनी जीविका का क्या प्रबन्ध करोगे ?”

“मैं लेख और कहानियाँ लिखूँगा। कुछ रचनाएँ मैंने की भी हैं।”

“अपनी रचनाओं से अभी तक कुछ पैदा किया है ?”

“नहीं।”

“कोशिश की है ?”

“जी हाँ ।”

“तब तुम क्यों समझते हो कि कालीनगर में तुम्हें इससे अधिक सफलता मिलेगी ?”

“इसका कारण यह है कि इस रद्दी वातावरण में कोई उत्कृष्ट रचना कलम से नहीं निकल सकी । मीरा के कथन से मैं पूरी तरह सहमत हूँ । आपकी फ़ैक्टरी का मालिक बनने से कालीनगर में भूखों मरना मैं ज्यादा पसन्द करूँगा ।”

“अच्छा है, शौक से हौसला पूरा करो । अच्छा, रामलाल, अब तुम कहो । तुम भी जाना चाहते हो ?”

“जी हाँ, मेरा इरादा भी यही है,” रामलाल ने उत्तर दिया — “लेकिन मेरे निश्चय के कारण इन लोगों के कारणों से भिन्न हैं । अगर इस नगर में मेरे लिए धन पैदा करने की यथेष्ट सुविधाएँ होतीं, तो मुझे इसके खिलाफ़ कोई शिकायत न होती । कम से कम आपकी फ़ैक्टरी में मेरे लिए तरक्की की काफी गुञ्जाइश नहीं है ।”

“क्यों नहीं है ? तुम परिश्रमी कर्मचारी हो और कुछ बातों के विचार से सुयोग्य भी हो ।”

रामलाल एक कदम आगे बढ़ आया । आशा-जनित कौतूहल उसके चेहरे पर व्यक्त हो गया ।

“देखिए, जनाब,” गम्भार स्वर में उसने कहा—“अपने गुदाम का प्रबन्ध करने के लिए आप मुझे ८५) प्रति मास देते हैं । मैं इससे अधिक पाने का अधिकारी हूँ, लेकिन मेरा पद विशेष महत्त्व का नहीं है । आपकी फ़ैक्टरी से सम्बन्ध रखनेवाली सारी बातों का मैंने अच्छी तरह अध्ययन किया है । आपका व्यवसाय समय की प्रगति से बहुत पिछड़ा हुआ है । अगर ८५) के बजाय आप मुझे ५००) प्रति मास देने को तैयार हों और अपने व्यवसाय का पुनर्निर्माण करने का पूरा अधिकार दे सकें, तो मैं आपके यहाँ

खुशी से पड़ा रहूँगा। आपकी फैक्टरी को नीचे से ऊपर तक मैं बिलकुल नई कर दूँगा। पुरानी मशीनों को हटाकर नई मशीनें लगवाऊँगा। प्रत्येक विभाग का नवीन और प्रगतिशील नियमों के अनुसार सञ्चालन करूँगा। और मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि मेरे आदेशानुसार पुनर्निर्मित होकर आपका व्यवसाय अब से तिगुना-चौगुना मुनाफ़ा देने लगेगा। लेकिन अगर मेरा यह प्रस्ताव आपको मंज़ूर न हो तो आप मुझे कार्य-भार से मुक्त कर दें और मेरा पैतृक धन मुझे दे दें। मैं इन लोगों के साथ काली-नगर चला जाऊँगा।”

बाबू साहब कई क्षणों तक निःस्तब्ध खड़े रहे। फिर उन्होंने कहा—“तुम खुशी से जा सकते हो। राजमोहन भी जा सकते हैं। तुम दोनों के जाने में मुझे कोई आपत्ति नहीं है। लेकिन मीरा का जाना मैं ज़रा भी उचित नहीं समझता।”

“यह क्यों, चाचाजी?” चिन्तित स्वर में मीरा ने पूछा।

“ये दोनों पुरुष हैं। तुम स्त्री हो।”

“मैं उन स्त्रियों में नहीं हूँ, चाचाजी,” मीरा ने उच्चैःस्वरे में कहा—“जो अपने को पुरुषों से हीन समझती हैं और हीनता की उस घृणित भावना के भार के नीचे दबी-दबी कुढ़-कुढ़कर जीवन व्यतीत करती हैं। मैं उन जाग्रत, प्रगतिशील नारियों में हूँ जो पुरुषों से समानता का दावा करती हैं और जीवन-संग्राम में पुरुषों से ज़रा भी पीछे रहना नहीं चाहती।”

“मेरा तो खयाल है, मीरा, कि पुरुषों के संरक्षण के बिना स्त्रियों का काम नहीं चल सकता।”

“आपकी राय से मैं सहमत नहीं हूँ। मुझे पुरुषों के संरक्षण की ज़रूरत नहीं। अपनी रक्षा मैं स्वयं कर लूँगी।”

“अच्छी बात है, यही सही।”

वे उठकर कमरे से बाहर चले गये। पन्द्रह मिनट में जब वे वापस आये तो उनके हाथ में तीन चेक थे।

“यह लो, रामलाल, अपना पैतृक धन।” १०००) का चेक उसके हाथ में देकर उन्होंने कहा—“मीरा और राजमोहन ! तुम लोगों के कुछ रुपये तो शायद डाकखाने में जमा हैं ?”

“हम लोग अब आपसे कुछ नहीं चाहते, चाचाजी,” मीरा ने तुरन्त आश्वासन दिया—“हम लोगों के लिए आपने जो कुछ दिया है उसके लिए हम कृतज्ञ हैं और हमें इस बात का खेद है कि हमें विवश होकर यहाँ से बिदा होना पड़ रहा है। हम आपसे क्षमा चाहते हैं।”

“मुझे इस बात का खेद है, चाचाजी,” राजमोहन ने कहा—“कि मैं फैक्टरी में ठीक तौर पर काम नहीं कर सका। लेकिन आप खुद जानते हैं कि मैं व्यवसाय के योग्य नहीं हूँ।”

“व्यवसाय के योग्य तुम इसलिए नहीं हो कि तुममें वास्तव में योग्यताओं का अभाव है” बाबू साहब ने उत्तर दिया—“और योग्यताओं का अभाव तुममें इसलिए है कि तुम काहिल हो। तुम्हारा शरीर भी काहिल है, दिमाग भी काहिल है। तुम्हारी कृतज्ञता मैं स्वीकार करता हूँ और तुम्हारी भी, मीरा। यह लो अपना-अपना चेक। तुम दोनों को मैं पाँच-पाँच सौ रुपये देता हूँ। अब तुम लोग जब जाना चाहो जा सकते हो। सिर्फ एक बात याद रखना। मेरे यहाँ फिर कभी न आना !”

दूसरा दिन रविवार का था। फैक्टरी बन्द थी। महामाया के मन्दिर से वापस आने पर मीरा ने देखा कि रामलाल विचारों में डूबा हुआ कागज के एक टुकड़े पर कुछ लिख रहा है।

“क्या कर रहे हो, रामलाल ?”

चौककर रामलाल ने उसकी ओर देखा।

“कुछ नहीं, जरा हिसाब लगा रहा हूँ।”

“कैसा हिसाब ?”

“अपनी पूँजी का हिसाब । मेरी पूँजी सन्तोषजनक नहीं है, मीरा । मैं समझता था कि मामाजी मुझे भी कुछ भेंट करेंगे, लेकिन उन्होंने मुझे एक पैसा भी नहीं दिया ! बड़े दुःख की बात है ।”

“१०००) तो पा ही चुके हो ।”

“यह रकम उनकी भेंट नहीं है, मीरा । यह तो मेरा पैतृक धन है । हम तीनों में मैं ही एक ऐसा व्यक्ति था जिससे वास्तव में उन्हें कुछ लाभ था । लेकिन उन्होंने तुम दोनों को तो पाँच-पाँच सौ रुपये भेंट किये, मुझे कुछ नहीं दिया । उनकी यह चाल मेरी समझ में नहीं आ रही है ।”

“ये रुपये वे न देते तो ज्यादा अच्छा होता,” मीरा ने कहा—
“उनकी इस भेंट के बगैर भी हमारा काम चल सकता था । इससे हमारे ऊपर उनका एहसान और भी बढ़ गया है ।”

“यह क्या कहती हो, मीरा ? रुपये के बगैर किसी का काम नहीं चल सकता । धन का स्वागत हमेशा और हर दशा में करना चाहिए । ५००) अगर मुझे मिल जायँ तो मेरी पूँजी काफी सुधर जाय ।”

“अगर राजू भी तैयार हो, तो मैं आधी रकम तुम्हें देने को तैयार हूँ,” मीरा ने कहा ।

“तुम्हारा यह प्रस्ताव बहुत अच्छा है ।” लाभपूर्ण दृष्टि से उसकी ओर देखते हुए रामलाल ने कहा—“मैं इस पर विचार करूँगा ।”

मीरा ऊपर चली गई । राजमोहन अपने कमरे में आराम-कुरसी पर लेटा हुआ एक पुस्तक पढ़ रहा था ।

“क्या पढ़ रहे हो, राजू ?”

“एक उपन्यास ।”

“कैसा है ?”

“बहुत अच्छा। जिस दिन मैं ऐसा उपन्यास लिख लूँगा उस दिन अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति का लेखक हो जाऊँगा और मुझे पूरा विश्वास है कि एक दिन यह बात होकर रहेगी।”

“मुझे भी विश्वास है। अब तो कालीनगर चल ही रहे हो। वहाँ इस काम के लिए यथेष्ट समय और उपयुक्त वातावरण मिलेगा।”

“कल से मुझे और रामलाल को फ़ैक्टरी नहीं जाना होगा। चाचाजी ने यह इशारा भी किया है कि कल ही हम लोग चले जायँ तो ज्यादा अच्छा हो।”

“ठोक तो है। मैं तो आज ही रवाना हो जाना चाहता हूँ।”

राजमोहन ने सहमति-सूचक भाव से सिर हिलाया।

“मैं भी उत्सुक हूँ, मीरा। सिर्फ़ एक बात है। दफ़्तर में कागज़ वग़ैरह मैं क़ायदे के साथ सजाकर नहीं रख आया हूँ। वे तितर-बितर पड़े हैं। चाचाजी उन्हें उस हालत में पायेंगे तो बहुत बुरा मानेंगे।”

“जाकर ठोक कर आओ। चाभियों का एक गुच्छा तुम्हारे पास भी तो है।”

“ख़ब सुझाया तुमने!” प्रसन्न होकर राजमोहन ने कहा—

“अभी जाकर ठोक-ठाक कर आता हूँ।”

उठकर, हैट लगाकर, छड़ी लेकर, वह तुरन्त चला गया।

आध घण्टे के बाद उसने फ़ैक्टरी के अहते में प्रवेश किया। कोई व्यक्ति दिखाई नहीं दिया। दरबान भी उस समय उपस्थित नहीं था। सदर दरवाज़ा खोलकर वह अन्दर घुसा। सारी इमारत भौँ-भौँ कर रही थी। नित्य यहाँ आने में उसे ज़रा भी खुशी नहीं होती थी, लेकिन आज वह प्रसन्न था। आज उसके प्रति उसका दृष्टिकोण तटस्थ हो चुका था और उसके हृदय में उसके लिए ज़रा भी कटुता नहीं थी। सीटो बजाता हुआ वह

ऊपर अपने कमरे में पहुँचा। फिर छड़ी एक ओर रखकर, हैट और कोट उतारकर, वह अपनी कुर्सी पर बैठ गया। कैश-बक्स मेज पर था और तिजोरी खुली हुई थी। एक दीर्घ निःश्वास खींचकर उसने एक सिगरेट जलाई।

“क्लर्क बनने के लिए मैं पैदा नहीं हुआ था,” वह मुनमुनाया— “दफ्तर का काम मुझसे नहीं संभलता। कल कैश-बक्स यहीं पड़ा रह गया, तिजोरी खुली रह गई।”

कैश-बक्स भी खुला था। उसने उसका ढक्कन उठाया। विकलता की एक लहर उसके हृदय में दौड़ गई। नोटों की कई मोटी-मोटी गड़्डियाँ सबसे ऊपरवाले खाने में रक्खी हुई थीं। उन्हें उठाकर उसने गिना।

“मेरा ख्याल था कि पचास-पचास नोटों की आठ गड़्डियाँ थीं। सात ही रही होंगी। मेरा ख्याल गलत रहा होगा। आठ होती तो सात ही कैसे रह जाती?”

नोटों को रखकर उसने बक्स बन्द कर दिया। वह तिजोरी बन्द कर रहा था। एकाएक रुककर वह सुनने लगा। खिस-खिसाहट की सी आवाज सुनाई दी। ऐसा जान पड़ा जैसे कोई धीरे-धीरे सीढ़ियों पर उतर रहा हो। वह झपटकर कमरे से बाहर निकला। कोई दृष्टिगोचर नहीं हुआ।

“कौन है?” उसने आवाज लगाई।

कोई उत्तर नहीं मिला। वह आवाज बन्द हो चुकी थी। वह सोचने लगा कि क्या वह कायर है। उसका हृदय तेजी से धड़क रहा था। इमारत की विकट नीरवता उसे असह्य भार सी लग रही थी।

“कौन है?” उसने फिर आवाज लगाई।

फिर कोई उत्तर नहीं मिला। उसके मत्थे पर पसीने की बूँदें चभर आईं।

“यह कोरी मूर्खता है।” वह मुनमुनाया—“कोई नहीं है। यहाँ आज कौन आयेगा ? वह केवल भ्रम था।”

इसी समय सहसा सदर दरवाजे के धीरे से बन्द होने की आवाज आई। वह उस कमरे की ओर लपका जिसमें खिड़कियाँ थीं। उस कमरे का दरवाजा बन्द था। उसे खोलने में कुछ समय लग गया। खिड़कियाँ भी बन्द थीं। खिड़की खोलने में भी कुछ समय लगा। अन्त में जब उसने नीचे झाँका, तो कोई दिखाई नहीं दिया।

“भ्रम था—कोरा भ्रम था। कल्पना को करतूत थी। कोई नहीं था। कोई आता ही क्यों?”

तब हृदय में साहस भरकर वह अपने कमरे में वापस आया, तिजोरी बन्द का, कागज-पत्र तरतीब से रख दिये, कोट पहना, हैट लगाया, छड़ी उठाई और कमरे से निकलकर नीचे उतरा। फिर बाहर निकलकर उसने सदर दरवाजा बन्द किया। दरबान उस समय भी मौजूद नहीं था। इधर-उधर दृष्टि दौड़ाकर वह अहाते से बाहर निकला और घर की ओर रवाना हो गया। उस दिन से खाली इमारतों से उसे चिढ़ हो गई।

कुछ देर के बाद बाबू श्यामलाल वर्मा फ़ैक्टरी में राजमोहन की कुर्सी पर बैठे हुए थे। कैश-बक्स मेज पर खुला हुआ था। एक रजिस्टर उनके सामने खुला हुआ था। कई बार उन्होंने नोटों की गड़ियाँ गिनीं और रजिस्टर में हिसाब देखा। एक गड़्डी निस्सन्देह गायब थी। ५००) चले गये। कौन ले गया ? एक सन्देह उनके मन में उठा। उनके हृदय पर गहरा आघात हुआ। मूर्तिवत् बैठे हुए वे दीवार की ओर ताकते रहे। रुपये के जाने का उन्हें रंज नहीं था। उन्हें दुःख था इस बात पर कि एक ऐसे व्यक्ति ने चोरी की जिसे उन्होंने पाल-पोसकर बड़ा किया और जिसके नैतिक आचरण का उत्तरदायित्व किसी हद तक उनके

ऊपर भी था। उनकी कट्टर धार्मिकता, उनकी विशुद्ध नैतिकता असफल सिद्ध हुई। उनके संसर्ग और संरक्षण में रहते हुए भी वह इतना गिर गया ! बौद्धों को मेज पर टेककर उन्होंने उनमें अपना मुख झिपा लिया।

३

तीसरे दिन सन्ध्या के समय मीरा, राजमोहन और रामलाल कालीनगर पहुँच गये। रमेशचन्द्र-स्ट्रीट में एक बड़े मकान का एक छोटा-सा भाग लेकर वे टिक गये। रामलाल निश्चिन्त था। मीरा और राजमोहन में निश्चिन्तता का अभाव था।

दूसरे दिन प्रातःकाल रामलाल बाजार से सामान ले आया। तीनों ने मिलकर खाना तैयार किया। भोजन के उपरान्त रामलाल ने काम की खोज में जाने की इच्छा प्रकट की। मीरा और राजमोहन इसके विरुद्ध थे। मीरा का अनुनय-विनय सफल रहा।

“कालीनगर में आज हमारा पहला दिन है।” मीरा ने कहा—
“आज हमें सैर करनी चाहिए।”

“मैं दो-चार कारखानों में जाना चाहता था।” रामलाल ने कहा—“सबसे पहले काम तलाश करना जरूरी है।”

“हटाओ भो;” मीरा ने हँसकर कहा—“कल जो चाहना करना। लेकिन आज तो बस हम अपनी इस मुक्ति पर ईश्वर का धन्यवाद देंगे और आनन्द मनायेंगे और आज हम उन निधियों का निरीक्षण करेंगे जो हमें प्राप्त करनी हैं।”

“उम्हारा मतलब यह है कि आज का दिन बर्बाद कर दिया जाय ?” रामलाल ने आश्चर्य से पूछा।

“अरे नहीं, भाई,” राजमोहन ने कहा—“हमारा यह मतलब नहीं है। आज इस महान् नगर में निश्चिन्तता से घूम-

कर हम उन सुविधाओं और सम्भावनाओं का पता लगायेंगे जिनसे हमें लाभ पहुँच सकता है। विश्व के महान् विधान में हम अपने स्थानों का चुनाव पूरी सावधानी से करेंगे।”

“तुम ठीक कहते हो अगर तुम्हारा मतलब यह है कि जो पहला मौका सामने आये उसी पर हमें क्रुद्ध नहीं पड़ना चाहिए। यह राय बहुत मुनासिब है। मैं खुद दस-पाँच कारखानों में हो आने के बाद ही यह तय करूँगा कि कहाँ काम करूँ। इस मामले में मैं भी जल्दबाजी करने का कायल नहीं हूँ।”

राजमोहन मुस्कराकर सिगरेट जलाने लगा।

“ऐसा ठोस मतलब मत निकालो, रामलाल।” उसके कन्धे पर हाथ रखकर मोरा ने कहा—“हमारा मतलब यों है। काली-नगर रूपकों का नगर है। आओ, आज हम एक-दूसरे को वह सब दिखलायें जो हम अपने जीवन में चाहते हैं। आज हम अपने स्वप्नों के प्रतिरूप देखें और दिखायें और कल कार्य-क्षेत्र में उतर पड़ें।”

“यह साहित्यिक भाषा में समझ में नहीं आती।” रामलाल ने कहा—“साफ-साफ कहा तो मुझे किसी निश्चय पर पहुँचने में आसानी हो। क्या हमें दिन भर ट्रामों और बसों में बैठकर इधर-उधर सैर-सपाटा करना होगा? यह तो किजूलखर्ची होगी। कई रुपये मुफ्त में बिगड़ जायेंगे।”

“सुनो, रामलाल,” मोरा ने कहा—“इन्तजाम का सारा काम अब तक तुम्हारे ही हाथों में रहा है।” तुमने डाकखाने से हमारे रुपये निकलवाये, रेल के टिकट खरीदे, यात्रियों से लड़े-भिड़े, कुलियों से जवान लड़ाई, इस मकान की स्वामिनी से भाँय-भाँय करके किराया घटवाया और आज बाज़ार से सौदा लाये। इसलिए सबसे पहले तुम्हारा ही नम्बर है। तुम हमें उस जगह ले चलो जहाँ अपना सिकका जमाना चाहते हो। तुम्हारे

बाद राजमोहन हमें अपने क्षेत्र की सैर करायेंगे। फिर मेरी बारी आयेगी।”

“ठीक है; तैयार हो जाओ। मैं तुम लोगों को तुरन्त अपने क्षेत्र की सैर कराऊंगा। मेरे काम में अधिक समय नहीं लगेगा।”

एक मोटर-बस पर सवार कराकर वह उन्हें नगर के उस भाग में ले गया जो व्यवसाय का केन्द्र था। बड़ी-बड़ी शानदार इमारतें चारों ओर खड़ी थीं और प्रत्येक द्वार पर पीतल के साइनबोर्ड लगे थे। हजारों सुभूषित मनुष्य इधर-उधर आ जा रहे थे। सड़कों पर सवारियों का ताँता लगा था। इधर-उधर घूम-घूमकर, प्रत्येक कार्यालय के सामने रुककर वह उसकी विशेषताएँ समझाने और उसके मालिकों के नाम गिनाने लगा।

“यही है वह स्थान जहाँ मैं अपना सिक्रा जमाना चाहता हूँ।” इधर-उधर हाथ घुमाकर उसने कहा—“इन कार्यालयों के स्वामी वे लोग हैं जिनके हाथ में देश के आर्थिक जीवन की बागडोर है। उनके एक इशारे से हमारे आर्थिक जीवन का तख्ता पलट सकता है। देश का कोई निवासी, कोई भाग, ऐसा नहीं है जो उनकी शक्ति के प्रभाव-क्षेत्र से बाहर हो। यहीं किसी कार्यालय में मैं काम करना शुरू करूँगा और शीघ्रता से उन्नति करता हुआ उसके स्वामियों के बीच पहुँच जाऊँगा। उस समय कार्यालय में मेरा एक अलग कमरा होगा और मेरी बहुमूल्य मेज़ पर अनेक टेलीफोन लगे होंगे। मेरी आज्ञा के बिना मेरे कमरे में कोई न आ सकेगा। मेरा प्राइवेट सेक्रेटरी दबे-पाँव कमरे में आकर मुझे इत्तला देगा कि अमुक सेठ या अमुक बैंक का प्रतिनिधि मुझसे भेंट करना चाहता है। बड़े-बड़े सेठ मुझे दावतें देंगे और मुझे प्रसन्न करने में गौरव अनुभव करेंगे। ज़रूरत पड़ने पर सरकार भी मुझसे सलाहें लेगी। अच्छा, अब उधर चलो।”

वे स्टाक एक्सचेंज के सामने पहुँचे । उस इमारत के सामने सम्पन्न लोगों की एक अच्छी-खासी भीड़ लगी हुई थी । सैकड़ों व्यक्ति उसके भीतर-बाहर आ-जा रहे थे । केवल एक चिन्ता उन लोगों को आन्दोलित किये हुए थी और वह थी धनोपाजन की चिन्ता ।

“यहाँ नित्य करोड़ों का वारा-न्यारा होता है ।” गर्वयुक्त स्वर में रामलाल ने कहा—“ये लोग, जो यहाँ जमा हैं, उन महान् व्यवसायियों के पिटू हैं जिनके कार्यालय तुम लोग अभी देख चुके हो । एक दिन इनमें से बहुतरे मेरे इशारों पर नान्हेगे ।”

वे मुड़कर दूसरी ओर चले । रामलाल कई क्षणों तक चुपचाप चलता रहा । वह असाधारण रूप से आन्दोलित हो उठा था । ऐसी दशा में उसे उन लोगों ने बहुत कम देखा था ।

“अच्छा, मेरा काम तो हो चुका ।” अन्त में उसने कहा—
“अब तुम्हारी बारी है, राजमोहन ।”

एक बस पर सवार होकर वे क्लाइव-स्क्वायर पहुँचे । वहाँ भी वैसी ही भीड़-भाड़ थी । बस से उतरकर वे धीरे-धीरे आगे बढ़े ।

“यही है वह स्थान जहाँ मेरे भाग्य की परीक्षा होगी ।” राजमोहन ने मुस्कराकर कहा—“यहाँ समाचार-पत्रों और प्रकाशकों के बड़े-बड़े कार्यालय हैं । बड़ी-बड़ी मशीनें इन इमारतों में चल रही हैं । सुविज्ञ विचारकों के शब्द यहाँ से टाइप के वस्त्र पहनकर निकलते हैं और सारे देश में फैल जाते हैं । उन विचारकों की शक्ति की कल्पना करो ! आज जो शब्द उनकी कलमों से निकलते हैं वे कल के विचारों को प्रभावित करते हैं । विश्व के विधान में पत्रकारों और लेखकों का जो विशिष्ट स्थान है उसका महत्त्व बहुत है । वे संसार में स्वर्ग और नरक का सृजन कर सकते हैं । व्यवसायियों की शक्ति निस्सन्देह बड़ी है, रामलाल, लेकिन जरा इन लोगों की बात भी तो सोचो । ये विश्व की विचार-धाराओं का निर्माण करते हैं ।”

“पत्रों की शक्ति निस्सन्देह बहुत है।” रामलाल ने अन्यमनस्क भाव से स्वीकार किया। “जो कुछ तुम कहते हो वह मोटे तौर पर ठीक है, लेकिन आर्थिक पत्रों पर तो व्यवसायियों का प्रभाव रहता ही है। अन्य पत्रों के आर्थिक-स्तम्भों पर भी अकसर उनका जोर रहता है। थैलियों के प्रभाव से उनके अग्रलेख विज्ञापन-मात्र बन जा सकते हैं।”

“आर्थिक पत्रों की बात जाने दो।” राजमोहन ने आपत्ति की। “मेरी योजना में उनके लिए स्थान नहीं है। पत्र-जगत में उनका कोई विशिष्ट स्थान नहीं है। अच्छा, यह तो हुआ एक पहलू। चलो, आगे देखो।”

वह उन्हें एक विशाल सार्वजनिक भवन की ओर ले गया। पन्द्रह मिनट में वे उसकी चौथी मंजिल पर पहुँच गये। मकानों, सड़कों और गलियों का एक विराट् जाल चारों ओर फैला हुआ था। जीवन का व्यापार जोरों से चल रहा था।

“देखो, एक निश्चित योजना के अनुसार संसार चला जा रहा है।” गम्भीर भाव से राजमोहन ने कहा—“किसने उस योजना की सृष्टि की, यह निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता; कौन उसका अन्त करेगा, यह भी विवादप्रस्त है। ट्राम, बसें, लारियाँ, घोड़ा-गाड़ियाँ, रिकशे, पैदल चलनेवाले—सब किसी मंजिल की ओर बढ़ रहे हैं और वह मंजिल जीवन की विशाल योजना ही का एक अङ्ग है।”

रामलाल के चेहरे पर अवहेलना तथा व्यंग्य-मिश्रित घृणा के भाव व्यक्त हो गये।

“दूसरों के लिए परेशान होने में क्या लाभ है?” उसने रुखे स्वर में कहा—“मुझे इस बात की जरा भी परवा नहीं कि ये लोग कहाँ जा रहे हैं या क्या सोच रहे हैं। मुझे तो बस अपनी और अपने काम की चिन्ता है।”

“उनकी बात समझ लेने से तुम अपना काम भी ज्यादा अच्छे ढङ्ग से कर सकेगें।” राजमोहन ने उत्तर दिया—“अस्पष्ट होते हुए भी यह बात बिल्कुल सत्य है कि वे सब विभिन्न मार्गों से एक ही अन्त की ओर बढ़ रहे हैं। ज्योंही मनुष्य यह बात समझ लेता है, उसके हृदय में सहानुभूति का जन्म होता है और उस सहानुभूति के द्वारा उसे उस महान् शक्ति की अनुभूति होती है जिसका सहारा लेकर वह नैतिकता के उच्चतम शिखर पर पहुँच सकता है। मैं ऐसी कहानियाँ लिखूँगा, रामलाल, जिनसे मेरे पाठकों को उस व्यापक शक्ति की अनुभूति हो सकेगी। वे रचनाएँ किसी वर्ग या जाति-विशेष के लिए नहीं, समस्त मानव-समुदाय के लिए होंगी। प्रायः जो समझते हैं वे लिखते नहीं, जो लिखते हैं वे समझते नहीं। समझने की इच्छा रखनेवाला अवश्य समझ सकता है। जरूरत है केवल इच्छा की।”

“मुझे इस समय केवल एक इच्छा है।” अपनी घड़ी पर दृष्टि डालकर रामलाल ने कहा—“और वह है जलपान करने की इच्छा।”

उस इमारत से निकलकर वे समीप के एक रेस्तराँ में पहुँचे। रामलाल ने अपनी पसन्द की चीजें ऑर्डर कीं और बाद में बिल की अच्छी तरह जाँच कर लेने के बाद दाम चुकाया। वेटर जब निराश होकर चला गया, तो उसने राजमोहन और मीरा से उनके हिस्से के पैसे वसूल किये। फिर वे बाहर निकले।

“अब मेरी बागी है।” प्रसन्नतासूचक स्वर में मीरा ने कहा—“मैं तुम्हें उन पार्थिव निधियों के दर्शन कराऊँगी जिनमें मेरा मन बसता है। भौतिकता का जो गहरा रङ्ग मेरे ऊपर चढ़ा हुआ है उसे देखकर शायद तुम दोनों को रक्ष होगा।”

वह उन्हें वेलेसली स्ट्रीट ले गई जहाँ दोनों ओर बड़ी-बड़ी, शानदार दूकानें सुशोभित थीं। फैशन और शृङ्गार की सामग्रियाँ

उनमें भरी पड़ी थीं। हर दूकान के सामने रुक-रुककर वह उनमें सजी हुई चीजों की विशेषताएँ समझाने लगी। वह व्याख्या करने लगी साड़ियों, जम्परो, रुमालों और मोजों की, चीनी और आसामी रेशमों की, क्रीमों, पाउडरों और लेवेण्डरों की, जूतों और चप्पलों की, सोने के सुन्दर आभूषणों की, हीरों, मोतियों, लालों और पत्थरों की। प्रसन्नता और उत्साह से उसका चेहरा खिल गया था और उसके सुकोमल शरीर से एक विचित्र आभा प्रस्फुटित हो रही थी। फैशन के रंग में रँगी हुई जो स्त्रियाँ उसके सामने आती या उसके पास से निकलतीं उन्हें वह स्पष्ट ईर्ष्या से देखती, और वह ईर्ष्या भी उसे शोभा देती। एक बार एक दूकान के सामने पहुँचकर वह हँसने लगी। दूकान की खिड़की के बड़े शीशे पर उन तीनों की छायाएँ पड़ रही थीं। हँसते हुए उसने उनकी ओर संकेत किया।

“हम लोगों के बारे में यहाँ के लोग क्या सोचते होंगे !”

उन तीनों में निस्सन्देह एक विशेष प्रकार की विचित्रता थी जो राहगारों का ध्यान बलात् उनकी ओर आकृष्ट कर देती थी। लोग उनकी ओर बार-बार देखते थे, मुड़-मुड़कर देखते थे। उनके वस्त्र उन लोगों के से बहुमूल्य नहीं थे और उनकी बनावट में भी आधुनिकता का अभाव था; किन्तु उनके व्यक्तित्व उनके उन साधारण वस्त्रों से बिल्कुल अलग प्रतीत होते थे। रामलाल के चेहरे से आत्म-विश्वास और दृढ़ता टपक रही थी। राजमोहन कवि जैसा लग रहा था और उसकी आँखों में व्यग्रता झलक रही थी और मीरा? वह तो जैसे बस जादू चलाती फिर रही थी। उसके साधारण वस्त्र उसके असाधारण सौंदर्य को छिपा सकने में असमर्थ थे। ऐश्वर्य के उस वातावरण के प्रति उसकी सराहना, उसका सरल आनन्द, उसकी स्वाभाविक हँसी, उसकी पूर्ण निश्चिन्तता—सब मिलकर एक ऐसे अद्भुत आकर्षण

की सृष्टि कर रहे थे जिसकी व्याख्या कर सकना असम्भव था। देखनेवाले हैरान थे। उनकी नारीत्व-सम्बन्धी किसी कल्पना से वह मेल नहीं खाती थी।

“यह तो हुआ मेरे स्वप्नों का भौतिक रूप।” वेलेसली स्ट्रीट से निकलकर उसने कहा—“अब ज़रा चलकर दूसरा पहलू देखो।”

वह उन्हें कला-भवन में ले गई। यहाँ भी उसके निर्णय की शक्ति वैसे ही निर्दोष रूप में व्यक्त हुई जैसे पार्थिव वस्तुओं के चुनाव के समय प्रकट हुई थी। अनेक चित्र और मूर्तियाँ उसने पसन्द कीं और उनकी प्रशंसा की। अनेक महान् चित्रों की ओर उसका ध्यान नहीं गया, किन्तु जिन चित्रों ने उसे आकृष्ट किया उनके सम्बन्ध में उसकी सम्मतियाँ सवेथा तर्कपूर्ण थीं। अपनी रुचियों के सम्बन्ध में उसे सन्देह नहीं था और वे विवेक और तर्क पर अवलम्बित थीं। राजमोहन उसकी रुचियों और विचारों से पूर्णतः सहमत था। वे वहाँ काफी देर तक रुकते, लेकिन रामलाल को ज़रा भी आनन्द नहीं आ रहा था। विवश होकर अनिच्छापूर्वक वे उस इमारत से बाहर निकले। मीरा ने रामलाल को बाँह में अपनी बाँह डाल दी।

“मुझे इस बात का बड़ा अफ़सोस है, रामलाल,” मीरा ने कहा—“कि यहाँ आकर तुम ऊब गये। मैं जानती हूँ कि हमारी इस कार्रवाई में तुम्हें ज़रा भी मज़ा नहीं आ रहा है। लेकिन मेरे विचार में आज का दिन हम लोगों के लिए बड़ा महत्त्वपूर्ण है। हम तीनों एक ही घर में रहकर और एक साथ पलकर इतने बड़े हुए हैं। अब हम अपने जीवन का एक नया अध्याय आरम्भ करने जा रहे हैं। हम लोगों के जीवन-मार्ग एक-दूसरे से भिन्न हैं। अपने-अपने मार्ग पर हम अलग-अलग चलेंगे। इसलिए यह अत्यन्त आवश्यक है कि हम एक दूसरे को अच्छी तरह समझ लें, ताकि हममें कुछ लगाव बाक़ी रहे और हम एक दूसरे से बहुत

दूर न हट जायँ । मैं समझती हूँ कि मेरा व्यक्तित्व इस समय तुम्हें छिछला नज़र आ रहा होगा; क्योंकि सुन्दर वस्तुओं को अपनाने की प्रबल इच्छा इस समय मुझे आन्दोलित कर रही है । लेकिन मैं तुम्हें यह दिखलाने की कोशिश कर रही हूँ कि जो कुछ मैं चाहती हूँ वह केवल शरीर ही के लिए नहीं मस्तिष्क और आत्मा के लिए भी है और..... । चलो, अब नदी-तट की ओर चलें । वहाँ मैं पुलों, जहाज़ों और नौकाओं के दृश्य देखना चाहती हूँ ”

नदी-तट पर वे बड़ी देर तक इधर-उधर घूमते रहे । एक स्टाल पर उन लोगों ने चाय पी । दिन ढल गया । सन्ध्या रात्रि के परदे में विलीन हो जाने का आतुर हो उठी । एक ट्राम पर सवार होकर वे एडवर्ड-स्कायर पहुँचे ।

सिनेमा-गृहों से सङ्गीत की सुमधुर ध्वनियाँ निकल रही थीं । बड़े-बड़े होटल और रेस्तराँ इधर-उधर जगमगा रहे थे । उनके सामने सुन्दर, बहुमूल्य कारों की कतारें लगी हुई थीं । सुसंस्कृत, सुभूषित स्त्री-पुरुष इधर-उधर आ-जा रहे थे । रस-रङ्ग का बाज़ार गर्म था । मीरा विह्वल हो उठी ।

“राजमोहन ! रामलाल ! हमें कल ही अपने-अपने काम में लग जाना चाहिए और तेज़ी से आगे बढ़ना चाहिए । जितनी जल्दी हो सके, हमें सफलता प्राप्त करना चाहिए । रामलाल ! तुम दौलत पैदा करो । राजमोहन ! तुम अपनी रचनाएँ प्रकाशित कराओ । मैं तुम लोगों के साथ यहाँ आऊँगी, भोजन करूँगी, सिनेमा देखूँगी, नृत्य करूँगी । मैं चाहती हूँ कि तुम्हारे वस्त्र इन लोगों के से हों और मेरे उस युवती के से हों जो अभी इधर से निकली थी । हम इन्हीं लोगों में घुल-मिल जायँगे और इन्हीं लोगों की तरह जीवन का आनन्द लेंगे । सभ्य, सुसंस्कृत, सम्पन्न लोगों में हमारी गणना भी होने लगेगी और लोग हमारी मैत्री प्राप्त करने में गौरव अनुभव करेंगे ।”

राजमोहन हँसने लगा ।

“जिस दिन मेरा पहला उपन्यास प्रकाशित होगा,” उसने कहा—“उस दिन मैं तुम लोगों को यहाँ एक शानदार दावत दूँगा ।”

“छः महीने के अन्दर” रामलाल ने सुदृढ़ स्वर में कहा—
“मैं यहाँ रोज़ भोजन करूँगा और जब चाहूँगा दावते दूँगा ।”

४

दस मास व्यतीत हो गये ।

रात के नौ बज चुके थे । बैठक में मेज़ के सामने बैठी हुई मीरा टाइप कर रही थी । इतने लम्बे समय तक नित्य दिन भर टाइप करती रहने के कारण वह उस काम में दक्ष हो गई थी । एकाएक उँगलियाँ रोककर वह सुनने लगी । रामलाल अन्दर आया । निराशा के भाव को दृढ़तापूर्वक दाबकर वह मुस्कराने लगी ।

“अभी तक काम कर रही हो !” मेज़ पर रक्खे हुए कागज़ों के ढेर पर दृष्टि डालकर उसने कहा ।

“आज काम कुछ ज्यादा था ।” मीरा ने उत्तर दिया ।

“खाना बन गया ?”

“नहीं, रामू, इस वक्त तो मैं खाना नहीं बना सकी । अगर हम लोग चलकर किसी सस्ते होटल में भोजन कर लें, तो कोई बुराई तो न होगी ? बात यह हुई कि……”

“क्या बात हुई ?”

“बाज़ार से सौदा नहीं आ सका ।”

“सौदा खरीदने के लिए पैसे थे ?”

“काफ़ी तो नहीं थे,” फ़र्श की ओर ताकते हुए मीरा ने कहा—“लेकिन थोड़ा-बहुत सामान तो आ ही जाता ।”

रामलाल ने अपना ओवरकोट उतार कर एक खूँटो पर टाँग दिया। ओवरकोट का कपड़ा बहुत बढ़िया था और वह एक प्रसिद्ध कम्पनी में सिला था। एक कुर्सी खींचकर रामलाल मेज़ के समीप बैठ गया।

“हिसाबवाली कापो कहाँ है ?”

मीरा के उतरे हुए चेहरे पर लालिमा दौड़ गई।

“इधर का हिसाब मैंने जोड़ा नहीं है।” विकलतापूर्ण स्वर में उसने कहा।

“लाओ तो, मैं जोड़ लूँगा। मैं यह देखना चाहता हूँ कि हमारी स्थिति क्या है।”

विवश होकर मीरा ने एक मेज़ का एक ड्रायर खोला और उसमें से वह कापी निकालकर उसे दे दी। जेब से एक पेन्सिल निकालकर, रामलाल कापी के पन्नों पर तेज़ी से दृष्टि दौड़ाने लगा। कापी मेज़ पर रखकर वह कई क्षणों तक निःस्तब्ध बैठा रहा।

“राजमोहन की पूँजी खत्म हो गई ?”

“हाँ, उनके पास अब कुछ नहीं है।”

“और तुम्हारी पूँजी ?”

“पिछले महीने का हिसाब साफ़ कर देने के बाद मेरे पास भी कुछ नहीं रह जायगा।”

रामलाल फिर कापी उठाकर देखने लगा।

“डेढ़ महीने से राजमोहन ने घर के खर्च की मद में कुछ नहीं दिया ?”

“नहीं।”

“इसका मतलब यह है कि अब हम दोनों उनका खर्च बर्दाश्त कर रहे हैं।”

“जाने दो, रामू !” अनुनयपूर्ण स्वर में मीरा ने कहा—
“इसमें बुराई की बात क्या है ? हमें एक-दूसरे की सहायता करनी

चाहिए। शीघ्र ही उनकी रचनाएँ प्रकाशित होने लगेंगी। तब उन्हें हमारी सहायता की जरूरत नहीं रहेगी। हमारे रुपये भी वे अदा कर देंगे।”

“मुझे इसमें सन्देह है।” रामलाल ने कहा—“पिछले महीने का हिसाब साफ नहीं हुआ। यह महीना भी खत्म होने को है। पिछले महीने का हिसाब तो तुम अदा कर दोगी, लेकिन इस महीने का किस तरह चुकता किया जायगा। राजमोहन तो खैर कुछ न दे सकेंगे। अपनी कहो।”

“मेरे पास केवल दो रुपये बचेंगे।” करुण स्वर में मीरा ने उत्तर दिया—“मुझे टाइपराइटर का किराया देना है और कागज वगैरह का दाम चुकाना है। कल रात को मैं तीन बजे तक काम करती रही। ठेके का काम है। पैसे काकी नहीं मिलते। जान पड़ता है, इस तरह काम करके मैं अपना खर्च नहीं चला सकूँगी।”

गाम्भीर्य धारण किये हुए रामलाल कई क्षणों तक चुपचाप बैठा रहा।

“राजमोहन कहाँ हैं?”

“चार बजे अपनी दो कहानियाँ लेकर एक नई पत्रिका के सम्पादक से मिलने गये थे। तब से अभी तक वापस नहीं आये।”

रामलाल खामोश बैठा रहा। उसकी वह निःस्तब्धता मीरा को सहसा भयावह प्रतीत होने लगी। चिन्तितदृष्टि उसने उसके चेहरे की ओर देखा, और उसके विचार जानने की कोशिश की। लेकिन वह कुछ समझ नहीं सकी।

“रामू!” विकल स्वर में उसने कहा—“मैं और राजू अगर कुछ समय तक घर के खर्च की मद में कुछ न दे सकेंगे, तो क्या तुम्हें बहुत बुरा लगेगा! राजू की रचनाएँ शीघ्र ही अवश्य प्रकाशित होने लगेंगी। वे सचमुच सुन्दर हैं। पिछले सप्ताह उन्होंने जो कहानी लिखी है वह तो बहुत ही सुन्दर है। और मैं

कोई दूसरा काम कर लूँगी—कोई ऐसा काम जिसमें टाइप के काम से ज्यादा मज़दूरी मिलेगी।”

रामलाल धीरे-धीरे उठ खड़ा हुआ।

“आज कुछ खाया था, मीरा?” उसने पूछा।

“जलपान के समय रोटी और मक्खन खाया था और चाय पी थी।” मीरा ने उत्तर दिया—“लेकिन मैं भूखी नहीं हूँ—सचमुच भूखी नहीं हूँ। थोड़ा सा खाने से मेरा काम चल जाता है। ज्यादा की ज़रूरत मुझे नहीं होता।”

“जलपान के समय राजमोहन भी मौजूद थे?”

“हाँ, थे। मिसज़ बोस ने थोड़ा सा मछली भेजी थी। कई राज की बासी मालूम होती थी। राजू को तो बुरी नहीं लगी, लेकिन मैं तो उसे छू नहीं सकी।”

“तैयार हो जाओ, मीरा,” रामलाल ने आदेश दिया—“चलो, हम लोग चलकर कहीं भोजन करें।”

“और राजू?” हिचक-भरे स्वर में उसने पूछा।

“एक पत्र लिखकर रख दो।” अन्यमनस्क भाव से उसने उत्तर दिया।

“लेकिन राजू के पास पैसा नहीं है। पिछला हिसाब अभी तक साफ नहीं हुआ, इसलिए मिसज़ बोस भी कोई चीज़ उधार न देंगी।”

दो क्षण तक सोचकर रामलाल ने अनिच्छापूर्वक जेब से एक रुपया निकाल कर उसके हाथ में दे दिया।

“यह रुपया भी खत के साथ रख दो,” उसने कहा—“और फौरन तैयार हो जाओ। नौ बज चुके हैं। काफी देर हो चुकी है। मुझे भूख लगी है।”

“नाराज़ न होओ, रामू।” मीरा ने कहा—“मैं अभी तैयार हुई जाती हूँ। मुझे देर नहीं लगेगी।”

पत्र लिखकर वह अपने कमरे में चली गई। जेबों में हाथ डालकर रामलाल कई क्षणों तक विचारों में डूबा हुआ टहलता रहा। फिर उसने हिसाबवाली कापी एक बार फिर उलटी-पलटी। इसके बाद वह उस पत्र पर दृष्टि दौड़ाने लगा जो मीरा ने राज-मोहन के नाम लिखा था। पत्र यों था—

“प्यारे राजू,

मैं रामलाल के साथ भोजन करने के लिए बाहर जा रही हूँ। वे बहुत भूखे हैं और तुम्हारी प्रतीक्षा कर सकने में असमर्थ हैं। बुरा मत मानना। तुम्हारे लिए १) रखे जा रही हूँ। जाकर कहीं भोजन कर लेना। मैं लौटकर कॉफी तैयार करूँगी। जल्द ही लौटने की कोशिश करूँगी।

सप्रेम—

तुम्हारी,
मीरा।”

उसके मत्थे पर बल पड़ गये। उसने वह पत्र मेज पर फेंक दिया। दो क्षण के बाद मीरा कुछ गुनगुनाती हुई अपने कमरे से बाहर निकली। वह एक गर्म जम्पर पहने थी और वही रेशमी साड़ी, जो वज्जिराबाद से यहाँ आते समय धारण किये हुए थी। आलोचनात्मक दृष्टि से वह उसकी ओर देखने लगा।

“इस तरह कैसे चलेगी?” उसने कहा—“हवा तेज है। काफ़ी सर्दी पड़ रही है। तुम्हारा कोट कहाँ है?”

“मुझे सर्दी नहीं लग रही है।”

रामलाल ने आवरकोट पहना, हैट लगाई, छड़ी ली। कई क्षणों तक वह कुछ सोचता खड़ा रहा।

“तुम्हारा कोट क्या हुआ, मीरा?” उसने गम्भीर स्वर में पूछा।

“अरे चलो भी, रामू। मुझे सर्दी नहीं लग रही है।”

“टालो मत, मीरा । बतलाओ, तुम्हारा कोट क्या हुआ ?”
 “जिद करते हो, तो बतलाये देती हूँ । उसे मैंने गिरवी रख दिया ।”

“और शाल ?”

“वह भी गिरवी हो गया ।”

“ऐसा तुमने क्यों किया ?”

“पैसे नहीं थे और जरूरत बहुत सरत थी ।”

“अगर रखना ही था तो राजू का ओवरकोट गिरवी रक्खा जा सकता था ।”

“उन्होंने जिद तो की थी, लेकिन मैं राज़ी नहीं हुई । उनका एक फेफड़ा कमजोर है और उन्हें अकसर जोरों की खाँसी आने लगती है ।”

“रसीद लाओ ।” मत्था सिकोड़कर रामलाल ने आदेश दिया ।

“नाराज़ हो गये, रामू ?”

“नहीं, मीरा, मैं नाराज़ नहीं हूँ । रसीद लाओ ।”

तब वह रसीद ले आई, और वे नीचे उतरे । रास्ते में मीरा कई बार सड़ों से काँप उठी । वे उस गली में चल रहे थे जिसमें पुराने कपड़ों की वह दूकान थी । पन्द्रह मिनट में उन्होंने उस दूकान में प्रवेश किया । रामलाल ने पाँच रुपये का एक नोट और रसीद मेज़ पर रख दी । कोट मिल गया । कोट पहनकर मीरा ने कृतज्ञतापूर्ण दृष्टि से रामलाल को ओर देखा ।

“धन्यवाद, रामू !” मुस्कराकर कोमल स्वर में उसने कहा—
 “गली में मुझे कुछ सड़ों लग रही थी ।”

अगले चन्द घण्टे मीरा को बड़े सुन्दर लगे । आज पहली बार वह टैक्सी पर सवार हुई । टैक्सी में वह रामलाल से सटकर बैठी हुई थी, और उसकी बाँह उसकी बाँह में थी । जगमगाती हुई सड़कों पर टैक्सी तेज़ी से चली जा रही थी । मीरा का हृदय

आनन्द से उछल रहा था। एडवर्ड स्कायर में पहुँचकर टैक्सी एक शानदार होटल के सामने रुकी। मीरा चौंक पड़ी।

“यहाँ भोजन करोगे?”

“हाँ।”

“नहीं रामू, कहीं और चलो। मेरे कपड़े ठीक नहीं हैं। लोग मुझे देखकर हँसेंगे।”

“इसकी चिन्ता मत करो, मीरा। मैं सब ठीक कर लूँगा। हम लोग और लोगों से दूर बैठेंगे।”

वे होटल में घुसे। मैनेजर ने सिर झुकाकर उनका स्वागत किया। एक वेटर ने अदब से रामलाल का ओवरकोट, हैट और छड़ी ले ली। मैनेजर बड़े आदर से उन्हें विशाल रेस्तराँ में लिवा ले गया और उन्हें एक ऐसे कोने में स्थान दिया जहाँ और कोई नहीं था। मीरा के आनन्द का ठिकाना नहीं था। आज इस तरह उसे उस ऐश का अनुभव हो रहा था, जिसकी कल्पना वह एक मुद्दत से करती आ रही थी।

एक से एक बढ़िया चीजें मेज पर आईं। मीरा ने मजा ले-लेकर भोजन किया। जीवन में पहली बार उसने शैमपियन पी। उसे ऐसा लगा जैसे उस स्थान का ऐश्वर्य-पूरित वातावरण उसका स्वागत कर रहा हो, उसकी बलाएँ ले रहा हो। आश्चर्य-भरी दृष्टि से वह अपने उस साथी की ओर देखने लगी।

“यह कैसे सम्भव हुआ, रामू?” आश्चर्य-सूचक स्वर में उसने पूछा—“क्या तुम इतना खर्च बर्दाश्त करने के लायक हो गये?”

“अपने जीवन में मैंने कभी कोई ऐसा काम नहीं किया, मीरा, जो मेरे वश के बाहर रहा हो। आज मैं यहाँ अपनी कम्पनी के एक मालिक के साथ लंच करने आया था। जब मैं इस होटल के अन्दर आया तब मैं २०० मासिक वेतन पानेवाला एक

साधारण कर्मचारी ही था, लेकिन जब मैं बाहर निकला तो मेरा वेतन १०००) मासिक हो चुका था और मुझे इस बात का भी आश्वासन मिल गया था कि मैं शीघ्र ही कम्पनी का एक हिस्सेदार बना दिया जाऊँगा।”

मीरा अवाक रह गई। वह समझ ही न सकी कि क्या कहे।

“आज मैं तुम्हें यहाँ तुमसे खुलकर बातें करने के लिए लिवा लाया हूँ, मीरा।” गम्भीर स्वर में रामलाल ने कहा—“राजमोहन की हालत पर मुझे अफसोस है, लेकिन मेरी राय में कहानियों लिखकर धन कमाने का उसका विचार बिलकुल फ़िज़ूल है। यहाँ वह अपना काम नहीं चला सकता, तुम भी नहीं चला सकती। राजू कुछ कमाता नहीं, और तुम जो कुछ कमाती हो वह तुम्हारे खर्च के लिए काफी नहीं होता। तुम दोनों की पूँजियाँ भी समाप्त हो गईं। इस तरह काम कैसे चलेगा? घर के खर्च के लिए मैं अभी तक बराबर रुपये देता रहा हूँ। आगे भी अगर मैं तुम्हारे साथ शरीक रहूँगा तो तुम दोनों का बोझ मेरे ऊपर आ पड़ेगा।”

“तो क्या तुम हमारा साथ छोड़ दोगे?” मीरा ने घबराकर पूछा।

“बेशक छोड़ दूँगा। इस नगर में मुझे अपनी प्रतिष्ठा कायम करनी है। शीघ्र ही यहाँ के प्रतिष्ठित व्यापारियों में मेरी गणना होने लगेगी, और अन्य क्षेत्रों में भी मैं अपनी साख बढ़ाऊँगा। जतीन्द्र स्ट्रीट से मुझे कोई लाभ नहीं है। राममोहन एविन्यू में मैंने एक मकान पसन्द किया है। अगले सप्ताह से मैं उसमें रहने लगूँगा। तुम चाहो तो वहाँ रह सकती हो, लेकिन राजू को मैं अपने साथ नहीं रखूँगा।”

“राजू को नहीं रखोगे? तब वे क्या करेंगे?”

“यह वे जानें।” रामलाल ने अन्यमनस्कता से उत्तर दिया—
“मुझे कोई सरोकार नहीं। मैं तुम्हें यह स्पष्ट रूप से बतला देना

चाहता हूँ कि मैं बे मतलब किसी का बोझ नहीं उठा सकता । लेकिन तुम अपवाद हो । तुम चाहो तो मेरे साथ रह सकती हो, और धीरे-धीरे तुम्हें वे सब चीजें मिल जायँगी जिनकी तुम इतने जमाने से इच्छुक रही हो । लेकिन अगर तुम्हें मेरे साथ रहना पसन्द न हो, तो तुम शौक से राजू के साथ रहो और भूखों मरो ।”

मीरा का चेहरा फक हो गया । वह काँप उठी ।

“राजू का साथ मैं नहीं छोड़ सकती;” कोमल स्वर में उसने कहा—“छोड़ भी सकती तो न छोड़ती । उन्हें मेरी आवश्यकता जितनी आज है, उतनी शायद फिर कभी न होगी ।”

“मान लो कि मुझे भी तुम्हारी जरूरत आज उतनी ही है जितनी राजू को है । तब ?”

मीरा अपनी कुरसी पर पीछे उठग गई । उसका वह सुन्दर संसार, जिसकी रचना उसने अपने मन में बड़े प्रेम और यत्न से की थी, उसे अपने चारों ओर ढेर होता नज़र आने लगा । उसे याद आई वज्जीराबाद की और उस सुन्दर सन्ध्या की जब जाह्नवी के सुरम्य तट पर बैठकर उन तीनों ने अपने विद्रोह की योजना तैयार की थी । और याद आई उसे वे सुहावनी रातें, जब वर्मा-भवन में अपने बिस्तरे पर पड़ी-पड़ी वह अपने स्वप्नों की सृष्टि करती थी । उन स्वप्नों की रक्षा क्या किसी तरह नहीं हो सकती ?

“एक और महत्त्वपूर्ण खबर तुम्हें सुनानो है, मीरा ।” रामलाल ने मुस्कराकर कहा—“चाचाजी और उनकी फ़ैक्टरी के सम्बन्ध में जो कुछ मैं तुमसे कहा करता था, वह सब तुम्हें याद है न ?”

“तुम कहते थे कि उन्हें समय की प्रगति का ध्यान नहीं है ।”

“बिल्कुल ठीक । मेरा जो खयाल था, वही आज हो रहा है । वर्मा लेदर फ़ैक्टरी की दशा दिन-प्रतिदिन बिगड़ती जा रही है । उसका व्यवसाय बिल्कुल मन्दा पड़ गया है । बाज़ार में उसके सामान की खपत अब बहुत कम होती है । शीघ्र ही उसकी साख

भी रुठ जायगी। यह बात अब मेरी समझ में आ रही है कि मामाजी अपना निजी लेजर किसी को क्यों नहीं दिखलाते थे। वर्षों से वे घाटा उठाते आ रहे हैं और, मेरा खयाल है कि, बहुत जल्द दिवालिया हो जायेंगे।”

मीरा को आश्चर्य हुआ।

“मैं तो समझती थी कि वे बड़े अमीर हैं।”

“पहले वे बेशक बड़े धनी थे,” रामलाल ने स्वीकार किया—
“लेकिन घाटे पर चलनेवाला व्यवसाय अमीर से अमीर व्यवसायी को भी एक दिन निर्धन बना देता है। बाबू श्यामलाल वर्मा तेजी से अवनति के गढ़े की ओर खिसक रहे हैं। उनके कारखाने में जो कुछ बाक़ी है वह आज मैंने मिस्टर स्टोन को दे दिया।”

“लेकिन तुम यह कैसे कर सके?”

“बड़ी आसानी से।” रामलाल ने इतमीनान से उत्तर दिया—
“फ़ैक्टरी के कौन और कितने ग्राहक हैं, वे क्या खरीदते हैं और कितनी कीमत देते हैं, फ़ैक्टरी में कौन-कौन सा सामान तैयार होता है और प्रत्येक की तैयारी में कितनी लागत बैठती है—यह सब वज़ीराबाद से आते समय मैं लिख लाया था। मैंने यह भी पता लगा लिया था कि फ़ैक्टरी ने क्या और कितना कच्चा माल इधर खरीदा है और उसमें से कितना माल अच्छा है और कितना रद्दी। फ़ैक्टरी का एक ही एजेंट ऐसा था, जिससे उसे कुछ लाभ था। उसे मैंने अपनी कम्पनी में नौकर रख लिया है। वर्मा लेदर फ़ैक्टरी जब टूट जायगी, तो हमारी कम्पनी उसे खरीद लेगी। हम नये ढङ्ग से उसका सङ्गठन करेंगे और उसमें नई-नई मशीनें लगायेंगे और मैंने अपनी कम्पनी को आश्वासन दे दिया है कि मैं कम से कम साल भर तक उस फ़ैक्टरी का इन्तज़ाम अवश्य देखूँगा।”

“बेचारे चाचाजी!” दीर्घ निःश्वास खींचकर मीरा ने कहा।

“वे दया के पात्र नहीं हैं। अच्छा, मीरा, अब तुम अपना निश्चय कर डालो। मामला बिलकुल साफ है। मैं और राजू—ये दो पात्र तुम्हारे सामने हैं। इन दोनों में से किसी को तुम्हें पसन्द करना है। जो कुछ तुम चाहती हो, उसका अधिकांश मैं तुम्हें दे सकता हूँ। राजू तुम्हें कुछ नहीं दे सकते।”

मीरा विकल हो उठी।

“लेकिन, रामू, सोचो तो, राजू को मैं कैसे छोड़ सकता हूँ।”

“जितना हक राजू का तुम्हारे ऊपर है, उतना ही मेरा भी है।” सुदृढ़ स्वर में रामलाल ने कहा।

“यह मैं नहीं कह सकती, रामू।” मीरा कोमल स्वर में बोली—“राजू और मैंने इस विषय पर अच्छी तरह विचार तो नहीं किया है, क्योंकि ऐसा करना अभी मज्जाक मालूम होता है; लेकिन यह तय सा ही है कि जब उनकी पुस्तकें छपने लगेंगी और यह बुरा समय बीत जायगा, तो हम दोनों विवाह कर लेंगे।”

“उनकी पुस्तकें कभी नहीं छपेंगी।” कटु स्वर में रामलाल ने कहा—“वे बिलकुल निकम्मे आदमी हैं। फ़ैक्टरी में उन्हें काम करते देख चुका हूँ। मामूली से मामूली काम भी वे ठीक तरह नहीं कर पाते थे। बहुमूल्य वस्त्र और आभूषण तुम्हें उनसे नहीं मिल सकेंगे, मीरा।”

“कुछ परवा नहीं। न मिलेंगे तो न सही। उन चीजों के बिना मैं अपना काम चला लूँगी।”

रामलाल ने बिल चुकाया और वेटरों को उदारतापूर्वक इनाम दिया। उसकी नीचता की तरह उसकी उदारता भी बिलकुल नपी-तुली होती थी। हर समय वह आगे बढ़ने की फ़िक्र में रहता था। किसी ऐसे व्यक्ति को, जिससे कुछ लाभ होने की आशा न हो, एक पैसा भी देना उसे खलता था। लेकिन जिस

व्यक्ति से कुछ लाभ होने की आशा हो उसे वह रुपया दो रुपया खुशी से दे सकता था। वे उठ खड़े हुए।

“आज ही यह प्रसंग छेड़ने में शायद मुझसे गलती हुई, मीरा। तुम्हें अब भी राजमोहन पर विश्वास है; मुझे बिलकुल नहीं है। जतीन्द्र स्ट्रीट से कल मैं अपना सामान चठवा ले आऊँगा। मेरा खयाल है कि एक न एक दिन तुम्हें अपना निश्चय अवश्य बदलना पड़ेगा। मेरे नये घर में हमेशा तुम्हारे लिए जगह रहेगी।”

“मेरा निश्चय कभी नहीं बदलेगा।” मीरा ने हड़तासूचक स्वर में कहा—“इसे तुम मेरा दुर्भाग्य समझो या सौभाग्य, लेकिन मैं उन स्त्रियों में हूँ जिनकी निष्ठा अटल होती है। राजू को मैं बहुत चाहती हूँ।”

“बिना किसी सुदृढ़ आधार के प्रेम टिक नहीं सकता। राजू में तेज नहीं है। तेज ही क्या, उसमें कोई ऐसा बात नहीं है जिसका वह सहारा ले सके। निराशा के सिवा तुम्हें उससे कुछ नहीं मिलेगा। उससे तुम परेशान हो जाओगी। तब एक दिन तुम मेरे पास आओगी।”

एक टैक्सी पर बैठकर वे घर की ओर खाना गए। दोनों चुप थे। जतीन्द्र स्ट्रीट सामने आ गई।

“मीरा !”

“हाँ।” वह सिहर उठी।

सहसा रामलाल उसे बाहु-पाश में बाँधकर उसका चुम्बन करने लगा।

“छोड़ो ! छोड़ो !”

मीरा बलपूर्वक उससे अलग होकर अपने हाँठ और कपोल पोंछने लगी। उसकी आँखों के सामने अन्धकार छा गया।

“रामू !” उसने हाँफते हुए कहा—“किसी ने आज तक मेरे साथ ऐसा व्यवहार नहीं किया था। यह सब मुझे बिलकुल नापसन्द है। यह बात याद रखना !”

“याद रखूँगा जब तक ठीक समझूँगा।”

टैक्सी रुकी। वह तेज़ी से उतरकर मकान के अन्दर चली गई। जब वह ऊपर अपनी बैठक में पहुँची तो उसने देखा कि राजमोहन आराम-कुर पर पड़ा सो रहा है। उसका वह पत्र कुरसी के हाथ पर रक्खा था। रुपया मेज़ पर पड़ा था और मदिरा की तेज़ गंध कमरे में फैली हुई थी।

५

रामलाल जब बैठक में पहुँचा तो मीरा आँखों में आँसू भरे राजमोहन को ताड़ना दे रही थी। राजमोहन की ओर अवहेलना की दृष्टि से देखते हुए रामलाल ने अपना ओवरकोट उतारा। राजमोहन सचमुच उस समय कुछ भला नहीं दिख रहा था। उसका कालर गन्दा हो गया था, टाई खिसककर कन्धे की ओर मुड़ गई थी, कपड़ों में शिकनें पड़ गई थीं, बाल बिखरे हुए थे। पहले से वह अधिक दुबला दिखाई दे रहा था, और उसके चेहरे पर जो हल्की सुखी थी, वह उसकी स्वस्थता की द्योतक नहीं थी। फिर भी उसकी आकृति में एक विचित्र आकर्षण था। हाथ पर सिर टेके हुए, मुस्कराता हुआ, मीरा की ओर क्षमा-याचना-भरी दृष्टि से देखता हुआ, वह उसकी फटकारें सुन रहा था।

“बेकार ख़फ़ा हो रही हो, मीरा,” कोमल स्वर में उसने कहा—“मैं यहाँ से पैदल पाल स्ट्रीट गया, और वहाँ बड़ा देर तक अपने उस मित्र की तलाश में, जिसकी एक सम्पादक से मित्रता है, इधर-उधर चक्कर काटता रहा। आखिर जब वह किसी तरह मिला, तो हम उन सम्पादक महोदय की खोज में निकले। मेरे मित्र ने

दो बार मुझे शराब पिलाई। शराब पिलाने के बजाय अगर वह मुझे खाना खिलाता तो ज्यादा अच्छा होता। लेकिन मैं यह उससे कैसे कहता ?”

“घर आने के बाद तुम कहीं भोजन करने क्यों नहीं गये ?” मीरा ने कहा।

राजमोहन ने मेज़ पर पड़े हुए रुपये पर दृष्टि डाली।

“वह मेरा नहीं है। मेरे रुपये तो खत्म हो गये।”

“ऐसी बे-सिर-पैर की बात मैंने कभी नहीं सुनी।” मीरा ने विकल स्वर में कहा।

“बे-सिर-पैर की बात नहीं है,” सिगरेट जलाते हुए रामलाल ने कहा—“अब यह मामला ढाला नहीं जा सकता। आज मैंने हिसाब देखा था। तुम दोनों की पूँजियाँ खत्म हो गईं। तुम दोनों ने महीने भर से घर के खर्च की मद में कुछ नहीं दिया। अपने हिस्से के रुपये मैं बराबर देता रहा हूँ। और मुझे यह मालूम हुआ है कि मिसेज़ बोस का हिसाब भी बेबाक नहीं हुआ है।”

“तो तुम क्या करोगे ?” कौतूहल-सूचक स्वर में राज-मोहन ने पूछा।

“मैंने तुम लोगों का साथ छोड़ देने का निश्चय कर लिया है।” रामलाल ने गर्व-पूर्ण स्वर में कहा—“यह जगह अब मेरे रहने के लायक नहीं है। कल से मैं राममोहन एविन्यू में रहने लगूँगा। अपने इस निश्चय को सूचना मैं मीरा को अभी कुछ देर पहले दे चुका हूँ।”

“बड़ा अच्छा निश्चय है तुम्हारा !” व्यंग्य-पूर्ण स्वर में राजमोहन ने कहा।

“इस महीने के किराये की मद में अपने हिस्से के रुपये मैं देकर जाऊँगा। लेकिन यहाँ से जाने के पहले मैं एक बात और कह देना चाहता हूँ।”

“वसे भी कह डालो ।” राजमोहन ने कहा ।

“दस महीने से तुम कालीनगर में रह रहे हो और इस बीच में तुमने अपनी सारी पूँजी उड़ा दी । लेकिन कमाया तुमने कुछ नहीं । इसलिए आज तुम कङ्गाल हो गये हो । मीरा के रुपये भी उड़ गये, लेकिन ये कुछ न कुछ कमाती अवश्य रही हैं । इनकी कमाई के रुपये भी तुम्हारे खर्च में आ गये । हमने यहाँ अपना जीवन एक साथ आरम्भ किया था, लेकिन हम किसी व्यवसाय के साभोदार नहीं हैं । मैं तुम्हारा साथ छोड़ रहा हूँ । अब तुम क्या करोगे ?”

राजमोहन का खून खौल उठा ।

“इससे तुम्हें क्या मतलब है ?” उत्तेजित स्वर में उसने पूछा ।

“जहाँ तक तुम्हारा सवाल है,” रामलाल ने कटु स्वर में उत्तर दिया—“मुझे बेशक कोई मतलब नहीं है । लेकिन मीरा की बात दूसरी है ।”

“राजमोहन...रामलाल...” अनुनय-सूचक स्वर में मीरा बोली—“कृपया लड़ो मत । लड़ने से कोई फायदा नहीं । अगर तुम जाना ही चाहते हो रामलाल, तो शौक से जाओ । हम दोनों किसी न किसी तरह अपना काम चला ही लेंगे ।”

“मैं यह जानने के लिए उत्सुक रहूँगा कि तुम्हारा काम कैसे चलता है ।”

राजमोहन उछलकर मीरा की बगल में खड़ा हो गया और रामलाल की ओर क्रोधोन्मत्त दृष्टि से घूरने लगा ।

“भाड़ में जाओ तुम—और भाड़ में जाय तुम्हारी उत्सुकता !” कठोर स्वर में वह बोला—“हम तुमसे भीख नहीं माँगेगे ।”

“तुम तो अगर माँगेगे,” रामलाल ने कहा—“तो भी मैं न दूँगा । लेकिन होश दुरुस्त हो जाने पर अगर तुम बिलकुल नीचे से काम करना चाहोगे, तो मैं किसी कारखाने में तुम्हें एक

मामूली कुर्क की जगह दिलवा देने की कोशिश कर दूँगा। हालाँकि यह मेरे सिद्धान्तों के कुछ विरुद्ध है, फिर भी पुरानी बातों का खयाल करके मैं इतना ज़रूर कर दूँगा। मीरा की बात और है। इन्हें मैं अपने घर में जगह देने को तैयार हूँ। भोजन की फ़िक्र भी इन्हें नहीं करनी पड़ेगी। अपने कपड़ों के लिए ये काफ़ी कमा लेंगी। तुम्हारी फ़िक्र अगर इन्हें न रहेगी, तो ये बड़े आराम से जीवन व्यतीत कर सकेंगी।”

राजमोहन क्रोध से बौखला उठा। उसने अपने उस विरोधी की ओर झपटना चाहा, लेकिन उसकी बाँह में अपनी बाँह डालकर मीरा ने उसे रोक लिया।

“तुम बड़े बेरहम हो, रामलाल !” क्रोधपूर्ण स्वर में उसने कहा—“राजू शोघ्र ही इतना कमाने लगेंगे जितना मैं अपने जीवन में कभी न कमा सकूँगी। मैं अपने को धन्य मानूँगी अगर इनकी उस समय तत् सहायता कर सकूँगी जब तक ये अपने काम में सफल न होंगे।”

रामलाल कई क्षणों तक उन दोनों की ओर भेदपूर्ण दृष्टि से देखता रहा। फिर उसने मुड़कर घण्टी बजाई।

“घण्टी तुमने क्यों बजाई ?” राजमोहन ने पूछा।

“मैं मिसेज़ बोस को यहाँ बुलाना चाहता हूँ। उन्हें सारी बातें समझाकर मैं अपनी ज़िम्मेदारी से बरी हो जाऊँगा। फिर अपना असबाब लेकर मैं यहाँ से चला जाऊँगा।”

ज़रा देर में मिसेज़ बोस हॉफती हुई ऊपर आ पहुँचीं। वे भारी-भरकम और अधेड़ थीं। उनका दावा था कि घाघ से घाघ आदमी को भी बुद्धू बना देना उनके बायें हाथ का खेल है।

“मिसेज़ बोस,” रामलाल ने कहा—“इस वक्त आपको इतना कष्ट देने के लिए मैं आपसे माफ़ी चाहता हूँ।”

“कोई बात नहीं,” मुँह बनाकर मिसेज बोस ने कहा—
“हालाँकि इतनी सीढ़ियाँ चढ़कर ऊपर आने में मुझे इस समय कोई मज्जा नहीं मिला।”

“बात यह है, मिसेज बोस,” रामलाल ने कहा—“कि मैं अब उन लोगों का साथ छोड़ रहा हूँ। पिछले महीने का किराया मैं दे चुका हूँ। अब इस महीने के किराये का अपना हिस्सा देकर मैं यहाँ से जाना चाहता हूँ।” वह जेब से रुपये निकालने लगा।

तुरन्त हाथ फैलाकर मिसेज बोस ने रुपये ले लिये।

“पिछले महीने का किराया मुझे नहीं मिला, महाशय।”
चिन्तित स्वर में मिसेज बोस ने कहा।

“पिछला हिसाब इन लोगों से वसूल कीजिए। मैं अपने हिस्से के रुपये दे चुका हूँ। उससे मुझे कोई मतलब नहीं। आज ही मैं आपका घर छोड़ रहा हूँ। मेरे ऊपर आपका अब कुछ बाकी नहीं रह जाता।”

“यह मैं नहीं कह सकती, महाशय।” मिसेज बोस ने कहा—“इस तरह एकाएक घर खाली कर देना आपत्तिजनक हो सकता है।”

“लेकिन हम दोनों तो यहाँ रहेंगे ही, मिसेज बोस।” मीरा ने कहा—“सिर्फ मिस्टर सिन्हा जा रहे हैं।”

मिसेज बोस ने गला साफ किया।

“पिछले महीने का किराया आप इस समय दे सकती हैं, मिस कपूर?” उन्होंने पूछा।

“इस समय तो नहीं दे सकती, मिसेज बोस।” खेद-सूचक भाव से सिर हिलाकर मीरा ने उत्तर दिया।

“मैं यह ज्यादा पसन्द करती हूँ कि मेरे किरायेदार क़ायदे के साथ किसी काम में लगे हों। इससे स्थिति साफ रहती है, और

किराया ठीक वक्त पर मिल जाता है। खैर, इसे जाने दीजिए। आप और मिस्टर वर्मा क्या यहाँ अकेले रहना चाहते हैं ?”

“बेशक,” आश्चर्य से मिसेज़ बोस की ओर ताकते हुए मीरा ने उत्तर दिया—“मिस्टर सिन्हा तो आपको अभी बतला ही चुके हैं कि वे यहाँ से जा रहे हैं।”

मिसेज़ बोस ने फिर गला साफ़ किया।

“मुझे खेद है, मिस कपूर,” सिर हिलाकर उन्होंने कहा—“कि आप लोगों को मैं यहाँ नहीं रहने दे सकती। इसमें बुरा मानने की कोई बात नहीं है। यह घर भले आदमियों का घर है, और भले आदमी ही यहाँ हमेशा टिकते हैं।”

मीरा के आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा।

“आपका मतलब क्या है, मिसेज़ बोस ?” उसने पूछा—“हम लोग क्या भले आदमी नहीं हैं ?”

“मेरा मतलब यह नहीं है कि आप लोग भले आदमी नहीं हैं। साफ़ शब्दों में मेरा मतलब यह है कि चूँकि आप दोनों जवान हैं और अविवाहित हैं तथा निकट भविष्य में भी शायद आप लोग पति-पत्नी बनने का विचार नहीं रखते, इसलिए मैं आप लोगों को अपने घर में एक साथ रहने नहीं दूँगी।”

कमरे में भयावह निःस्तब्धता छा गई। मिसेज़ बोस दरवाज़े की ओर खिसकने लगी। प्रसन्नता अनुभव करता हुआ रामलाल मीरा और राजमोहन की ओर कौतूहल-पूर्ण दृष्टि से देख रहा था। मीरा की दशा उस बच्चे की सी हो गई थी जो एकाएक डर गया हो। विवशता से राजमोहन की ओर देखकर उसने हाथों में मुँह छिपा लिया। इस युद्ध में भाग लेने की सामर्थ्य उसमें नहीं थी। मिसेज़ बोस का वह अप्रत्याशित व्यवहार राजमोहन को उतना आश्चर्यजनक नहीं लगा। वह शीघ्र ही सँभल गया।

“देखिए मिसेज़ बोस,” तीव्र स्वर में उसने कहा—“ये सब फ़िजल की बातें हैं। मेरा और मिस कपूर का पालन-पोषण एक ही घर में हुआ था। लड़कपन से ही हम दोनों, नहीं तीनों, एक साथ भाई-बहन की तरह रहते आ रहे हैं।”

मिसेज़ बोस दरवाज़े के बाहर पहुँच चुकी थी। उनकी घबराहट दूर हो चुकी थी।

“जैसा मैं पहले भी कह चुकी हूँ,” उन्होंने कहा—“इसमें बुरा मानने की कोई बात नहीं है, महाशय। किसी अनुचित बात की ओर मेरा इशारा नहीं है। बात वास्तव में केवल इतनी ही है कि मैं आप लोगों को अब इन कमरों में रहने देने में असमर्थ हूँ। कृपया शीघ्र ही अपने लिए कहीं और इन्तज़ाम कर लीजिए। नमस्कार।”

दरवाज़ा बन्द करके वे नीचे चली गईं। मोरा आपत्ति से घबरा जानेवाली स्त्री नहीं थी, लेकिन इस समय उसका साहस जवाब दे गया। हाथों में मुँह छिपाये हुए, आराम-कुर्सी पर बैठकर, वह आँसू बहाने लगी। राजमोहन रामलाल की ओर बढ़ा।

“क्यों, रामलाल,” गम्भीर स्वर में उसने कहा—“जब तुमने मिसेज़ बोस को यहाँ बुलाया था तो क्या तुम जानते थे कि वे क्या कहेंगी?”

“वे क्या कहेंगी, क्या नहीं, यह तो मैं नहीं जानता था।” व्यंग्य-सूचक स्वर में रामलाल ने उत्तर दिया—“लेकिन मुझे यह बेशक मालूम था कि मेरे चले जाने के बाद वे तुम दोनों को अपने घर में ठहराये रहना पसन्द नहीं करेंगी।”

“सवाल यह नहीं है।” कठोर स्वर में राजमोहन ने कहा—“हम जानते हैं कि हम दोनों को संसार का बहुत कम अनुभव है। जिस बात की ओर अभी मिसेज़ बोस ने इशारा किया था, उसका खयाल हमें नहीं आया था। क्या तुम्हें उसका खयाल आया था?”

“हाँ, आया था ।” रामलाल ने स्वीकार किया ।

“तब तुमने मीरा से यह क्यों कहा था कि वह तुम्हारे नये घर में जाकर तुम्हारे साथ रहे ?” राजमोहन ने दो पीसकर पूछा ।

एक क्षण के लिए फिर निःस्तब्धता छा गई । मीरा सिसकियाँ बन्द हो गई । सिर उठाकर वह भी रामलाल की अघृणा-सूचक दृष्टि से देखने लगी ।

“इससे तुम्हें कोई मतलब नहीं ।” रामलाल ने लापरवाह से उत्तर दिया ।

“मतलब क्यों नहीं है ?” राजमोहन ने गरजकर कहा और रामलाल के मुँह पर एक घूँसा जमा दिया ।

रामलाल लड़खड़ाकर पीछे हट गया । उसका सिर चबखा गया, लेकिन दीवार का सहारा लेकर वह कर्श पर गिरने बच गया । राजमोहन के ऊपर प्रत्याक्रमण करने की उस कोशिश नहीं की और राजमोहन ने भी दूसरा वार नहीं किया । मुख से निकलते हुए खून को रूमाल से पोछता हुआ रामलाल कई क्षणों तक चुपचाप खड़ा रहा, फिर अपना ओवरकोट हाथ में लटकाकर और हैट और छड़ी लेकर, वह कमरे से बाहर निकल गया । जब तक उसके सीढ़ियों पर उतरने की आवाज़ सुन देती रही, तब तक राजमोहन खड़ा सुनता रहा । फिर वह मी की ओर मुड़ा । मीरा को वह उस समय उन राजपूत-वीरों जैसा लग रहा था, जो महिलाओं की सम्मान-रक्षा के निमित्त क्षण-मात्र भयानक युद्ध छेड़ देने को तैयार हो जाते थे । बाद में उसकी उद्विग्नता पर उसे कुछ खेद अवश्य हुआ था, किन्तु उस समय तो उसे ऐसा लगा था जैसे उसके उस वीरोचित कार्य से वह भयावह कालिमा अदृश्य हो गई जो आज अनायास उसके स्वप्न-संसार घुस आई थी । उसके मन में उसके प्रति असीम भक्ति उस

ही थी। उसने अपनी बाँहें फैला दीं। दोनों प्रगाढ़ आलिङ्गन में बँध गये।

“प्यारी मीरा,” राजमोहन ने कोमल स्वर में कहा—“मैं यह नहीं चाहता था कि जब तक कुछ बन न जाऊँ, जब तक तुम्हें कुछ दे सकने के योग्य न हो जाऊँ, तब तक तुमसे तुम्हें माँगूँ। लेकिन अब मैं विवश हूँ। इस समय जो घटना घटी है, उसे देखते हुए यह बात अब टाली नहीं जा सकती। शायद इसी की कमी थी, और शायद यह उन्नति की ओर अग्रसर होने में मुझे सहारा देगी। मेरी बनोगी, मीरा ?”

“बनूँगी।” कोमल स्वर में मीरा ने उत्तर दिया।

उसकी बाँहें और भी कस गईं। उनकी वयस अभी कम थी, और वे अभी उस प्रेम के महत्त्व का समझ सकने के योग्य नहीं थे, जो उन दोनों के हृदयों में उमड़ रहा था और जिसने उन्हें एक सूत्र में बाँधकर अपने संरक्षण में ले लिया था। वे उस समय भूल गये थे सारे कष्ट, सारी असुविधाएँ, और अनुभव कर रहे थे अपार आनन्द, अनिवर्चनीय आह्लाद। पास के घण्टा-घर ने ग्यारह बजने की सूचना दी। जादू टूटा। हँसकर मीरा से अलग होकर राजमोहन उठ खड़ा हुआ। हैट लगाकर, रुपया उठाकर, उसने मुस्कराते हुए मीरा को दिखाया।

“रात में कहीं ठहरने का किराया देने के लिए इसे लिये जाता हूँ, मीरा।” दरवाजे की ओर बढ़ते हुए उसने कहा।

मीरा बैठी देखती रह गई। फिर एकाएक उसे याद आया कि वह कोई आवश्यक सामान अपने साथ नहीं ले जा रहा है। तुरन्त उठकर आवाज़ लगाकर उसने उसे बुलाया। लेकिन कोई उत्तर नहीं मिला। केवल उसके जूतों की आवाज़ दो क्षण तक सुनाई देती रही। वह लपककर खिड़की के पास गई। राजमोहन घर से निकलकर सड़क पर चला जा रहा था। इस

समय उसकी चाल में एक विचित्र नवीनता दृष्टिगोचर हो रही थी। ऐसा लग रहा था जैसे कोई विजयी वीर गौरव के भाव से सिर उठाये हुए, भूमता हुआ चला जा रहा हो। मीरा का दिल खुशी से नाच उठा।

६

इस तरह दस मास तक कालीनगर में एक साथ रहने के बाद वे तीनों अलग हो गये। रामलाल राममोहन एविन्यू के एक शानदार मकान में शान से रहने लगा। अपनी सेवा के लिए अच्छे वेतन पर उसने एक शिक्षित और कुशल सेवक रख लिया, और सवारी के लिए एक कार खरीद ली। वह बढ़िया वस्त्र पहनता, बड़े-बड़े होटल और रेस्तराँ में भोजन करता और अपने सहयोगियों की तरह सज-धजकर अपनी कार पर सवार होकर ठाट से दफ्तर जाता। वह सुव्यवस्थित गति से उन्नति के पथ पर अग्रसर हो रहा था। राजमोहन ने चित्तरञ्जन स्ट्रीट के एक पुराने मकान में ऊपर का एक कमरा ले लिया। कमरा हवादार था और वहाँ से नदी के दृश्य दिखाई देते थे। मीरा महिलाओं के एक साधारण आश्रम में एक छोटा-सा कमरा लेकर रहने लगी। राजमोहन उन सम्पादक महोदय से भेंट कर सकने में सफल हुआ। उन्होंने कई दिनों तक भाँय-भाँय करने के बाद उसकी तीन कहानियाँ और दो लेख स्वीकार कर लिये और उसके बहुत कहने-सुनने पर पुरस्कार पेशगी देने को राजी हो गये। इस तरह उक्त सम्पादक से ५०) पाकर वह अपनी कठिनाई का एक हद तक सामना कर सकने की स्थिति में आ गया। एक सप्ताह के बाद ही मीरा का कोट फिर गिरवी हो गया, और फिर दो सप्ताह के बाद उसे इस निश्चय पर पहुँचना पड़ा कि अब वह टाइपराइटिंग का काम न करेगी। राजमोहन में जिस आवश्यक गुण का अभाव था

वह उसमें यथेष्ट मात्रा में विद्यमान था—उसमें तीक्ष्ण सहज-बुद्धि थी। नौकरी करने का विचार उसे रुचिकर तो प्रतीत नहीं हुआ, किन्तु अपनी आपत्तियों को दाबकर उसने निश्चय कर लिया कि वह कहीं न कहीं नौकरी अवश्य कर लेगी। कई दिनों तक समाचारपत्रों के विज्ञापन देखकर उसने रिक्त स्थानों की एक सूची तैयार की। फिर एक दिन सूची लेकर वह घर से निकल पड़ी।

मार्ग में एक स्थान पर एक थियेटर दिखाई पड़ा। पोस्टरों पर दृष्टि डालने के लिए वह रुक गई। उनमें एक नये खेल का विज्ञापन था। स्त्रियों और पुरुषों की एक क़तार एक छोटे से दरवाज़े से अन्दर जा रही थी। एक शब्द उसे सुनाई पड़ा—‘रिहर्सल’। एकाएक एक विचार उसके मन में उठा—अवसर अच्छा है और सम्भव है भाग्य उसका साथ दे जाय। वह भी तुरन्त उस क़तार में मिल गई। सौभाग्यवश डोर-कीपर दूसरी ओर देखने लगा। अन्य लोगों के पीछे-पीछे वह भी अन्दर चली गई। कई टेढ़े-मेढ़े गलियारों में होती हुई वह मंच के ‘विंग’ में जा पहुँची। मंच के मध्य में दो व्यक्ति खड़े थे—एक नवयुवती और एक नवयुवक। एक नाटे, मोटे महाशय हाथ में एक हस्तलिखित पुस्तक लिये हुए उन दोनों के चारों ओर बौखलाये हुए से घूम रहे थे।

“रही—बिलकुल रही !” वे बिगड़कर बोले—“यह अभिनय नहीं, अभिनय का मज़ाक़ है। सकपकाते हुए तुमने प्रवेश किया और अपनी-अपनी लाइनें इस तरह कहीं जैसे मास्टर को सबक़ सुना रहे हो। अगर इसी तरह पार्ट करोगे तो खेल बिलकुल चौपट हो जायगा। ईश्वर ही हमारी सहायता करे। अपने अभिनय में थोड़ा सा जीवन, थोड़ी सी स्वाभाविकता लाने की कोशिश करो, वरना यह नाटक एक रोज़ भी न चल सकेगा।”

मीरा ने मुस्कराकर उन महाशय की ओर देखा जो उसके पास ही खड़े हुए सिगरेट पी रहे थे।

“कसूर वास्तव में इन्हीं दोनों का है,” उसने पूछा—“या खेल में ही कुछ गड़बड़ी है ?”

“यह मुझसे पूछना तो उचित नहीं है,” उन्होंने उत्तर दिया—
“क्योंकि इस नाटक का लेखक मैं ही हूँ।”

“अच्छा, आप ही इसके लेखक हैं ! कमाल किया है आपने !”

युवक को कुछ बेचैनी अनुभव हुई।

“यह तो मैं नहीं कह सकता।” उसने कहा—“इस तरह की चीज़ लिख लेना कुछ बहुत कठिन नहीं है।”

“मुझे यहाँ जगह मिल सकती है ?” मीरा ने धीरे से पूछा।

युवक को आश्चर्य हुआ।

“तो क्या आप इस खेल में नहीं हैं ?”

“अभी तो नहीं हूँ।”

“तब आप यहाँ कैसे आ गई ?”

“मैंने औरों को अन्दर आते देखा और पीछे हो ली।” मीरा ने बतलाया—“घर से नौकरी की तलाश में निकली थी। एव दफ़्तर में अर्जी देने जा रही थी। लेकिन अगर यहाँ जगह मिल जाय तो इससे बढ़कर मेरे लिए कोई बात नहीं हो सकती।”

युवक मुड़कर उसे ध्यान से देखने लगा।

“मुझे बेवक़फ़ तो नहीं बना रही हो ?” उसने मुस्कराक पूछा—“ऐसी बात तो नहीं है कि तुम कोई प्रसिद्ध अभिनेत्री हैं और दिल्ली के विचार से वेष बदलकर निकली हो ?”

“नहीं, यह बात नहीं है।” मीरा ने आश्वासन दिया—“मैं गरीब हूँ, लेकिन ईमानदार हूँ और ईमानदारी से रोज़ी कमान चाहती हूँ।”

रिहर्सल अब जोरां से हो रहा था। युवक ने डायरेक्टर को आवाज़ लगाई।

“नरेन्द्र ! ज़रा सुनो तो !”

पुस्तक से हवा लेते हुए डायरेक्टर महोदय पास आये ।

“मुझे फटकारें सुनाने से कोई लाभ नहीं होगा, प्रकाश,” उन्होंने मुँह बनाकर कहा—“मुझे पूरा विश्वास है कि मैं इन लोगों को तैयार कर लूँगा । यह बात ज़रूर है कि समय बहुत लग रहा है ।”

“मैं तुम्हें फटकारें सुनाना नहीं चाहता, नरेन्द्र । एक बात बतलाओ, कोई जगह खाली है ?”

“एक भी नहीं !”

मीरा का जी सूख गया । किन्तु एक क्षण के बाद ही उसकी आशा फिर पनप उठी ।

“किसी तरह एक जगह निकालो, नरेन्द्र । दोस्ती का खयाल करो; मुरौवत से काम लो ।”

“अजोब आदमी हो, प्रकाश ! अच्छा बतलाओ, किसके लिए जगह चाहते हो ।”

“इनके लिए ।” प्रसन्न होकर लेखक ने कहा—“आओ, इनसे तुम्हारा परिचय करा दूँ । मिस...”

“मिस मीरा कपूर ।” मीरा ने कहा—“मिज़ाज अच्छा है, मिस्टर नरेन्द्र ? मैं आशा करती हूँ कि आप मुझे भी अपनी कम्पनी में जगह देने की कृपा करेंगे और मेरे साथ वैसी सख्ती से पेश नहीं आयेंगे, जैसी आप अभी उन दोनों पर दिखा रहे थे ।”

डायरेक्टर ने उससे हाथ मिलाया पहले अन्यमनस्कता से फिर पूरे जोश से ।

“इन्हें पहले क्यों नहीं ले आये, प्रकाश ?”

“कैसे लाता, भाई, इन्हें अभी फुर्सत मिली है । फिर इस रद्दी खेल में शरीक होने को ये राज़ी हो नहीं होती थीं । बहुत कहने-सुनने से राज़ी हुई हैं ।”

“खैर, कोई हर्ज नहीं,” डायरेक्टर ने मुस्कराकर कहा—“खेल शुरू होने पर किलहाल आपको ६० प्रतिमास मिलेंगे। रिहर्सल ढाई बजे शुरू होगा। ठीक वक्त पर आ जाइएगा।”

“धन्यवाद।”

लेखक ने अपना घड़ी पर दृष्टि डाली।

“जलपान का समय हो गया है, मिस कपूर,” उसने कहा—
“चलो, चलें।”

“लेकिन...”

“हम ग्रैंड होटल चलेंगे।” उसने टोककर कहा—“शायद तुम यह कहना चाहती हो कि तुम्हारे कपड़े ठीक नहीं हैं। कोई हर्ज नहीं, चलो।”

वह आगे बढ़ा। विवश होकर मीरा को उसके साथ जाना पड़ा।

“अगर आप वास्तव में यह समझते हैं कि मेरे ये रद्दी वस्त्र आपत्तिजनक नहीं हैं,” मीरा ने कहा—“तो मैं आपका निमन्त्रण अस्वीकार करना नहीं चाहती। कृपया बतलाइए कि आप कौन हैं और इस नाटक का विषय क्या है।”

“मेरा नाम प्रकाशनारायण हुक्कू है।” लेखक ने कहा—
“यह नाटक मैंने लिखा जरूर है, लेकिन यह कोई ज़बर्दस्त चीज़ नहीं है। इसमें एक छोटी सी साधारण कहानी है, बाक़ी प्रहसन और नाच-गाने हैं।”

ग्रैंड होटल के रेस्तराँ में पहुँचकर वे एक कोने में बैठ गये।

“काकटेल पिओगी?” प्रकाश ने पूछा।

“मैंने काकटेल कभी नहीं पिया।” मीरा ने कहा—“आप बुरा न मानें तो न पिऊँ। एक ही दिन में बहुत सी नई बातें कर डालना शायद उचित न होगा।”

उसे कौन सी चीजें पसन्द हैं कौन सी नहीं, यह सब पूछकर प्रकाश ने आर्डर दिया। अपने लिए उसने काकटेल मँगवाया, मीरा के लिए साधारण जलपान। मित्रतापूर्ण भाव से वह बराबर उसका अध्ययन कर रहा था।

“क्या तुम अजनबी लोगों की दावतें स्वीकार करने की आदी हो?” उसने पूछा।

“आज से पहले मैंने कभी किसी अजनबी की दावत स्वीकार नहीं की।” मीरा ने उत्तर दिया—“लेकिन यह बात भी है कि पहले कभी किसी ऐसे अजनबी से मेरी भेट भी नहीं हुई जो एक प्रसिद्ध लेखक रहा हो और जिसने मुझे तुरन्त नौकरी दिलाकर लञ्च का निमन्त्रण दिया हो।”

“सभी मर्द विश्वास के योग्य नहीं होते।” उसने चेतावनी दी। “बहुतेरे बड़े शैतान होते हैं।”

मीरा ने मुस्कराकर उसकी ओर देखा। जब वह मुस्कराती थी, तो उसका सौन्दर्य अत्यधिक बढ़ जाता था।

“आपके ऊपर मैं हमेशा विश्वास करूँगी।” मीरा ने कोमल स्वर में कहा।

“मेरी भी यही इच्छा है कि तुम हमेशा मेरा विश्वास कर सको।” किञ्चित् अन्यमनस्कता से उसने उत्तर दिया—“यद्यपि इसका मतलब यह है कि मुझे बराबर सावधान रहना पड़ेगा।”

“यह आपकी बड़ी कृपा है कि आप ऐसा सोचते हैं। मुझे आपसे ऐसी ही आशा थी।”

वह कई क्षणों तक निःस्तब्ध बैठा रहा।

“अच्छा, मीरा,” कमरे की दूसरी ओर संकेत करके उसने कहा—“अब मैं भीम से तुम्हारा परिचय कराऊँगा। वह बेवकूफ सा तो जरूर लगता है, लेकिन वास्तव में बेवकूफ नहीं है।

थियेटर में उससे अकसर तुम्हारी भेंट होगी। हमारे खेल में वही रुपये लगा रहा है। अरे भीम ! जरा सुनो तो ।”

एक युवक बड़े इतमीनान से टहलता हुआ उनके समीप आया।

“मिस कपूर से तुम्हारा परिचय कराना चाहता हूँ, भीम ।” प्रकाश ने कहा—“महाराजकुमार भीमसिंह चौहान— मिस मीरा कपूर। मिस कपूर ने हमारी कम्पनी में सम्मिलित होना स्वीकार कर लिया है ।”

“इसका मतलब यह है कि आप हमारे खेल में अभिनय करेंगी ?” मीरा से हाथ मिलाकर भीम ने कहा—“बड़ी खुशी की बात है। पहले आप किस कम्पनी में थीं, मिस कपूर ? पहले आपसे कभी भेंट नहीं हुई; हुई थी ?”

“पहले मैं किसी नाटक कम्पनी में नहीं थी ।” मीरा ने उत्तर दिया।

“तो किसी फिल्म-कम्पनी में रही होंगी ?”

“जी नहीं ।”

“अच्छा, तो आप बिलकुल नई हैं ? प्रकाश ने बड़ा कमाल किया कि आपको खोज निकाला। यह बड़ी प्रसन्नता की बात है कि आपसे अकसर भेंट होगी। अच्छा, अब चलो। मुझे उन लोगों के साथ जलपान करना है ।” फिर वह उस ओर चला गया जहाँ एक मेज के सामने दो नवयुवतियाँ बैठी हुई थीं।

“आप महाराजकुमार हैं !” उसकी ओर देखते हुए मीरा ने कहा—“बड़ी खुशी की बात है कि आज एक महाराजा के लड़के से भेंट हुई ।”

“यों तो वह बड़ा नेक है,” प्रकाश ने कहा—“लेकिन औरतों के मामले में कच्चा है। बची रहना, मिस कपूर ।”

मीरा धीरे से हँस पड़ी।

“किस तरह ?”

“दूर से ही उससे बात करना ।” तुरन्त उत्तर मिला ।

“बहुत अच्छा,” मीरा ने आश्वासन दिया—“आपकी सलाह याद रखूँगी ।”

“वह तुम्हें लश्च का निमन्त्रण देगा ।” प्रकाश ने चेतावनी दी ।

“मैं स्वीकार नहीं करूँगी । और यह वास्तविक त्याग की बात होगी; क्योंकि ऐसा भोजन मुझे नित्य नहीं मिलता ।”

“जब जी चाहे, मेरे साथ भोजन करना ।” प्रकाश ने निमन्त्रण दिया ।

“लेकिन इस बात का मुझे कैसे विश्वास हो कि आप विश्वास-योग्य हैं ?” मीरा ने मुस्कराते हुए पूछा ।

“यह तुम्हें धीरे-धीरे मालूम होगा । काफ़ी पिओगी ?”

“वक्त है ? मैं वहाँ देर से पहुँचना नहीं चाहती ।”

प्रकाश ने अपनी घड़ी पर दृष्टि डाली ।

“बहुत वक्त है ।” आर्डर देकर उसने कहा ।

वह ज़रा देर तक निःस्तब्ध रहा । काफ़ी आई ।

“अच्छा, मिस कपूर,” प्रकाश ने कहा—“अब एक बात मैं तुमसे और कहना चाहता हूँ । दो-तीन सप्ताह में तुम रङ्ग-मञ्च से ऊब जाओगी, और इससे ज़्यादा शायद हमारा खेल भी नहीं चलेगा । थियेटर में बहुतेरे शरफ़ बदमाश पहुँचते हैं और वे अपरिचित स्त्रियों से छेड़खानी करने के आदी होते हैं । ऐसे लोगों से होशियार रहना ।”

“मैं समझती हूँ कि कोई मेरी ओर ध्यान नहीं देगा,” शीघ्रता से काफ़ी पीते हुए मीरा ने कहा—“लेकिन मैं होशियार रहूँगी । अच्छा, अब मैं जाऊँगी । आज मेरा पहला दिन है, इसलिए चाहती हूँ कि देर न हो ।”

वह उठ खड़ी हुई । प्रकाश भी उठने लगा ।

“आप तकलीफ न कीजिए,” मीरा ने कहा—“आपकी काफ़ी अभी ख़त्म नहीं हुई है। मैं चली जाऊँगी। इस आनन्ददायक जलपान के लिए अनेक धन्यवाद !”

प्रकाश उसे देखता खड़ा रह गया। दरवाज़े के बाहर पहुँचकर, मुड़कर, मीरा ने मुस्कराते हुए उसकी ओर देखा। कण्टों के बावजूद मीरा नित्य निखरती जा रही थी। उसका सुन्दर सुख-सफ़ेद रङ्ग और भी सुन्दर हो गया था, और वह कुछ और दुबली हो गई थी। उसकी बड़ी-बड़ी आँखें कुछ और बड़ी और चमकीली हो गई थीं। उसके साधारण वस्त्र उसके असाधारण सौंदर्य को किंचित्-मात्र भी कम कर सकने में सर्वथा असमर्थ सिद्ध हो रहे थे। दरवाज़े के समीप भोजन करते हुए अनेक व्यक्तियों की दृष्टियाँ बलात् उसकी ओर उठ गईं। किन्तु वह ज़रा भी परेशान नहीं हुई। अपने सर्वथा स्वाभाविक किन्तु अत्यधिक आकर्षक ढङ्ग से वह आगे बढ़ी। जिस वेटर ने उसके लिए दरवाज़ा खोला उसे उसने इस तरह मुस्कराकर धन्यवाद दिया कि वह आश्चर्य-भरी दृष्टि से उसकी ओर देखता रह गया।

काफ़ी पीकर प्रकाश होटल के टेलीफोन-केबिन में पहुँचा और नरेन्द्रकुमार से टेलीफोन पर बात करने लगा।

“सुनो, नरेन्द्र,” उसने कहा—“वह लड़की रिहसल करने जा रही है, जिसे मेरे कहने पर तुमने आज रक्खा है।”

“उसे कोई खास पार्ट तो नहीं दिलाना चाहते ?” चिन्तित स्वर में डायरेक्टर ने पूछा।

“क्या अच्छा सवाल है ! अरे, भाई, अभी तक कभी वह मंच पर नहीं उतरी है, और मैं समझता हूँ कि उसे शायद अभिनय का कुछ भी ज्ञान नहीं है....। मैं सिर्फ़ यह चाहता हूँ कि तुम यह सावधानी रखना कि कोई उससे छेड़खानी न कर पाये।”

“बहुत अच्छा, प्रकाश । तुम किक मत करो । मैं इस बात का पूरा खयाल रखूँगा ।”

“और, याग, उसे फटकारें मत सुनाना । बड़ी अभिनेत्रियाँ एक दिन में नहीं बनतीं, याद रहें । और सुनो, नरेन्द्र, उससे कह देना कि उसे रिहर्सल के लिए भी वेतन मिलेगा । रिहर्सल-वाला वेतन मैं अपनी जेब से दे दूँगा ।”

“बहुत ठीक ।”

रेस्तराँ में अपने स्थान पर लौटकर प्रकाश मदिरा पीने लगा । सारी कम्पनी के सामने वह घोषित कर चुका था कि अगले सप्ताह से पहले वह रिहर्सल में सम्मिलित नहीं होगा । अब उसे इस बात की चिन्ता थी कि वह किस बहाने आज फिर थियेटर जाय ।

७

वह दिन मीरा के लिए वास्तव में बड़ा शुभ दिवस था । जब वह घर पहुँची, तो उसे राजमोहन का एक पत्र मिला । उस पत्र में उसने लिखा था कि वे सम्पादक महोदय, जिन्होंने उसकी रचनाएँ स्वीकृत की हैं, बड़े नेक हैं और उससे मिलने को उत्सुक हैं; साढ़े आठ बजे रात के समय होटल डी लू में भोजन करने की बात है; ठीक समय पर उसे वहाँ पहुँच जाना चाहिए । लिफाफे में पाँच रुपये का एक नोट भी था । पत्र में यह आदेश भी था कि उसे जिस चीज की ज़रूरत हो, उस रकम से खरीद ले । मीरा की आँखें सजल हो गईं । नोट उसने पर्स में रख लिया । राजमोहन की यह भेंट वह स्वीकार करेगी ? नहीं, उसकी ज़रूरतें उसकी ज़रूरतों से कहीं ज़्यादा हैं ।

उसके द्रुङ्क में दो रेशमा साड़ियाँ थीं । उनमें से एक काफी अच्छी थी । उसको जोड़ का एक जम्पर भी था, लेकिन उसे कई स्थानों पर कीड़ों ने खा डाला था । सुई और रेशमी धागा लेकर

मीरा उसे ठीक करने लगी। सीने-पिरोने के कार्य में वह बड़ी कुशल थी। जम्पर बिलकुल ठीक हो गया। और जब नियत समय से कुछ पहले वह उस होटल में उपस्थित हुई और उन दोनों की ओर बढ़ी, तो राजमोहन को बड़ा आश्चर्य हुआ; क्योंकि उसका खयाल था कि वह जम्पर किसी तरह पहना नहीं जा सकता। सम्पादक महोदय मन्त्रमुग्ध दृष्टि से मीरा की ओर देखते रह गये। उन्हें ऐसा लगा जैसे उस असुन्दर स्थान में सौन्दर्य का साम्राज्य आ गया हो।

“राजू!” राजमोहन की बाँह में बाँह डालकर उसने कहा—
“तुम्हारा पत्र पाकर मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई थी। देखो, बिलकुल ठीक समय पर आई हूँ। आप मिस्टर गुप्त हैं न?”

“मिस्टर काशीराम गुप्त—मिस मीरा कपूर,” राजमोहन ने कहा—“ऊपर चलें न? वहाँ ज्यादा अच्छा रहेगा।”

वे सीढ़ियों की ओर बढ़े। आकृति और वेष-भूषा के विचार से मिस्टर गुप्त का व्यक्तित्व कुछ विशेष प्रभाव-पूर्ण नहीं था। आप नाटे और दुबले-पतले थे और आपकी आँखें कमजोर थीं। आपके वस्त्र भी काफी अच्छे और साफ नहीं थे। लेकिन इन बातों पर मीरा का ध्यान नहीं गया। उसकी दृष्टि में आप किसी अद्भुत व्यक्ति से कम नहीं थे; क्योंकि राजमोहन की कुछ रचनाएँ लेकर आपने उसे उन्नति के पथ पर अप्रसर होने का अवसर दिया था। उसे तो केवल उनकी नेकी से काम था।

“राजमोहन ने मुझे बतलाया है,” मीरा ने कहा—“कि आप एक नई पत्रिका निकाल रहे हैं और आपने इनकी कुछ रचनाएँ स्वीकार की हैं। यह जानकर मुझे बेहद खुशी हुई है। शायद आप इसे पक्षपात समझेंगे, लेकिन मेरी तो यह निश्चित सम्मति है कि इनकी कहानियाँ बड़ी सुन्दर हैं।”

“बहुत काफी अच्छी हैं।” मिस्टर गुप्त ने कहा—“चल पाने से पहले दौड़ने की कोशिश अगर ये नहीं करेंगे, तो बहुत अच्छे रहेंगे।”

“आपका मतलब क्या यह है कि इनका हौसला जरूरत से कुछ ज्यादा है ?”

ऊपर पहुँचकर वे एक मेज़ के सामने बैठ गये। दावत मिस्टर गुप्त दे रहे थे, इसलिए आपने मीरा और राजमोहन के बीच में स्थान ग्रहण किया।

“मेरा मतलब यह है, मिस कपूर,” मिस्टर गुप्त ने कहा— “कि ऐसी चीज़ें लिखने से कोई लाभ नहीं है जो उन लोगों की समझ में न आ सके जिनके लिए वे लिखी जा रही हों। विषय का चुनाव करते समय इन्हें यह बात ध्यान में रखनी चाहिए कि इन्हें जन-साधारण के लिए लिखना है। ये ऐसा करेंगे तो बहुतों से अच्छे रहेंगे। इस समय उच्च कोटि की जासूसी कहानियों की बड़ी माँग है। अगर मिस्टर वर्मा जासूसी कहानियाँ लिखें तो बहुतों से बाज़ी मार ले जायँ।”

“कुछ समय के लिए अपना उपन्यास रोककर मैं एक जासूसी कहानी लिखने जा रहा हूँ,” निश्चय-सूचक स्वर में राजमोहन ने कहा।

मीरा हृदय में उठते हुए नैराश्य के भाव को दाबने की कोशिश करने लगी।

“आपकी पत्रिका का नाम क्या है, मिस्टर गुप्त ?” उसने पूछा।

“उसका नाम है ‘मेरी पत्रिका’। इससे बढ़िया नाम नहीं सूझा, इसलिए इसे ही रख लिया। साइज़, कागज़ और चित्रों की तड़क-भड़क आपको उसमें नहीं मिलेगी। सामान्य ढङ्ग की सामान्य चीज़ निकालने का विचार है, मिस कपूर। आप जानती हैं, यह सामान्यता का युग है।”

“राजमोहन की कहानियाँ तो सामान्य कोटि की नहीं हैं ?” खेद-सूचक स्वर में मीरा ने कहा।

“सामान्य कोटि से वे कुछ आगे बढ़ी हुई हैं, इसमें सन्देह नहीं। उनकी भाषा जरूर कहीं-कहीं शिथिल और भद्दी है। प्रकृ पढ़ते समय सारे दोष दूर कर दिये जायँगे। यों चोज़ काफ़ी अच्छी हैं.....आप क्या करती हैं, मिस कपूर ?”

तब मीरा ने अपना लक्ष्य-वेधी बाण छोड़ा।

“मैं अभिनेत्री हूँ।” उसने घोषित किया।

“अभिनेत्री ?” किञ्चित् आश्चर्य से मिस्टर गुप्त ने दोहराया।

“अभिनेत्री ?” अत्यधिक आश्चर्य से राजमोहन ने पूछा।

“आज ही एक नाटक-कम्पनी में शामिल हुई हूँ।” मीरा ने बतलाया—“मिस्टर प्रकाशनारायण हुक्कू का जो नाटक नैशनल थियेटर में खेला जानेवाला है, उसमें मैं पार्ट करूँगी।”

“यह क्या कह रही हो ?” राजमोहन ने कौतूहल-पूर्ण स्वर में पूछा।

“बिलकुल ठीक कह रही हूँ। इसमें आश्चर्य की क्या बात है ? पिछले सप्ताह तुम्हारा सौभाग्य जगा, आज मेरा। अब हमें रामलाल से ईर्ष्या करने की जरूरत नहीं। मैं बहुत खुश हूँ।”

कुर्सी पर पीछे की ओर उठँगकर वह सङ्गीत सुनने लगी। अपार आनन्द की ज्योति उसके चेहरे पर झलक रही थी, आँखों में चमक रही थी। उसकी ओर देखते-देखते सहसा राजमोहन का ज्ञात हुआ कि मीरा अनुपम सुन्दरी है। ईर्ष्या की एक लहर उसके हृदय में उमड़ पड़ी।

“नैशनल थियेटर में तुम्हारी पहुँच कैसे हो गई ?” आकुल स्वर में उसने पूछा—“बतलाओ, मीरा।”

“रिहर्सल के लिए कुछ लोग अन्दर जा रहे थे,” आगे झुककर मीरा ने कहा—“उनके पीछे-पीछे मैं भी थियेटर के भीतर चली गई। बिलकुल संयोगवश ऐसा हुआ; क्योंकि मैं तो वास्तव में एक कार्यालय में अर्जी देने जा रही थी। सब

लोग बाद में कहते थे कि यह मेरी खुशकिस्मती थी कि डोर-कीपर उस समय दूसरी ओर देख रहा था, वरना वह किसी तरह मुझे अन्दर न जाने देता। खैर, मैं किसी तरह मंच के विंग में पहुँचकर रिहर्सल देखने लगी। एक महाशय पास ही खड़े थे, और मुझे ऐसा जान पड़ा कि उस खेल से उनका कुछ सम्बन्ध है। मैंने उनसे पूछा कि क्या मुझे वहाँ जगह मिल सकती है। पहले तो उन्होंने मेरी तरफ इस तरह देखा जैसे मुझे पागल समझ रहे हों। लेकिन बाद में मुझसे ज़रा देर तक बातें कर लेने के बाद उन्होंने डायरेक्टर को बुलाया और उनसे अनुरोध किया कि वे मुझे भी कम्पनी में ले लें। और, मैं ले ली गई। लेकिन किस्सा यहीं खतम नहीं होता।”

“बाक़ी हाल भी सुना दो।” राजमोहन ने ज़िद की।

“वे दयावान् महाशय उस नाटक के लेखक स्वयं मिस्टर प्रकाशनारायण हुक्कू निकले,” विजय-गर्व-पूर्ण स्वर में मीरा ने कहा—“और फिर उन्होंने मुझे रेस्तराँ डो लू में लंच की दावत दी।”

राजमोहन के चेहरे पर अप्रसन्नता की छाया दौड़ गई।

“लंच की दावत दी!” उसने दोहराया—“एक अजनबी का निमंत्रण तुमने स्वीकार कर लिया?”

मीरा हँसने लगी। लेकिन राजमोहन की अप्रसन्नता दूर होने के बजाय बढ़ती ही गई।

“मुँह न बनाओ, राजू।” मीरा ने मुस्कराते हुए कहा—“यह मत भूलो कि उन्हीं की बदौलत मुझे थियेटर में नौकरी मिली है। वे बड़े अच्छे आदमी हैं। रेस्तराँ में उस समय अनेक प्रतिष्ठित व्यक्ति उपस्थित थे। एक मोटे नवयुवक से उन्होंने मेरा परिचय कराया। वह नवयुवक एक राजकुमार है और हमारे खेल में रुपये लगा रहा है। और जब मैं होटल से चली आई, तो उन्होंने डायरेक्टर को टेलीफोन किया और उनसे अनुरोध किया

कि जहाँ तक हो सके वे मेरी सहायता करें। मुझे ६० प्रति-मास मिलेंगे, और काम भी कठिन नहीं है।”

“बड़ा सुन्दर आरम्भ है।” सहानुभूति-सूचक स्वर में सम्पादक महोदय ने कहा।

“मिस्टर हुक्कू से बाद में भी भेट हुई थी?” राजमोहन ने पूछा।

“नहीं। थियेटर में मुझे मालूम हुआ कि अगले सप्ताह से पहले वे किसी रिहर्सल में नहीं आयेंगे। मैं तो समझती थी कि तुम्हें बड़ी खुशी होगी, राजू।” अनुनय-भरी दृष्टि से वह राजमोहन की ओर देखने लगी।

“तुम्हें उनका निमन्त्रण स्वीकार नहीं करना चाहिए था।” अप्रसन्नतासूचक स्वर में राजमोहन ने कहा।

“क्यों नहीं स्वीकार करना चाहिए था?” मीरा ने विरोध किया—“उन्होंने मेरे साथ बड़ी नेकी की, और वे शरीर आदमी मालूम हुए। इसलिए उनका निमन्त्रण स्वीकार कर लेने में मुझे कोई हर्ज नहीं मालूम हुआ। लंच के समय भी उन्होंने मेरे साथ बड़ी भलमनसाहत का बर्ताव किया। खैर, जो हुआ सो हुआ। तुम्हारा अब नाराज होना बिलकुल फिजूल है।”

“मैं जरा भी नाराज नहीं हूँ।” राजमोहन ने दृढ़तापूर्वक उत्तर दिया।

दावत चलती रही, किन्तु उसका आकर्षण जाता रहा। मीरा के मन में बार-बार यह प्रश्न उठ रहा था कि क्या वह वास्तव में उसके जीवन की सुन्दरतम रात है। निर्धनता के पंजे से छूटकर वे दोनों एकाएक समृद्धि के साम्राज्य में पहुँच गये हैं। वे उस सहृदय सम्पादक के साथ भोजन कर रहे हैं जिसके हाथ में राज-मोहन को प्रसिद्ध कर सकने की शक्ति है। सुन्दर, मधुर संगीत की सुकोमल लहरियाँ प्राणों को स्पर्श कर रही हैं। एक नवीन

तथा आकर्षक पेशे में अपनी योग्यताएँ प्रदर्शित करने का आज ही एक स्वर्ण अवसर उसके हाथ आया है। उन दोनों को खुश होना चाहिए—दिल खोलकर, जी भरकर, खुशियाँ मनानी चाहिए। लेकिन इसके बजाय हो क्या रहा है? खुश होने की उसका चेष्टाएँ राजमोहन की गम्भीर निःस्तब्धता के कारण असफल हुई जा रही हैं। मदिरा का गिलास तीसरी बार खाली कर चुकने के बाद राजमोहन कुछ खुश नज़र आया। दौरे चलते रहे। एक बोतल खाली हो गई, दूसरी मँगाई गई। मीरा चिन्तित दृष्टि से देखती रही।

“यहाँ से तुम्हारे साथ चल सकती हूँ, राजू?” उसने मुस्कराते हुए पूछा—“ज़रा तुम्हारा कमरा ठीक करना है।”

राजमोहन ने हिचकिचाकर अपने मेज़बान की ओर देखा।

“आज नहीं, मीरा।” उसने उत्तर दिया—“मिस्टर गुप्त के साथ मुझे एक क़ब्र जाना है।”

“क़ब्र?”

“वह साहित्यिकों का एक छोटा-सा क़ब्र है।” मिस्टर गुप्त ने कहा—“मैंने सोचा कि उसमें शामिल हो जाने से मिस्टर वर्मा को लाभ होगा। मैं क़ब्र की कार्य-कारिणी समिति का एक सदस्य हूँ। बड़ी आसानी से ये उस क़ब्र के सदस्य बन सकेंगे।”

“बहुत ठीक।” मीरा ने कहा—“इनके लिए यह बेशक बड़ी अच्छी बात होगी। मैं यह ज़रूर चाहती थी कि आज—ख़ैर, जाने दीजिए इस बात को। इन्हें अपने साथ ज़रूर ले जाइए, मिस्टर गुप्त। अन्य लेखकों से मिलने-जुलने से इन्हें अवश्य लाभ होगा।”

“अगर चाहो तो मैं पहले तुम्हें घर पहुँचा दूँ,” राजमोहन ने दुबिधा-सूचक स्वर में कहा।

“नहीं, इसकी ज़रूरत नहीं।” सिर हिलाकर मीरा ने कहा—“तुम मिस्टर गुप्त के साथ क़ब्र जाओ। जल्दी जाओगे तो बहुत

देर तक तुम्हें जागना न पड़ेगा। अपने कमरे का कुंजी मुझे दे दो। कमरे की सफाई कर चुकने के बाद मैं कुंजी दरवाजे के बाहरवाली चटाई के नीचे रख दूँगी।”

बाद में राजमोहन के कमरे में पहुँचकर मीरा ने भाड़ से कर्श साफ किया, फटे मोझे सिये, कमीजों में बटन लगाये और इधर-उधर बिखरी हुई चीजें तरतीब से रक्खीं। फिर उसने मधुर भावों से भरा हुआ एक छोटा-सा पत्र लिखा, और लिफाफे में वह नोट भी रख दिया जो राजमोहन ने उसके पास खर्च के लिए भेजा था।

बाँधवाले मार्ग से वह अपने निवासस्थान की ओर चली जा रही थी। उसके मस्तिष्क में उस दिन की स्मृतियाँ जाग उठीं, जब कालीनगर पहुँचने के बाद अपने साथियों के साथ वह नगर की सैर करने निकली थी। बड़ा मधुर समीर बह रहा था। तबीयत हरी हो गई। हृदय में स्वाभाविक उत्साह फिर उमड़ने लगा। राजमोहन की ईर्ष्या बिलकुल स्वाभाविक थी; शीघ्र ही दूर हो जायगी। उसके कार्य के लिए यह अत्यन्त आवश्यक है कि वह मिस्टर गुप्त से घनिष्ठता बढ़ा ले। उस साहित्यिक क्लब का सदस्य हो जाना भी उसके लिए लाभदायक सिद्ध होगा। उसकी निराशा सर्वथा स्वार्थजनित है। हृदय की खटक बिलकुल गायब हो गई।

अपने कमरे में पहुँचकर, अच्छे कपड़े उतारकर, एक मामूली धोती और जम्पर पहनकर, वह बिस्तरे पर लेट गई और रेस्तराँ में सुनी हुई एक चीज गुनगुनाने लगी।

८

दरवाजा खुला। बाबू श्यामलाल वर्मा ने कमरे में प्रवेश किया, और अधिकार के आसन पर रामलाल को देखकर आश्चर्य से चकित रह गये। बीस वर्ष से यह कम्पनी आपकी सबसे बड़ी ग्राहक थी। इसके प्रतिनिधि से भेंट करने के लिए आप कालीनगर आये थे।

“अरे रामलाल !”

इससे अधिक वे कुछ नहीं कह सके । मेज़ के सामने अपनी कुर्सी पर रामलाल बड़ी शान से बैठा हुआ था । एक हाथ में हैट और दूसरे में छाता लिये हुए बाबू साहब उसकी ओर आँखें फाड़े देखते रह गये ।

“हाँ, मैं रामलाल ही हूँ ।” गर्व से सिर हिलाकर रामलाल ने कहा—“बैठिए, श्रीमान् । यहाँ मुझे देखकर आपको कुछ धक्का लगा ?”

“बेशक धक्का लगा ।” हैट और छाता फर्श पर रखकर और एक कुर्सी पर बैठकर बाबू साहब ने उत्तर दिया—“मैं नहीं जानता था कि तुम इस कम्पनी में नौकर हो, और इस कमरे में बैठते हो जहाँ आम तौर पर कम्पनी के मालिक लोग मेरा स्वागत करते थे ।”

“कालीनगर आने के कुछ दिन बाद मैंने इन लोगों को अपनी संवाँएँ भेट कीं ।” रामलाल ने बतलाया—“१००) मासिक वेतन पर इन लोगों ने मुझे अपने यहाँ रखना स्वीकार किया । इस बीच में तीन बार मेरे वेतन में थोड़ी थोड़ी वृद्धि हुई और हाल में मुझे एक काफी बड़ी तरक्की मिली । अगर मैं यहाँ काम करता रहूँगा, तो साल भर के अन्दर इस कम्पनी का एक हिस्सेदार बन जाऊँगा ।”

श्यामलाल उसकी ओर गम्भीर दृष्टि से देखते रहे ।

“मुझे इसमें ज़रा भी सन्देह नहीं है कि तुम सत्य कह रहे हो ।” उन्होंने कहा—“तुम्हारी योग्यताओं में मुझे कभी सन्देह नहीं रहा ।”

“वज़ीराबाद में भी नहीं था ?”

“वहाँ भी नहीं था ।”

“बड़े खेद की बात है कि आपने वहाँ मुझमें विश्वास प्रकट नहीं किया।” रामलाल ने कहा—“साल भर पहले मैंने आपको जो सलाहें दी थीं उन्हें अगर आप मान लेंते, तो वर्मा लेदर फैक्टरी की दशा अब तक बहुत सुधर गई होती।”

“यह तुम्हारी राय है।”

“मेरी निश्चित राय है। खैर, यह बहस बेमतलब है। अब काम की बात की जानी चाहिए।”

“क्या तुम्हीं से बात करनी होगी?” बाबू साहब ने पूछा।

“हाँ, मुझी से करनी होगी।” सुदृढ़ स्वर में रामलाल ने उत्तर दिया—“कम्पना के स्वामियों ने मुझे आपसे बात करने का अधिकार दिया है। मिस्टर स्टोन शिकार खेलने गये हैं, मिस्टर दारू-वाला अपनी सास का अन्तिम दर्शन करने गये हैं। बाक़ी यहाँ जो लोग हैं वे साधारण कर्मचारी हैं। इसके अलावा चमड़े के सामानों का सम्बन्ध मेरे विभाग से है, और मैं वज़ीराबाद के मामले की सारी बातें बहुत अच्छी तरह जानता हूँ।”

“तो पहले तुम्हीं शुरू करा।” श्यामलाल ने कहा—“जो कुछ कहना हो, कह डालो।

कंधे सीधे करके रामलाल मेज़ पर झुका।

“देखिए,” उसने कहा—“मैं चाहता हूँ कि यह बात आप अपने ध्यान में अच्छी तरह चढ़ा लें। आप बड़े सख्त आदमी हैं, और अपने भेद छिपाये रखने की आपने पूरी कोशिश की है, लेकिन आपके कारख़ाने में मैंने आँख-कान बन्द करके काम नहीं किया था। मैं अच्छी तरह जानता था कि आपका व्यवसाय कैसा चल रहा है। आपकी स्थिति का मुझे पूरा ध्यान है।”

श्यामलाल की घनी भौंहें एक-दूसरे के कुछ और निकट आ गईं। इसके अतिरिक्त उनके चेहरे पर कोई परिवर्तन दृष्टिगोचर नहीं हुआ।

“तुम्हारी समझ में मेरी वर्तमान स्थिति क्या है ?” उन्होंने पूछा ।

“बतलाता हूँ, सुनिए । लोगों का यह खयाल गलत है कि आप अमीर हैं, आपकी आर्थिक दशा बड़ी खराब है । मैं जानता हूँ कि आप अपनी फैक्टरी बड़े रद्दी तरीकों पर चलाते रहे हैं । वर्षों से आपने कोई नई मशीन नहीं खरीदी । नवीन साधनों से लाभ उठाने के विषय में वज्जोराबाद की अन्य फैक्टरियाँ आपसे बहुत आगे बढ़ गई हैं । आपके पास ज़मीन बहुत काफी है, लेकिन आप उसके नाम-मात्र के स्वामी हैं, क्योंकि वह सबकी सब रेहन है । वज्जोराबाद में बहुतरे लोग आपको करोड़पति समझते हैं, लेकिन आपका बैंक उनके इस कथन का समर्थन नहीं कर सकता ।”

श्यामलाल गुम-सुम बैठे रह ।

“अब आप समझ गये होंगे,” रामलाल कहता गया—
“कि आप मेरी आँखों में धूल नहीं झोंक सकते । आप चाहें तो हम आपसे सौदा कर सकते हैं, लेकिन साफ़ सौदा करना होगा । भाँय-भाँय करने से काम नहीं चलेगा ।”

“तुम्हारा प्रस्ताव क्या है ?” उनके स्वर में किंचित् दीनता थी ।

“हमारा मूलधन इस समय बहुत बढ़ गया है । उसका कुछ अंश हम उन चीज़ों के बनाने में लगाना चाहते हैं जो अभी तक हम आपसे खरीदते रहे हैं । आपकी फैक्टरी के लिए हम आपको दो लाख रुपये दे सकते हैं । पचास हजार का चेक आपको अभी मिल सकता है, बाकी रकम डेढ़ महीने के बाद मिलेगी ।”

“दो लाख !” श्यामलाल ने ताते की तरह दोहराया ।

“इससे अधिक एक पैसा भी हम नहीं दे सकते,” रामलाल ने निश्चय-सूचक स्वर में कहा ।

“इस समय मेरा इरादा मोल-भाव करने का नहीं है,” दो क्षण विचार करने के बाद श्यामलाल ने कहा—“लेकिन मैं यह ज़रूर

जानना चाहता हूँ कि बिना मेरे माल की जाँच किये और मेरी मशीनों के मूल्य का अन्दाज़ लगाये तुम दो लाख देने की बात कैसे कह सके ?”

उनकी स्थिर दृष्टि रामलाल को विचलित नहीं कर सकी ।

“चार वर्ष तक मैं आपके कारखाने में काम कर चुका हूँ,” रामलाल ने उत्तर दिया—“आपकी प्रत्येक मशीन का पूरा-पूरा हाल मुझे मालूम है । मैं जानता हूँ कि क्या-क्या और कितना-कितना माल आपकी फ़ैक्टरी में आम तौर पर रहता है । ख़ैर, इससे कोई बहस नहीं । कम्पनी की ओर से मैं आपको आफ़र दे चुका । उसे मंज़ूर या नामंज़ूर करना आपके मन की बात है ।”

“धार्मिक सिद्धान्तों के अनुसार पूरी ईमानदारी से मैंने तुम्हें पाला-पोसा है और तुम्हें चरित्रवान् बनाने की चेष्टा की है,” गम्भीर स्वर में श्यामलाल ने कहा—“फिर भी तुम मुझसे भूठ बोल रहे हो ।”

“भूठ बोल रहा हूँ ?” क्रोध-पूर्ण स्वर में रामलाल ने कहा ।

“तीन सप्ताह पहले तुम वज़ीराबाद गये थे । अभी तीन दिन पहले भी तुम वहाँ मौजूद थे । मैंने अपनी आँखों से अपने कुर्क, रसिकचन्द्र, को उस होटल से निकलते देखा था जहाँ तुम ठहरे हुए थे । जिन आँकड़ों के अनुसार तुमने अपना आफ़र निश्चित किया है वे तुम्हें उसी से प्राप्त हुए हैं ।”

“अच्छा, आप ताड़ गये,” निर्लज्जता से मुस्कराते हुए रामलाल ने कहा—“ख़ैर, कोई बात नहीं । व्यवसाय में सब कुछ उचित है । मेरे और रसिकचन्द्र के आँकड़ों में कुछ विशेष अन्तर नहीं था । केवल माल के मूल्य में चार-पाँच हज़ार का फ़र्क़ था ।”

“तुमने मेरे सब से पुराने और विश्वसनीय कुर्क का रिशवत दी ।” कठोर स्वर में श्यामलाल ने कहा ।

“उसका ईमान बिगाड़ने का उत्तरदायित्व वास्तव में मेरे ऊपर नहीं आपके ऊपर है। बीस साल से वह आपके कारखाने में काम कर रहा है, लेकिन अब भी आप उसे केवल ४५ प्रतिमास वेतन दे रहे हैं। इतनी उम्र में इतना कम वेतन पानेवाले आदमी का ईमान अगर बिगड़ गया तो इसमें उसका इतना दोष नहीं, जितना उसके मालिक का। जो काम आप हम लोगों से लेते थे, उसके लिए भी ठीक वेतन नहीं देते थे। हम लोगों के साथ आपका व्यवहार सर्वथा कट्टर और विचारहीन था। लेकिन आपकी कट्टरता और विचारहीनता से मेरी कोई भारी हानि नहीं हुई—बस इतना ही हुआ है कि धार्मिकता से मुझे बड़ी चिढ़ हो गई है। मीरा और राजमोहन की कितनी हानि हुई है? इसके बारे में मैं आपसे केवल इतना ही कहना चाहता हूँ कि आगे जब कभी आप पापियों के उद्धार के लिए प्रार्थना करें, तो उन दोनों का भी जरूर याद कर लिया करें।”

श्यामलाल आगे झुक पड़े। इतनी देर में पहली बार उनके चेहरे पर विकलता के चिह्न दृष्टिगोचर हुए।

“तुम्हारा मलतत्र क्या है?” चिन्तित स्वर में उन्होंने पूछा।

“केवल इतना ही कि राजमोहन को मैंने कल रात शराब के नशे में बदमस्त देखा था। बस खैरियत इतनी ही हुई कि वह गिरफ्तार नहीं हुआ।”

“तुमने उसकी मदद नहीं की?”

“मदद! मैं क्यों उसकी मदद करता?”

“और मीरा?”

रामलाल का मत्था सिकुड़ गया।

“वही हुआ जो होना स्वाभाविक था। वह सुन्दर है, उसके पास पैसा नहीं, एक शराबी लड़के के सिवाय कोई उसकी देख-रेख करनेवाला नहीं है। परसें मैंने उसे कई आवारा लड़कियों के

साथ नेशनल थियेटर से निकलते देखा था। वह शायद अभिनेत्री हो गई है, और थियेटरों का वातावरण कैसा होता है यह आपसे छिपा नहीं है। अब आप खुद सोचें कि हम लोगों के ऊपर आप धार्मिकता का रंग चढ़ाने की जो कोशिशें करते रहते थे, उनका क्या नतीजा हुआ है।”

श्यामलाल विचलित नहीं हुए। गाम्भीर्य फिर उनके चेहरे पर व्यक्त हो गया।

“जो कुछ मैंने तुम लोगों के लिए किया वह अपने विचारों के अनुसार उचित ही किया।” शान्त स्वर में उन्होंने कहा—“एक ज़माने से जैसा जीवन मैं व्यतीत करता आ रहा था, वैसे ही जीवन का उपदेश तुम तीनों को देता था। मैं तुम तीनों में राज-मोहन को सबसे अधिक निर्बल समझता था और शायद उसकी कुछ और मदद करता अगर...”

“अगर क्या?”

“अगर वज़ीराबाद से आते समय उसने चोरी न की होती,” खेद-सूचक स्वर में श्यामलाल ने कहा—“किसी बहाने से वह फ़ैक्टरी में गया और वहाँ मेरे ५०० चुरा लिये।”

कई क्षणों तक निःसंवादिता रही। रामलाल मेज़ पकड़े हुए स्थिर बैठा रहा।

“लेकिन आपका यह मालूम कैसे हुआ?” उसने पूछा।

“मैं उस समय फ़ैक्टरी में मौजूद था, जब वह वहाँ गया था।”

“५०० चुरा लिये! आपने उसे छोड़ क्यों दिया?”

“यह मेरी भूल थी।” उन्होंने स्वीकार किया—“ख़ैर, उस मामले से तुम्हें कोई मतलब नहीं। अब हमें फिर मतलब की बात करनी चाहिए।”

“आपकी फ़ैक्टरी के लिए हम दो लाख रुपये दे सकते हैं।”

“मुझे मंजर है।”

रामलाल को कुछ आश्चर्य हुआ ।

“तो आप अपनी फैक्टरी बेच देने को तैयार हैं ?”

“बेशक । मुआहदे का मसविदा तैयार कर लो और मुझे पचास हजार का चेक दे दो ।”

रामलाल ने खजानाची को बुलाया । मामला तय हो गया । चेक सावधानी से जेब में रखकर श्यामलाल उठ खड़े हुए । खजानाची चला गया था ।

“एक बात बतलाइए ।” कुर्सी पर पीछे की ओर उठगकर रामलाल ने कहा—“मुझे इससे कोई मतलब तो है नहीं, लेकिन कौतूहलवश पूछ रहा हूँ । यहाँ से दो लाख पा जाने पर क्या आपका सारा कर्ज चुकता हो जायगा ?”

श्यामलाल ने मुककर फर्श से हैट और छाता उठा लिया । एक हल्की सी मुस्कान उनके होठों पर व्यक्त हो गई ।

“हाँ, अब शायद मेरे कर्ज का भुगतान हो जायगा और तुम्हें एक दिवालिये का रिश्तेदार कहलाने की बेइज्जती नहीं सहनी पड़ेगी ।.....मैं व्यास-आश्रम में ठहरा हुआ हूँ, और जब तक बयनामा अन्तिम रूप से तैयार नहीं हो जायगा तब तक वज्जिरा-बाद वापस नहीं जाऊँगा ।”

“यानी जब तक बाकी रकम अदा नहीं हो जायगी ?”

“बेशक ।”

“जितनी जल्दी हो सकेगा, सारी कार्रवाई पूरी कर दी जायगी,” रामलाल ने आश्वासन दिया ।

श्यामलाल चुपचाप कमरे से बाहर हो गये । रामलाल बयनामे के मसविदे को बड़े ध्यान से मज्जा ले-लेकर पढ़ने लगा । उसके ओठों पर एक कुटिल मुस्कान नृत्य करने लगी । विजय-गर्व उसके चेहरे पर व्यक्त हो गया ।

उसी दिन आठ बजे रात के समय रामलाल उस महिला होस्टल में उपस्थित हुआ जहाँ मीरा अस्थायी रूप से रहती थी, और मीरा को अपने साथ लेकर एक शानदार रेस्तराँ में पहुँचा। अपने हैट और ओवरकोट एक सेवक को देकर, उसने सबसे अच्छे मेज़ का आर्डर दिया। अपनी कुर्सी पर बैठकर मीरा बड़ी प्रसन्नता से कमरे में दृष्टि दौड़ाने लगी।

“जानती हो मीरा, आज मेरे दफ़्तर में कौन सा हब मुझसे मिलने आये थे ?”

“नहीं।”

“बाबू श्यामलाल वर्मा।”

“चाचाजी ? हम लोगों की खोज-खबर लेने आये होंगे ? लेकिन यह कष्ट वे कैसे कर सकें ?”

“ऐसी उदारता का श्रेय उन्हें नहीं दिया जा सकता, मीरा,” रामलाल ने कहा—“उनसे मेरी भेंट भी केवल संयोगवश हुई। मेरे कार्यालय में वे अपने काम से आये थे। जानती हो, मैंने क्या किया ?”

“मैं क्या जानूँ ? बतलाओ।”

“मैंने उनकी फ़ैक्टरी कुल साज-सामान सहित खरीद ली।”

“अरे !”

“अपनी फ़ैक्टरी उन्होंने क्यों बेची ? बतलाओ।”

“मैं कैसे बतला सकती हूँ।”

“कर्ज़ अदा करने के लिए।”

मीरा के आश्चर्य की सीमा नहीं रही।

“यह पहली मेरी समझ में नहीं आ रही है।” मीरा ने चिन्तित स्वर में कहा—“मेरा तो खयाल था कि चाचाजी बड़े अमीर हैं।”

“मैं तो समझता हूँ कि उनके पास अब कुछ भी बाकी नहीं रह गया है,” रामलाल ने शान से कहा—“जब तक मैं उनकी

फैक्टरी में रहा, तब तक धरावर उनको ऐसी सलाहें देता रहा जिनके काम में लाने से फ़ैक्टरी उन्नति कर सकती थी, लेकिन उन्होंने कभी मेरी किसी बात पर कान नहीं दिया। उसी का यह नतीजा है।”

“बेचारे चाचाजी !” सहानुभूति-सूचक स्वर में मोरा बोली।

“हम फ़ैक्टरी का जोर्णोंद्वार करके उससे बहुत सा धन पदा करेंगे। शैमपियन पियो, मोरा। बड़े अच्छे क्रिस्म की शैमपियन है। मैं स्टोन, दारूवाला एंड कम्पनी का शीव्र ही हिस्सेदार बनने-वाला हूँ। उस आनेवाले समय की शुभ-कामना करो।”

मीरा ने हँसकर शैमपियन पी।

“तुम वास्तव में बड़े चतुर हो, रामू !” उसने कहा।

“मैं एक ढंग से चतुर हूँ, राजमोहन दूसरे ढंग से। राजमोहन अवास्तविक वस्तुओं के स्वप्न देखता है, और चूँकि उनके सम्बन्ध में कहानियाँ लिखता है, इसलिए समझता है कि वह सब लोगों से बड़ा है। तुम उसकी खुशामद करती हो, और प्रकट करती हो कि तुम्हें भी उन चोज़ा में विश्वास है। अगर वह कहानो-लेखन के द्वारा धन पैदा भी करने लगेगा तो भी कितना पा जायेगा। पैसे की हाय हाय उसके लिए हमेशा बनी रहेगी। मैंने इस सम्बन्ध में अच्छी तरह विचार किया है। अपनी ही बात ले लो। जब तुम कालानगर आई थीं, तो तुम जोवन को उसके वास्तविक रूप में देखती थीं। तुम जानती थीं कि तुम्हें क्या चाहिए। तुम सुन्दर वस्त्र चाहती थीं, बहुमूल्य आभूषण चाहती थीं, संगीत चाहती थीं, कला की अन्य कृतियाँ चाहती थीं, ऐश के अन्य सामान चाहती थीं और तुम्हारा वह सब चाहना उचित भी था। एक सुन्दरी का उन सब पर जन्मसिद्ध अधिकार होना चाहिए।”

वह रुककर उसे ध्यान से देखने लगा।

“तब ?” मोरा ने पूछा।

“राजमोहन तुम्हें वह सब कभी नहीं दे सकेगा। मैं दे सकता हूँ।”

मीरा विचलित नहीं हुई। सत्य का पता लगाने के लिए वह उसकी ओर कौतूहलपूर्ण दृष्टि से देखने लगी।

“राजमोहन मुझसे विवाह करना चाहता है। तुम तो नहीं चाहते?”

रामलाल विचारों में मग्न हो गया। विचित्र, अद्भुत संगीत की प्रतिध्वनियाँ उसके कानों में गूँजने लगीं, उसकी नपी-तुली दुनिया उसकी आँखों के सामने उलटने-पलटने लगी। लेकिन ज़रा देर में वह सँभल गया।

“विवाह तो मैं तुमसे नहीं करना चाहता,” उसने स्वीकार किया।

मीरा ने वीरतापूर्वक परिस्थिति का सामना किया।

“तब तुम मुझे चिढ़ाते क्यों हो?” उसने पूछा—“एक हद तक मैं तुमसे सहमत हूँ। पार्थिव वैभव शायद मुझे राजू के द्वारा प्राप्त नहीं हो सकेगा। जो चीज़ें मैं चाहती हूँ उन्हें न पाकर भी सन्तुष्ट रहने की मुझे कोशिश करनी होगी। लेकिन एक अन्य प्रकार का सुख तो मुझे अवश्य ही प्राप्त होगा।”

एक विचित्र भय सहसा उसके मन में उठ खड़ा हुआ। सम्भव है रामलाल ठीक कह रहा हो, और वह स्वयं गलती पर हो। सम्भव है जीवन भर के लिए उसे अभाव का वरण करना पड़े, और उसके बोझ के नीचे उसकी चिर-संचित आशाएँ, आकांक्षाएँ कुचलकर मर जायँ।

“हाल में तुम कौन सा काम करने लगी हो, यह तुमने मुझे नहीं बतलाया, मीरा,” रामलाल ने कहा—“लेकिन मैंने अनुमान लगा लिया है। इधर एक दिन संध्या के समय मैंने तुम्हें नैशनल थियेटर से निकलते देखा था।”

तब मीरा ने उसे थियेटर में अपने सम्मिलित होने की कथा सुना दी। रामलाल ने उसके चातुर्य की प्रशंसा का और उसका पूर्णतः अनुमोदन किया।

“तुम वास्तव में बड़ी खुशकिस्मत हो ! प्रकाशनारायण हुक्कू बड़े धुरंधर लेखक हैं। उनके नाटक महोनों चलते हैं। वह खेल कब शुरू होगा ?”

“बुधवार की रात को।”

“अब मेरे साथ फिर क्या भोजन करेंगी, मीरा ?”

“यह मैं नहीं कह सकती।”

“क्यों ? आज तुम्हारी पूरी खातिर करने की कोशिश क्या मैंने नहीं की ?”

“क्यों नहीं की ? जरूर की है, और इसके लिए मैं कृतज्ञ भी हूँ। लेकिन तुम्हारे साथ फिर आने में एक बात तो यह है कि राजू इसे पसंद नहीं करेंगे, और दूसरी बात—”

“वे रेस्तराँ के बाहर पटरी पर खड़े थे।”

“उसे जाने दो,” मीरा ने एकाएक कहा—“मैं बड़ी बेवकूफ हूँ, और बहुतों की बातों में भी नहीं आती। खर, देखा जायगा। नमस्कार !”

घर लौटते समय रास्ते भर रामलाल मीरा के सम्बन्ध की बातों पर गौर करता रहा। बड़ी चतुराई से वह उसे फँसाने की कोशिश कर रहा है, किन्तु वह वैसी ही चतुराई से बच निकलती है। इतना खर्च उसने उसके लिए किया, लेकिन उसे मिला क्या ? कुछ नहीं। यही समय वह उस महिला के निवासस्थान पर व्यतीत कर सकता था, जिसमें उसे मीरा से अधिक दिलचस्पी थी। फिर भी कतिपय विचित्र भावनाओं के वशीभूत होकर मीरा की ओर उसे बढ़ना ही पड़ता है। विचार करते-करते वह एक निर्णय पर पहुँचा।

“मीरा के पीछे पड़े रहने में कुछ लाभ नहीं।” घर पहुँचकर उसने निर्णय किया।

“रामलाल का निमन्त्रण अब मुझे कभी नहीं स्वीकार करना चाहिए।” अपने बिस्तरे पर लेटकर मीरा ने भी निश्चय किया।

६

उस रात को प्रकाशनारायण हुक्कू ने ग्रैंड होटल में भोज और नृत्य-पार्टी का आयोजन किया था। मीरा और राजमोहन भी निमन्त्रित थे। थियेटर से छुट्टी पाने के बाद मीरा राजमोहन के साथ एक टैक्सी पर सवार होकर ग्रैंड होटल पहुँची।

प्रकाश ने बड़ी प्रसन्नता से राजमोहन का स्वागत किया और अन्य मेहमानों से उसका परिचय कराया। फिर वह सब को उस बड़ी मेज के पास ले गया जो रेस्तराँ के मध्य में लगाई गई थी। मीरा और नायक तथा नायिका के पार्ट करनेवालों के अतिरिक्त थियेटर का कोई अन्य व्यक्ति निमन्त्रित नहीं था। लेकिन बीच-पचीस अन्य प्रतिष्ठित व्यक्ति निमन्त्रित थे। वे सब ऐसे लोग थे जिन्हें नाट्यकला से दिलचस्पी थी। मीरा उन सब से पहले ही परिचित हो चुकी थी। महाराजकुमार भीमसिंह ने मेज की उस ओर से मीरा का अभिवादन किया और राजमोहन की ओर कैतूहलपूर्ण दृष्टि से देखा।

“जान पड़ता है, बहुत लोगों से तुम्हारा परिचय हो गया है।” राजमोहन ने कहा।

“ये लोग अक्सर रिहर्सल के समय थियेटर में आते हैं,” मीरा ने कहा—“मिस्टर हुक्कू बड़े मिलनसार आदमी हैं, और तब से सबका परिचय कराने की उन्हें शक है। थियेटर का वातावरण बड़ा मैत्रीपूर्ण होता है, राजू। जब तुम्हारा नाटक खेला जायगा, तब तुम्हें यह बात अच्छी तरह मालूम हो जायगी।”

मीरा ने कोशिश की कि राजमोहन अपने दूसरी ओर बैठी हुई नवयुवती से बात-चीत करे। लेकिन राजमोहन को उस समय किसी से मेल-जोल बढ़ाने की इच्छा नहीं थी। वह मेज़बान महोदय की ओर देख रहा था, जो रह-रहकर झुक-झुककर मीरा से बात करने लगते थे।

कुछ देर के बाद वे दो-दो, तीन-तीन के समूह में मृत्यु करने के लिए नोचे जाने लगे। प्रकाश स्वयं मीरा और राजमोहन को नृत्य-गृह में लिवा ले गया।

“मिस कपूर से मुझे मालूम हुआ है कि आप भी लेखक हैं।” उसने मुस्कराकर राजमोहन से कहा।

“आशा तो करता हूँ कि एक दिन हो जाऊँगा,” राजमोहन ने कहा—“लेकिन अभी तो सफलता मुझसे काफी दूर है।”

“मिस्टर वर्मा की तीन कहानियाँ एक नई पत्रिका में निकलने-वाली हैं।” मीरा ने कहा।

“बड़ी खुशी की बात है! मैं समझता हूँ कि एक न एक दिन आप नाटक भी लिखेंगे।”

“मैंने एक नाटक लिखना शुरू कर दिया है।” राजमोहन ने कहा।

- प्रकाश हँसने लगा।

“अच्छा!” उसने कहा—“आप तो मुझसे बाज़ी मार ले गये। मैंने तो, साहब, सफल हो जाने के बहुत दिनों बाद नाटक लिखना शुरू किया था। अगर आपको कभी मदद की जरूरत हो तो मेरे पास आइएगा। मैं जब कॉलोनीगर आता हूँ, तो इसी होटल में ठहरता हूँ। लीजिए, बाल-रूम में पहुँच गये। अगर मैं मिस कपूर के साथ नाचूँ तो आपको कोई आपत्ति तो न होगी? हमारी मेज़ वह है। शैम्पियन चल रही है, और ये लड़कियाँ नाचने के लिए बेताब हैं।”

“नाचना मुझे बहुत कम आता है।” मुस्कराकर मीरा ने कहा।

“कोई परवा नहीं;” प्रकाश ने कहा—“चलो तो ।”

राजमोहन मेज़ के समीप गया, और सौजन्य प्रदर्शित करने के प्रयत्न करने लगा । किन्तु महिलाएँ एक-एक करके अपने अन्य मित्रों के साथ नृत्य करने के लिए चली गईं । अब राजमोहन के लिए यही बाक़ी रह गया कि वह चुपचाप बैठकर नृत्य देखे । उसे नृत्य-कला का यथेष्ट ज्ञान नहीं था, और उस समय नृत्य करने की उसे इच्छा भी नहीं थी । मीरा में नृत्य की स्वाभाविक योग्यता थी, और उस समय उसे अगाध आनन्द अनुभव हो रहा था । प्रकाश बार-बार उसके साथ नृत्य कर रहा था, उसे किसी तरह छोड़ता ही न था । राजमोहन चुपचाप बैठा पेग पर पेग चढ़ा रहा था । और ज्यों-ज्यों वह पी रहा था त्यों-त्यों उसके चेहरे का गाम्भीर्य बढ़ता जा रहा था । अनिर्वचनीय आनन्द की तरङ्गों में लहरें लेती हुई मीरा उधर से निकली, और तब सहसा उसे राजमोहन की याद आई । वह तुरन्त रुक गई ।

“मुझे अब माफ़ कोजिए, मिस्टर हुकू,” कामल स्वर में उसने कहा—“राजू अकेले बैठे हुए हैं ।”

“मुझे बड़ा खेद है, राजू, कि तुम अकेले ही बैठे रह गये,” राजमोहन के समीप जाकर उसने कहा—“चलो, नाचें । बड़ा मज़ा आ रहा है । ज़रा देर में तुम्हारी भिक्षक जाती रहेगी ।”

राजमोहन लड़खड़ाकर उठ खड़ा हुआ ।

“अब मैं घर जाऊँगा,” उसने कहा ।

मीरा ने घूमकर प्रकाश को ओर हाथ बढ़ाया ।

“अभी रुका, मिस कपूर,” प्रकाश ने कहा—“ऐसी क्या जल्दी है ? मेरे साथ अभी एक बार और नाचने का वादा कर चुकी हो । और लोग भी इन्तज़ार कर रहे हैं ।”

“मुझसे भी आप वादा कर चुकी हैं, मिस कपूर ।” समीप आकर भीम ने कहा ।

अन्य लोगों ने भी विरोध किया। किन्तु मीरा ने दृढ़तापूर्वक सिर हिलाकर इनकार कर दिया।

“मिस कपूर को अभी न ले जाइए, मिस्टर वर्मा।” प्रकाश ने राजमोहन की ओर मुड़कर अनुरोध किया।

“मिस कपूर जो चाहें करें,” एक कुरसी का सहारा लेकर राजमोहन ने उत्तर दिया—“मुझे काम है।”

“इन्हें जाने दो, मिस कपूर,” मीरा की ओर मुड़कर प्रकाश ने अनुनयपूर्ण स्वर में कहा—“मैं तुम्हें घर पहुँचा दूँगा।”

अस्वोक्ति-सूचक भाव से सिर हिलाकर मीरा हँसने लगी।

“माफ़ कीजिए, थक गई हूँ,” राजमोहन के हाथ में हाथ देकर उसने कहा—“नमस्कार ! चलो, चल, राजू।”

वे बिदा हुए। राजमोहन अपनी हैट और ओवरकोट लाने चला गया। मीरा लाउंज में रुकी खड़ी रहा। एक सेवक झपटकर उसके समीप आया और उसने उसके हाथ में एक कार्ड दे दिया। कार्ड पर पेन्सिल से लिखा था—

“उन्हें घर पहुँचाकर कृपया यहाँ वापस आना। तुम्हारे साथ एक बार और नाचने की बड़ी इच्छा है।—प्र० ना० हु०।”

मीरा ने कार्ड फाड़ डाला।

“जवाब की कोई ज़रूरत नहीं है,” उसने सेवक से कहा और दूसरी ओर मुड़ गई।

राजमोहन के साथ जब वह टैक्सी पर सवार हुई, तो सहसा उसे ज्ञात हुआ कि उस सुन्दर रात्रि का अद्भुत आनन्द उसके हृदय से पूर्णतः लुप्त हो चुका है। विकट गाम्भीर्य धारण किये, कोट की जेबों में हाथ डाले हुए, राजमोहन उसकी बगल में पैर फैलाये बैठा था।

“खूब आनन्द लूटा तुमने !” उसने कहा।

मीरा की स्वाभाविक मृदुलता सहसा कुंठित हो उठी। उसने देखा कि राजमोहन गहरे नशे में है, उसके बाल बिखर गये हैं, टाई मुड़ गई है, कपड़ों में शिकनें पड़ गई हैं और उसकी आवाज भारी हो गई है।

“अभी कुछ देर पहले तक तो मुझे বেশक बड़ा आनन्द मिल रहा था।” मीरा ने कहा।

“अगर ऐसे ही लोग तुम्हारे मित्र हैं,” राजमोहन ने कहा— “अगर ऐसे ही लोगों के साथ समय व्यतीत करने का निश्चय कर चुकी हो, तो मुझसे कोई मतलब क्यों रखती हो? उनमें से किसी का मैं नहीं जानता और न जानने की इच्छा ही रखता हूँ। मैं उनकी दावतों में शरीक नहीं होना चाहता, और तुम्हारे नाटक को तो घृणा की दृष्टि से देखता हूँ।”

“आज तुम सचमुच नशे में हो या यह मेरी गलतफहमी है?”

“सरासर गलतफहमी है! मुझे बड़ा आनन्द मिला, और मैं बेहद खुश हूँ!”

टैक्सी एकाएक रुक गई। मीरा ने आश्चर्य से बाहर झाँका।

“यह तो सेनगुप्त स्ट्रीट है, राजू! मुझे नहीं पहुँचाओगे क्या?”

“नहीं!” राजमोहन ने उत्तर दिया—“बेहतर यह होगा कि तुम प्रैण्ड होटल वापस जाओ और मिस्टर हुकू के साथ घण्टे-दो घण्टे और नाचो। यह लो टैक्सी का किराया।” वह टैक्सी का दरवाजा खोलने लगा।

“क्या सचमुच मुझे इस तरह छोड़ देने का इरादा है, राजू?”

“बेशक।” गाड़ी से उतरकर राजमोहन ने उत्तर दिया।

“इतने कठोर न बनो, राजू,” खिड़की से सिर निकालकर मीरा ने अनुनय की। “अगर तुम्हें आनन्द नहीं आया तो इसमें मेरा कोई दोष नहीं है। तुम्हें खुश करने की मैंने पूरी कोशिश

को, लेकिन तुम न जाने क्यों बराबर खिंचे रहे। लौट आओ, और मुझे होस्टल पहुँचा दो।”

अपने निवासस्थान के द्वार पर पहुँचकर, हाथ में कुंजी लिये हुए वह उसकी ओर मुड़ा।

“नमस्कार!” गम्भीर स्वर में उसने कहा और दरवाजा खोलकर वह अन्दर चला गया।

“कहाँ चलो, मिस साहबा?” ड्राइवर ने पूछा।

मीरा के हृदय में एकाएक क्रोध भड़क उठा।

“प्रीड होटल,” उसने हृदयसूचक स्वर में आदेश दिया।

प्रकाश की पार्टी पूरे जोश-खरोश से चल रही थी। नृत्य ज़ोरों पर था। लेकिन प्रकाश का जोश एकाएक ठण्डा पड़ गया। महाराजकुमार को बुलाकर वह अलग जा बैठा।

“कुछ अनमने दिखाई दे रहे हो, प्रकाश?” भीम ने कहा—“आज तो खेल अच्छा रहा। मुझे तो कोई भय नहीं है। मेरा खयाल है कि छः महीने तक आसानी से चलेगा।”

“भाड़ में जाय खेल!” प्रकाश ने चिढ़कर उत्तर दिया—“उसकी मुझे कोई चिन्ता नहीं है। दूसरी बातें मुझे तंग कर रही हैं।”

महाराजकुमार ने सिर हिलाकर सहानुभूति प्रकट की और वेटरों को एक बातल खेलने का इशारा किया।

“सबसे पहली बात यह है कि इन लड़कियों से मैं तंग आ गया हूँ।” प्रकाश ने कहा—“दूसरी बात यह है कि अब मुझे लक्ष्मीनगर जाना चाहिए, लेकिन हमारा नाटक आज ही शुरू हुआ है और उसे इस हालत में छोड़कर अभी यहाँ से जाना मैं मुनासिब नहीं समझता। और तीसरी बात यह है कि सब लोग कह रहे हैं कि कई छोटे-छोटे दृश्य नाटक से निकाल दिये जायँ। उनकी राय से मैं सहमत हूँ, लेकिन—।”

“लेकिन तुम मीरा को हटाना नहीं चाहते ?” भीम ने कहा—“अगर यह बात है, तो उसे किसी आवश्यक दृश्य में क्यों नहीं रख देते ? वह बड़ी सुन्दर है और खेल में रहने के योग्य है ।”

“ऐसा करने में मुझे बड़ी खुशी होती । लेकिन मुश्किल तो यह है कि उसे अभिनय-कला का ज़रा भी ज्ञान नहीं है । अभिनेत्री बनने के योग्य वह नहीं है । ६०) मासिक वह कभी पैदा नहीं कर सकी, और समझती है कि उसका यह नौकरी बराबर क़ायम रहेगी ।”

“तो उसकी सहायता कर सकने का कोई दूसरा उपाय नहीं है ?”

“उपाय क्या है ? मुफ़्त रुपये वह लेगी नहीं । रिहर्सल के वेतन के मामले में मुझे बड़ी परेशानी उठानी पड़ी । किसी ने उससे कह दिया कि रिहर्सल के लिए आम तौर पर वेतन नहीं मिलता । वह अजीब उत्तेजना की दशा में मेरे पास आई । बड़ी कठिनाई से मैंने उसे शान्त किया । उसके पास कुछ नहीं है और उस लौंडे के पास भी कुछ नहीं है जो आज उसके साथ आया था ।”

“बड़ा बदमिज़ाज लड़का है ।” भीम ने कहा—“मुझे वह ज़रा भी पसंद नहीं आया ।”

“गधा है ।” प्रकाश ने बड़े जोश से समर्थन किया—“मीरा के साथ मुझे नाचते देखकर जल उठा और बेचारी को इतनी जल्दी यहाँ से घसीट ले गया ।”

“मुमकिन है कि वह वापस आये ।” आशासूचक स्वर में भीम ने कहा—“तुमने उसके पास एक सन्देश भेजा था न ?”

“वह नहीं आयेगी, हर्गिज़ नहीं आयेगी । मैं सौ रुपये की शर्त बंदने के तैयार हूँ ।”

“मैं आसानी से बाज़ी जीत सकता हूँ, लेकिन यह बेईमानी होगी । उधर देखो !”

प्रकाश ने उस ओर दृष्टि डाली, और उछल पड़ा। मीरा कमरे के द्वार पर खड़ी हुई इधर-उधर दृष्टि दौड़ा रही थी। प्रकाश को इशारा करते देखकर वह उसकी ओर बढ़ी।

“आपकी सलाह मुझे माननी पड़ी।” मीरा ने मुस्कराकर कहा—“राजू को घर पहुँचाकर चली आ रही हूँ।”

प्रकाश का उत्साह पुनः जाग्रत हो उठा। नृत्य पर नृत्य हुए, भोज हुआ, शैमपियन के दौर चले। मीरा ने सब में भाग लिया लेकिन सावधानी से। अनेक व्यक्ति उसके साथ नृत्य करने को उत्सुक थे। उन सब के साथ उसने प्रसन्नता-पूर्वक नृत्य किया। अपने उस सङ्कल्प का उसने पूरी तरह पालन किया जो राजमोहन के निवासस्थान के द्वार से लौटते समय उसने अपने मन में किया था। वह खटक, वह वेदना दूर हो गई जो उसके हृदय में उभर आई थी। सब लोग उसे शरीर और नेत्र मालूम हुए। सङ्गीत और नृत्य का आनन्द भी कुछ कम न था। अबाध गति से वह उसकी तरङ्गों में बहने लगी। ऐसा ही था वह आनन्द और ऐसी ही थी वह सङ्गति जिसको एक जमाने से उसे लालसा थी। सब लोगों के लिए उसके हृदय में सद्भाव था। उसकी आँखें चमक रही थीं। उसके पैर जैसे हवा में उड़ रहे थे।

प्रकाश बार-बार उसके साथ नृत्य करता रहा। रात ढलती गई। मीरा को सहसा ज्ञात हुआ कि नृत्य-गृह में बहुत थोड़े लोग रह गये हैं। वह चौक पड़ी।

“बड़ी बेवकूफ हूँ मैं,” चिन्तित स्वर में उसने कहा—“करीब-करीब सब लोग चले गये, और मैं हूँ कि अभी तक यहाँ डटी हूँ। मुझे बहुत पहले ही चला जाना चाहिए था। खैर, जो हुआ सो हुआ। अब मैं फौरन जाऊँगी। कृपा करके मेरे लिए एक टैक्सी मँगावा दीजिए।”

प्रकाश हँस पड़ा।

“घबराओ नहीं,” उसने कहा—“मैं तुम्हें घर पहुँचा दूँगा। चलो चलो।”

हाल में पहुँचकर प्रकाश रुका।

“अपना कोट नहीं लोगी क्या?”

“कोट मेरे पास नहीं है।” मोरा ने उत्तर दिया—“आज पहली बार इस तरह की पार्टी में शरीक हुई हूँ और बिना कोट के आई हूँ, कैसी मजेदार बात है! लेकिन मुझे जो आनन्द मिला है उसे कभी भूलूँगी नहीं। सभी लोगों ने मेरे साथ बड़ा अच्छा बर्ताव किया, खास कर आपने।”

वे एक टैक्सी पर सवार हुए। टैक्सी चली। दोनों कई क्षण तक खामोश रहे। प्रकाश जब बोला तो उसकी आवाज़ कुछ अस्वाभाविक सी लगी।

“इस तरह का जीवन तुम्हारे लिए नहीं है,” उसने कहा—“तुम्हें इससे दूर ही रहना चाहिए था। क्या सचमुच तुम्हारा कोई ऐसा रिश्तदार नहीं है जो तुम्हारी देख-रेख कर सके?”

“चाचाजी के अलावा कोई नहीं है, और हम तीनों उनके पास से भाग आये।”

“उनका नाम क्या है?”

“बाबू श्यामलाल वर्मा और वे वज्जिराबाद में रहते हैं। आपने यह क्यों पूछा?”

“किसी दिन उनसे बात करूँगा। ऐसी खरी-खरी सुनाऊँगा कि हज़रत याद करेंगे।……अच्छा लो, तुम्हारा होस्टल आ गया। बड़ी भद्दी इमारत है।”

“सब लोग सो गये होंगे।” मोरा ने चिन्तित स्वर में कहा—“कै बजे हैं?”

“चार बजकर दस मिनट।”

मोरा का चेहरा फक हो गया।

“गजब हो गया ! यहाँ का नियम यह है कि साढ़े ग्यारह बजे के बाद कोई बाहर न रहे । मैंने इन लोगों को सूचना भी नहीं दी कि मुझे देर लगेगी ।”

“दरवाजे की कुंजी तुम्हारे पास नहीं है क्या ?”

“खूब याद दिलाया आपने ! कुंजी मेरे पास है । अब मैं किसी तरह अन्दर पहुँच जाऊँगी । नमस्कार ! पार्टी के लिए अनेक धन्यवाद !”

“धन्यवाद देने की कोई जरूरत नहीं । तुम्हीं से पार्टी की शोभा थी । अच्छा, अब जाओ । जब तक तुम अन्दर नहीं पहुँच जाओगी तब तक मैं रुका रहूँगा ।”

वह दरवाजे के समीप पहुँची, और दरवाजे में कुंजी लगाकर घुमाई । ताला तो खुल गया, लेकिन दरवाजा टस से मस नहीं हुआ । तब उसे ज्ञात हुआ कि दरवाजे की सिटकिनी चढ़ी हुई है । वह घबरा गई । उसने घंटी बजाई, कई बार बजाई । तब ऊपर की मंजिल की एक खिड़की खुली । मीरा ने सिर उठाकर ऊपर की ओर देखा ।

“कृपा करके दरवाजा खुलवा दीजिए, मिसेज़ राय,” मीरा ने अनु-श्लेष किया—“मैं एक पार्टी में गई थी । देर हो गई, माफ़ कीजिए ।”

मैट्रन ने संक्षेप में कुछ कहा । उसने जो कुछ कहा वह प्रकाश सुन नहीं सका और मीरा ने भी कभी किसी से उसका जिक्र नहीं किया । उसका सिर चक्कर खा गया, और क़रीब था कि वह फ़र्श पर गिर पड़े कि प्रकाश ने दौड़कर उसे सँभाल लिया । खिड़की बन्द हो गई ।

“इस होस्टल में अब मेरे लिए स्थान नहीं है ।” मीरा ने रुक-रुककर कहा—“जो कुछ उसने कहा वह आपने सुना तो नहीं ?”

“एक शब्द भी नहीं ।” प्रकाश ने आश्वासन दिया । “अच्छा देखो, मैं बात करता हूँ ।”

“नहीं, नहीं, हर्गिज नहीं।” उत्तेजनापूर्ण स्वर में मीरा ने विनती की—“अब यहाँ से चलिए। मैं राजमोहन के पास जा सकती हूँ। वे मेरे लिए कहीं कोई कमरा खोज देंगे।”

“उनका पता क्या है?”

उसने पता बतलाया। टैक्सी बाँध की ओर चली। वह चुपचाप बैठी थी। उसका चेहरा बिलकुल उतर गया था, और वह रह-रहकर कौप उठती थी। मूक व्यथा उसकी आँखों में झलक रही थी।

“राजमोहन के पास मैं नहीं जा सकती।” एकाएक उसने कहा—“कृपया गाड़ी रुकवाइए। मैं यहाँ उतरूँगी।”

“बेवकूफी की बात मत करो। यहाँ उतरकर क्या करोगी? क्या सड़कों और गलियों में मारी-मारी फिरोगी? शान्त होकर सोचो। क्या कोई और ऐसा नहीं है जिसके पास तुम जा सको?”

“नहीं, कोई और नहीं है,” मीरा ने उत्तर दिया—“मैं राजमोहन के पास जाती, लेकिन उनसे झगड़ा हो गया है। वे मुझे कभी क्षमा नहीं करेंगे।”

“अच्छा, सुनो।” दो क्षण चुप रहकर प्रकाश ने कहा—“तुम्हारी उम्र क्या है?”

“उन्नीस साल। क्यों?”

“मैं उनतालीस वर्ष का हूँ। मेरी ओर देखो। मेरा विश्वास कर सकती हो?”

“बेशक।” उसने तुरन्त उत्तर दिया।

वह मुस्कराया। कालीनगर और लक्ष्मीनगर में कितने ही ऐसे लोग थे जिन्हें उसके चरित्र के सम्बन्ध में सन्देह था। उसके कितने ही मित्र मीरा के उत्तर को मज्जाकृत समझते।

“अच्छी बात है।” उसने कहा—“चुपचाप बैठी रहो, चिन्ता मत करो। मैं अभी तुम्हारे ठहरने का प्रबन्ध कर दूँगा।”

उसने ड्राइवर को फिर आदेश दिया। ज़रा देर में वे फिर ग्रैंड होटल पहुँच गये। मीरा सिहर उठी, लेकिन उसने कोई प्रश्न नहीं किया। वह चुपचाप उतरी और प्रकाश के साथ चली। वे लिफ्ट के पास पहुँचे। प्रकाश ने घंटी बजाई। एक ऊँघता हुआ सेवक हाज़िर हुआ। लिफ्ट पर चढ़कर वे चौथी मंज़िल पर पहुँचे और एक गलियारे में बढ़े। मीरा का हृदय तेज़ी से धड़कने लगा। प्रकाश ने एक दरवाज़े का हैंडिल घमाया। दरवाज़ा खुला। वे एक छोटे से चौकोर हाल में पहुँचे। प्रकाश ने एक दूसरा हैंडिल घुमाया। एक छोटी सी बैठक सामने दिखाई देने लगी।

“तुम अन्दर जाओ, मीरा,” प्रकाश ने कहा—“मैं ज़रा मिसेज़ चटर्जी से बात कर लूँ। अगर ये बिगड़ें या चिल्लायें, तो डरना मत। बड़ी भली औरत हैं।”

मीरा चुपचाप बैठक में चली गई। किसी दरवाज़े के खट-खटाये जाने की आवाज़ आई। फिर दो व्यक्तियों के बात करने की आवाज़ें आने लगीं। एक आवाज़ थी प्रकाश की, दूसरी थी किसी अपरिचित स्त्री की। दूसरी आवाज़ पहले निँदासी लगी, फिर क्रोधित, फिर शान्त। तब बैठक के अन्दर एक दरवाज़ा खुला। हाथों में एक कम्बल और तकिया लिये एक मोटी, नाटी, अधेड़ स्त्री सामने खड़ी थी। उसकी आवाज़ मोटी और सख्त थी, लेकिन उसमें सहृदयता की विचित्र पुट थी। कम्बल और तकिया उसने मीरा के सामने फेंक दिया।

“यह लो, बेटी।” उसने कहा—“मैं नहीं जानती कि तुम कौन हो और इस समय जानना भी नहीं चाहती। नींद के कारण मेरे लिए खड़ी रह सकना कठिन हो रहा है। प्रकाश ने जब मुझे जगाया, तो मुझे उसके ऊपर बड़ा क्रोध आया। गुसलखाने का दरवाज़ा वह है। कम्बल ओढ़कर सोफे पर सो रहा। इससे

अधिक मैं इस समय तुम्हारे लिए कुछ नहीं कर सकती। शोर मत करना और सबेरे जब तक मैं न आऊँ तब तक यहीं रहना।”

दरवाजा बंद हो गया। मीरा को धन्यवाद देने का भी मौका नहीं मिला। बाहर का दरवाजा खोलकर प्रकाश ने अन्दर झाँका।

“अब ठीक है न, मीरा? ये मेरी साहित्यिक एजेंट, मिसेज़ अरुणा चटर्जी हैं। पूरी ककशा हैं, लेकिन बड़ी नेक भी हैं। नमस्कार!”

मीरा की आँखों में एकाएक आँसू छलक आये।

“मैं बड़ी मूर्ख हूँ;” अवरुद्ध कंठ से उसने कहा—“मेरे कारण आप लोगों को बड़ा कष्ट हुआ।”

“हिश! हमें ज़रा भी कष्ट नहीं हुआ। अब सो रहो।”

दरवाजा धीरे से बन्द हो गया। फिर मीरा ने लिफ्ट के उतरने की आवाज़ सुनी। बगल के कमरे में मिसेज़ चटर्जी खर्राटे भर रही थीं।

१०

दूसरे दिन प्रातःकाल जब राजमोहन की आँखें खुलीं, तो उसे ऐसा जान पड़ा जैसे संसार का सारा दुःख, सारा कष्ट उसी के हिस्से में आ गया हो। रात के नशे की खुमारी अभी तक बाक़ी थी, सिर भन्ना रहा था। उसका वह साधारण बेढंगा कमरा गंदगी की करुण कहानी कह रहा था। फ़र्श पर गर्द की तहें जमी पड़ी थीं। आलमारी में पुस्तकें बेतरतीब पड़ी थीं, कागज़ बिखरे थे। कुछ कपड़े फ़र्श पर पड़े थे, कुछ बिस्तरे पर और कुछ खूंटियों पर बेढंगे ढंग से टँगे थे। एक ख़ाली बोतल मेज़ पर लुढ़की पड़ी थी और गंध कमरे में फैली थी। किन्तु उस करुण दृश्य की सब से दयनीय वस्तु थी वह नई पत्रिका जो कल ही उसके पास आई थी, जिसमें उसकी कहानियाँ छपी थीं और

जिसे असीम भल्लाहट की दशा में उसने अपने जूतों से कुचल डाला था। सुव्यवस्था तथा सफाई के जो प्रयत्न अभी उस दिन मीरा कर गई थी उनका कोई चिह्न अब शेष नहीं था।

अप्रिय स्मृतियाँ उड़-उड़कर आने लगीं। लड़खड़ाकर वह बिस्तरे से उतरा और गुसलखाने में चला गया। नहा-धोकर उसने कपड़े बदले, बाल सँवारे, जूते पहने। फिर फर्श से उस पत्रिका को उठाकर वह उस खिड़की के समीप गया जहाँ से नदी के दृश्य दिखाई देते थे। नैराश्य की भावना को दबाने का कोशिश करता हुआ वह उस पत्रिका के पृष्ठों पर दृष्टि दौड़ाने लगा। कागज रूढ़ी था, चित्र भोंड़े थे, पाठ्य सामग्री निम्न कोटि की थी, छपाई में सफाई का नाम नहीं था, प्रत्येक पृष्ठ में अशुद्धियाँ भरी पड़ी थीं। उसके प्रति उसकी घृणा किसी तरह कम नहीं हो सकी। अपनी रचनाओं की वह दुर्गति उसे अपनी और अपने उस कमरे की दुर्गति से मेल खाती हुई प्रतीत होने लगी। वह अभी अल्प-वयस्क था किन्तु उसमें सत्य से मुख मोड़ने का अवगुण नहीं था। अपनी स्थिति का उसे पूरा ज्ञान था। वह जानता था कि वह उसके पतन की अवस्था थी और उसका सूत्रपात उस समय हुआ था जब पहले-पहल मिस्टर गुप्त से उसकी भेंट हुई थी। उन बुरी आदतों की बात सोचते-सोचते, जो मिस्टर गुप्त के सम्पर्क में रहने से उसे लग गई थीं, उसका हृदय ग्लानि से भर गया। ऊपर उठने की, उन्नति के पथ पर अग्रसर होने की उसे शक्ति मिली थी, किन्तु वह मूर्खतावश पतन के पथ पर चल पड़ा।

कमरे के दरवाजे पर थपकियाँ पड़ीं। उसने कोई उत्तर नहीं दिया। विकल विचारों में खोया हुआ वह मूर्तिवत् खड़ा रहा। दरवाजा खुला और कोई अन्दर आया। तब मुड़कर उसने देखा, बाबू श्यामलाल वर्मा सामने खड़े थे। सदैव की भाँति उनकी वेष-भूषा से, मुखाकृति से, गाम्भीर्य टपक रहा था। किसी ने अभि-

वादन के नियमों का पालन नहीं किया। स्थिर दृष्टि से राजमोहन की ओर देखते हुए श्यामलाल चुपचाप खड़े रहे। फिर दरवाजा बन्द करके वे उसके समीप आये।

“तुम्हारा यह कमरा ठीक नहीं है, राजू।” उन्होंने कहा।

“मैं यहाँ किसी को नहीं बुलाता,” राजमोहन ने उत्तर दिया—
“और जहाँ तक सम्भव होता है किसी से यहाँ भेट भी नहीं करता।
आपको मेरा पता कैसे मिला?”

“रामलाल से। मैंने सुना है कि तुम तीनों अब अलग हो गये हो।”

“रामलाल काफ़ी सम्पन्न हो गये हैं और हम लोग अब उनके साथ रहने के योग्य नहीं रहे। वे अब राममोहन एविन्यु में रहते हैं। मेरा निवास-स्थान आप देख ही रहे हैं। मीरा एक महिला होस्टल में रहती है।”

“मीरा के कारण ही मैं यहाँ आया हूँ।” श्यामलाल ने कहा—
“उसके सम्बन्ध में मैंने एक बड़ी खराब बात सुनी है। उससे कहाँ भेट हो सकती है?”

राजमोहन ने अपनी हैट उठा ली। वहाँ से टलना चाहिए, कहीं भी जाना चाहिए।

“मैं खुद उससे इस समय मिलने जा रहा हूँ।” उसने कहा—
“आप चाहें तो मेरे साथ चले।”

श्यामलाल ने अपनी छड़ी से मदिरा की खाली बोतल की ओर संकेत किया।

“काहिल पहले ही से थे, शराबी भी बन गये?”

बुरा मानने का कोई लक्षण राजमोहन ने प्रकट नहीं किया। वे कमरे से बाहर निकले। राजमोहन ने दरवाजा बन्द कर दिया।

“यह कमरा बेशक बड़ा गन्दा है।” उसने कहा—“कल रात को मुझसे एक बहुत बड़ी बेवकूफी हो गई। मीरा के साथ मैं एक

पार्टी में गया था। बाद में मैंने उसके साथ बड़ा भद्दा व्यवहार किया। इसी लिए इस समय उससे भेंट करने को उत्सुक हूँ।”

मकान से निकलकर वे बाँध की ओर चले।

“मुझे केवल मीरा की कुछ चिन्ता है।” श्यामलाल ने कहा—
“तुम्हारी और रामलाल की ओर से मेरी अन्तरात्मा निश्चिन्त है। तुम दोनों ने अपना-अपना मार्ग चुन लिया है और तुम्हें विचारों के अनुसार कार्य करते रहना चाहिए। रामलाल खुशहाल दिखाई देता है और तुम्हारा हालत ठीक नहीं है। लेकिन ऐसा तो दुनिया में होता ही है। रामलाल में नियमित रूप से रहने और कार्य करने की योग्यता है। तुम्हारे रक्त में तुम्हारे स्वर्गीय पिता की उच्छृंखलता है और मुझे भय है कि तुम्हारा अन्त भी उन्हीं के अन्त की तरह करुण होगा। जब तक तुमने चाहा तब तक मैंने तुम्हें अपने घर में आश्रय दिया और जीवन की दुर्बलताओं से तुम्हारी रक्षा करने के लिए तुम्हें सदैव आत्म-शुद्धि का उपदेश दिया। क्या तुमने कोई ऐसा काम किया है, राजू, जिससे तुम्हारी अन्तरात्मा दुखी हो?”

“कम से कम मैंने आपका कुछ नहीं बिगाड़ा।”

“कोई पाप तुमने नहीं किया? सोचकर जवाब दो। मेरी फ़ैक्टरी से अलग होते समय क्या तुमने कोई बुरा काम नहीं किया? अगर तुम सच्ची बात साफ़-साफ़ कह दोगे, तो इससे तुम्हें लाभ होगा।”

राजमोहन हँस पड़ा।

“अपने दोषों का मुझे पूरा ज्ञान है, लेकिन मैं यह भी जानता हूँ कि मुझे झूठ बोलने की आदत नहीं है। न जाने आपका इशारा किस बात की ओर है।”

श्यामलाल दूसरी ओर देखने लगे। कुछ देर तक दोनों चुपचाप चलते रहे।

“खैर, उसे जाने दो।” शान्त स्वर में श्यामलाल ने कहा—
 “मीरा का खयाल इधर अकसर मुझे तझ करता था। किम्मत-
 आजमाई करने के लिए तुम्हारा और रामलाल का यहाँ आना
 तो बुरा नहीं रहा, लेकिन मुझे मीरा को नहीं आने देना चाहिए
 था। उसके ऊपर नियन्त्रण रखना जरूरी था।”

“उसके बारे में आपने कौन सी ऐसी बात सुनी है जो आपके
 परेशान कर रही है?” राजमोहन ने पूछा।

“मैंने सुना है कि वह एक थियेटर में नौकरी करने लगी है।
 यह बात मुझे रामलाल ने बतलाई थी।”

“निर्धनों को हमेशा आत्म-निर्णय का मौका नहीं रहता,”
 राजमोहन ने कहा—“मेरी और मीरा की पूँजी खत्म हो गई,
 और मैं अपने लेखन-कार्य से अभी हाल से कुछ पैदा करने लगा
 हूँ। स्थान और भोजन-वस्त्र के लिए जब काम करना पड़ता है,
 तो इस बात का खयाल रखना कठिन हो जाता है कि केवल ऐसा
 ही कार्य किया जाय जो ज़रा भी आपत्तिजनक न हो। मीरा
 को मजबूर होकर थियेटर में शामिल होना पड़ा। मुझे इस
 बात का बड़ा अफ़सोस है कि मैं उसकी कोई सहायता नहीं
 कर सका।”

वे महिला-होस्टल पहुँच गये। होस्टल की मैट्रन, मिसेज़
 राय, स्वयं बैठक में उपस्थित हुई।

“मुझे मालूम हुआ है, महाशय,” श्यामलाल की ओर देखकर
 उन्होंने कहा—“कि आप मिस कपूर से मिलना चाहते हैं।”

“जी हाँ, मैडम। वह मेरी भतीजी है।”

“मिस कपूर अब यहाँ नहीं रहती।”

“क्यों, मैडम?” राजमोहन ने घबराकर पूछा—“अभी कल
 तक तो मिस कपूर यहीं रहती थीं।”

मिसेज़ राय ने राजमोहन की ओर ध्यान नहीं दिया।

“इस होस्टल के नियम बहुत कड़े नहीं हैं,” उन्होंने श्यामलाल से कहा—“लेकिन उन नियमों का पालन किया जाना हम बहुत जरूरी समझते हैं। जिस दिन मुझे मालूम हुआ कि मिस कपूर एक थियेट्रिकल कम्पनी में काम करने लगी हैं उसी दिन मैंने तय कर लिया था कि उन्हें अब यहाँ रहने देना उचित नहीं है। कल रात को जब साढ़े चार बजे वे बाहर से आईं, तो मैंने उन्हें अन्दर आने देने से इनकार कर दिया और उनसे साफ़-साफ़ कह दिया कि अब उनके लिए इस होस्टल में स्थान नहीं है।”

राजमोहन का सिर चकरा गया। किन्तु श्यामलाल वैसे ही गम्भीर, स्थिर बने रहे।

“आपको कुछ मालूम है कि वे कहाँ हैं, कहाँ गईं?” राजमोहन ने विकल स्वर में पूछा।

“मैं केवल अनुमान लगा सकती हूँ।” मैट्रन ने लापरवाही से उत्तर दिया—“ब्रैंड हाटल से एक आदमी उनके कपड़े माँगने आया था।”

होस्टल से निकलकर, एक टैक्सी पर सवार होकर, वे ब्रैंड हाटल पहुँचे।

“मैं मिस्टर प्रकाशनारायण हुक्कू से मिलना चाहता हूँ।” राजमोहन ने हाल में बैठे हुए क्लर्क से कहा।

“भेट करने की बात पक्की हो चुकी है?” क्लर्क ने कहा—“बात यह है कि मिस्टर हुक्कू इस वक्त आम तौर पर काम में मशगल रहते हैं।”

“हमें उनसे फ़ौरन् मिलना है।” राजमोहन ने कहा—“कृपया उनसे कहला भेजिए कि मिस कपूर के चचा आये हैं।”

क्लर्क ने एक सेवक को खाना किया। वे प्रतीक्षा करने लगे। अधिक समय बीत गया।

“वह आदमी अभी तक नहीं आया, राजू!” श्यामलाल ने कहा।

तब एकाएक वह बात हुई जिसकी उन्हें आशा नहीं थी। मीरा उनकी ओर आती दिखाई दी। नित्य की तरह एक मामूली सी साड़ी उसके शरीर पर थी। उसका चेहरा उतरा हुआ था, लेकिन वह बिलकुल शान्त थी। उसकी मुस्कान में एक ऐसा विचित्र रङ्ग था जो उन लोगों ने कभी नहीं देखा था।

“जब आपका सन्देश पहुँचा तो मैं मिस्टर हुक्कू के कमरे में थी,” उनके समीप पहुँचकर उसने कहा—“मैंने सोचा कि शायद आप लोग मुझी से मिलना चाहते हैं।”

वे अवाक रह गये। मीरा के उस रूप से वे सर्वथा अपरिचित थे।

“वज्जीराबाद से हमारे आने के बाद क्या आप यहाँ पहली ही बार आये हैं?” उसने श्यामलाल से पूछा—“मुझे बड़ा दुःख है कि मेरा पता लगाने में आपको इतना कष्ट हुआ। बात यह है कि कल रात को एक पार्टी में मुझे बड़ी देर हो गई। जब मैं होस्टल पहुँची तो मैट्रन ने मुझे अन्दर जाने देने की आज्ञा नहीं दी। इसलिए मिस्टर हुक्कू मुझे यहाँ लिवा लाये।”

“मैं उस शरूस से दो बातें करना चाहता हूँ।” श्यामलाल ने सँभलकर कहा।

“आप कैसी बात कर रहे हैं, चाचाजी?” मीरा ने उत्तर दिया—“मिस्टर हुक्कू को इस समय किसी से मिलने की फुर्सत नहीं है। फिर उनसे आप कहेंगे क्या?”

उनके चेहरे की ओर वह स्थिर दृष्टि से देखने लगी। अवहेलना भरी थी उसकी आँखों में। किन्तु श्यामलाल विचलित नहीं हुए।

“कल रात को तुम उसके संरक्षण में थी,” उन्होंने कहा “मैं यह जानना चाहता हूँ कि उसने अपने उत्तरदायित्व का पालन किस तरह किया।”

मीरा हंस पड़ी। राजमोहन को फिर ऐसा लगा जैसे वह उससे परिचित न हो।

“यह तो अतिरंजित नाटकीयता है !” मीरा ने कहा—“और अगर आप बुरा न मानें, चाचाजी, तो क्या मैं पूछ सकती हूँ कि उस बात से आपको क्या मतलब है ?”

“मुझे क्या मतलब है ?” किंचित् चकित होकर श्यामलाल ने दोहराया।

“बेशक ! आप कारण जानना चाहते हैं ? कृपया उस कमरे में चलिए। यहाँ काफ़ी एकांत नहीं है।”

वह उन्हें एक कमरे में ले गई जहाँ पुस्तकालय सा लगता था। उन लोगों के अतिरिक्त वहाँ कोई नहीं था। कमरे के दूसरे सिरे पर पहुँचकर वह उन दोनों की ओर मुड़ी।

“सुनिए,” श्यामलाल की ओर देखकर उसने कहा—“आपके विचारों के अनुसार और मेरे विचारों के अनुसार भी, यह मेरा दुर्भाग्य था कि मुझे बचपन से आपके घर में रहना पड़ा। आपने मेरा पालन-पोषण ठीक ढंग से नहीं किया। मेरी शिक्षा-दीक्षा भी उचित रीति से नहीं हुई। आप अमीर समझे जाते थे, लेकिन आपने मेरी शिक्षा के लिए उतना भी खर्च नहीं किया जितना एक साधारण स्थिति का मनुष्य भी आसानी से खर्च कर देता। मैं नृत्य, सङ्गीत और चित्रकारी सीखना चाहती थी, लेकिन आपने सीखने नहीं दिया। आपने अपने संकुचित, दक्षियानूसी दृष्टिकोण के अनुसार मुझे पाला-पोसा। अगर आप समझते हों कि मुझे इसके लिए आपके प्रति कृतज्ञ होना चाहिए, तो मैं आपको स्पष्ट रूप से बतला देना चाहती हूँ कि मेरे मन में कृतज्ञता की भावना जरा भी नहीं है। और जब तंग आकर मैं आपके घर से बिदा होने लगी, तो आपने सहानुभूति का एक शब्द भी मुझसे नहीं कहा। उस दिन से आज तक आपने मेरी खोज-खबर लेने का

कष्ट नहीं उठाया। आपको मेरी क्या परवाह थी? और आज, चूँकि कल रात को मुझे एक पार्टी में देर हो गई और उस हृदयहीन मैट्रन ने मुझे होस्टल में प्रवेश नहीं करने दिया और एक भले आदमी ने मेरे यहाँ रहने का प्रबन्ध कर दिया, आप एक साधारण उपदेशक का वेश बनाये हुए और हाथ में डण्डा लिये हुए यहाँ मौजूद हैं! यह उपहासजनक नाटकीयता है, चाचाजी!”

श्यामलाल दङ्ग रह गये। उन्होंने अपनी छड़ी एक हाथ से दूसरे हाथ में बदली। छड़ी की मूँठ पसीने से भीग गई थी। फिर उन्होंने कुछ कहने के लिए मुख खोला, लेकिन राजमोहन उनसे पहले ही बोल उठा।

“मीरा!” विनय-पूर्ण स्वर में उसने कहा—“कल रात को मैंने बड़ी बेवकूफी की, लेकिन इसका कारण यह था कि मुझे निराशा की एक गहरी चोट सहनी पड़ी थी। मैं आपसे नहीं था। मैं जानता हूँ कि तुम्हें उस दशा में छोड़कर मैंने बड़ी भूल की। मुझे माफ़ करो। कठोर मत बनो। क्या तुम यह नहीं देख रही हो कि मैं कितना दुखी हूँ?”

मीरा ने विचित्र ढङ्ग से सिर हिलाया। अपना पार्ट वह उसी तरह अदा करती गई।

“राजू!” उसने कहा—“जान पड़ता है कि चाचाजी का रङ्ग कुछ-कुछ तुम्हारे ऊपर भी चढ़ गया है। मेरी खोज-खबर लेने के लिए यहाँ आकर तुमने वास्तव में बड़ी कृपा की। मैं बड़ी कृतज्ञ हूँ, विश्वास करो। मैं यहाँ बड़े आराम से हूँ, यह तुम खुद देख रहे हो।”

“मीरा—!”

“तुम बुरा तो न मानोगे, अगर मैं एक छोटी सी बात की ओर तुम्हारा ध्यान आकर्षित करूँ? कल की रात शायद तुम्हारे लिए बहुत बुरी रही, और आज सबेरे भी शायद तुम बहुत जल्दी उठ

गये थे। तुमने अपने बाल नहीं सँवारे, और कपड़ों की गर्द साफ नहीं की। और तुम्हारे कालर की क्या दशा है—यह अभी किसी शीशे में देख लेना।.....अब मैं जाती हूँ। मुझे मिस्टर हुकू और एक अन्य मित्र के साथ 'जलपान' निश्चित करना है।”

राजमोहन के चेहरे पर एक क्षण के लिए विकट उत्तेजना व्यक्त हो गई।

“मैं उस शख्स से निपटे बगैर यहाँ से नहीं जाऊँगा।” दाँत पीसकर उसने कहा।

उसे फिर मीरा का एक भिन्न रूप दृष्टिगोचर हुआ। उसकी आँखों से प्रकाश की किरणें निकलने लगीं।

“मिस्टर हुकू से भेंट करने के तुम्हें बहुतेरे मौके मिलेंगे, राजू,” उसने कहा—“लेकिन इस वक्त उनसे या मेरे किसी दूसरे मित्र से भिड़ोगे तो अच्छा न होगा। आपको तो बतला ही चुकी हूँ, चाचाजी, कि आपसे अपने सम्बन्ध के बारे में मेरी क्या राय है। तुमसे मैं यह कहना चाहती हूँ, राजू, कि तुम्हें मेरे किसी मामले में दखल देने का कोई हक नहीं है। हक जब था तब था; अब नहीं है।”

सौजन्य-सूचक भाव से सिर हिलाकर वह चली गई। श्याम-लाल ने राजमोहन की बाँह पकड़ ली।

“बाहर चलो, राजू।” उन्होंने आदेश दिया।

११

मिसेज़ अरुणा चटर्जी हाथ में एक चमकता हुआ हैंडबैग लिये ग्रैंड होटल के लाउंज में टैक्सी के इन्तज़ार में बैठी हुई थीं। एक प्रसिद्ध नाट्यकार से भेंट करने के लिए आप शमशेरपुर जा रही थीं। मीरा आपकी बगल में बैठी हुई थी। वह भी बिलकुल तैयार थी।

“मिस कपूर!” मीरा का हाथ अपने हाथों में लेकर उन्होंने कहा—“मैं समझती हूँ कि तुम बड़ी अच्छी लड़की हो।”

“मुझे इस बात की खुशी है कि मेरे बारे में आपका ऐसा खयाल है।” कुछ चौंककर मोरा ने कहा।

“मैं दूसरों के मामले में दखल देने की आदी नहीं हूँ। लेकिन चूँकि मैं तुम्हें पसंद करती हूँ, इसलिए यह जरूरी समझती हूँ कि तुम्हारे मामले में दखल दूँ। मैं प्रकाशनारायण हुस्कू के बारे में तुमसे बात करना चाहती हूँ।”

मोरा चुपचाप बैठी रही।

“प्रकाश को मैं उस समय से जानती हूँ जब वह एक नन्हा-सा बच्चा था।” मिसेज़ चटर्जी कहती गई—“उसकी माता से मेरी मित्रता थी। लक्ष्मीनगर में मैंने ही उसका पहला नाटक लगाया था। उसके लिए मैं सब कुछ कर सकती हूँ, और वह भा मुझे बहुत मानता है। लेकिन जो कुछ मैं तुमसे कहना चाहती हूँ वह उसके सामने भी कह सकती हूँ, और अगर वह इस समय यहाँ मौजूद होता तब भी मैं इसी तरह बात करती। प्रकाश बड़ा अच्छा लड़का है। वह उदार है, नेकदिल है और बड़े काम कर सकता है। मेरा मतलब है ऐसे कामों से जिनके लिए बहुत बड़े दिल की जरूरत होती है। लेकिन सब लोगों की तरह वह भी कभी-कभी फिसल पड़ता है, और जब वह फिसलता है तो आम तौर पर उस मामले का किसी लड़की से सम्बन्ध होता है।”

मोरा ने उनकी ओर अनुनयपूर्ण दृष्टि से देखा। लेकिन मिसेज़ चटर्जी का उत्साह जाग्रत् हो चुका था, और उस समय रुक सकना उनके लिए कठिन था।

“उस रात को जब प्रकाश ने तुम्हें अपने साथ लाकर मेरे सिपुर्द किया था, तो उसने बेशक बड़ा अच्छा काम किया था। लेकिन उस बड़े काम से आत्मोत्कर्ष की जो भावना उसके मन में उत्पन्न हुई होगी वह अब तक समाप्त हो चुकी होगी। जिस बात की ओर मैं तुम्हारा ध्यान आकृष्ट करना चाहती हूँ वह यह है कि

प्रकाश उस तरह का काम एक-दो बार जरूर कर सकता है लेकिन वह फिसल भी सकता है। तुम्हारी उम्र अभी कम है, और तुम सुन्दर भी हो। किसी मर्द का तुम्हें विश्वास नहीं करना चाहिए—प्रकाश का भी नहीं।”

मीरा विवशता की मूर्ति बनी बैठी थी। एकाएक उसने उनकी ओर हाथ बढ़ा दिया।

“मैं बड़ी खुश हूँ,” उसका हाथ पकड़कर मिसेज़ चटर्जी ने कहा—“कि तुमने बुरा नहीं माना। यह बड़ा अच्छा हुआ कि प्रकाश को कल भावन चला जाना पड़ा। तुम्हें उसका कोई सन्देश तो नहीं मिला?”

सिर हिलाकर मीरा ने एक मोड़ा-माड़ा हुआ तार उनके हाथ में दे दिया। वह भावन से आया था, और अभी थोड़ी देर पहले उसे मिला था। उसमें लिखा था—

“कृपया मिसेज़ चटर्जीवाले कमरों में रुकी रहना। मैं आज ही पाँच बजे शाम तक वापस आ जाऊँगा।—प्रकाशनारायण हुक्कू।”

“तो क्या इरादा है?” मिसेज़ चटर्जी ने पूछा।

मीरा ने हाल के उस स्थान की ओर इशारा किया जहाँ उसका छोटा सा हरा बैग रक्खा हुआ था।

“आपके साथ-साथ मैं भी इस होटल से बिदा हो जाऊँगी।” उसने उत्तर दिया।

“कहीं कोई कमरा ले लिया है?”

“अभी तो नहीं। खोज लूँगी।”

“किराया पेशगी देने के लिए रुपये हैं?”

“मेरे पास इस वक्त दस-बारह रुपये हैं। दो-चार रोज़ में तनख़्वाह भी मिल जायगी।”

मिसेज़ चटर्जी ने एक दीर्घ निःश्वास खींचा।

“एक बात और तुमसे कहना है, बेटी।” उन्होंने कहा—
 “वह बात तुम्हें अच्छी तो नहीं लगेगी, लेकिन उचित यही होगा कि तुम उसे जान लो। नेशनल थियेटर में तुम्हारी नौकरी अब ज्यादा दिनों तक नहीं चलेगी। इस नाटक से वे कई छोटे-मोटे पार्ट निकालने जा रहे हैं, और उन्हीं में तुम्हारा पार्ट भी है। तुम्हारे लिए सबसे अच्छी बात यह होगी कि अपने सम्बन्धियों से मेल कर लो। लेकिन अगर तुम ऐसा न कर सको तो तुम्हें किसी दूसरे ढंग की नौकरी खोजनी चाहिए।.....अच्छा, टैक्सी आ गई।” वे तुरन्त उठ खड़ी हुई। “इस लिफाफे को अपने पास रख लो। किसी दिन अगर बड़ी तकलीफ हो, तो इसे खोलना और याद रखना कि एक बूढ़ी औरत का तुम्हारे ऊपर कुछ चाहिए, और कभी दे सकना तो देना।.....ये कुली बड़े सुस्त हैं।” वे दरवाजे की ओर बढ़ने लगीं। “नमस्कार !”

शिकायतें करती और डाँटती-फटकारती हुई वे टैक्सी पर सवार हो गईं। टैक्सी चल पड़ी। हृदय में विचित्र एकाकीपन की भावना लिये मीरा कई क्षणों तक चुपचाप खड़ी रही। फिर उसने वह लिफाफा हैंडबैग में डाल लिया।

“आपके लिए टैक्सी ले आऊँ, मिस ?” एक सेवक ने पूछा।

मीरा ने अपना बैग उठा लिया। वह बहुत भारी नहीं था।

“धन्यवाद,” उसने कहा—“मुझे दूर नहीं जाना है।” और वह तेजी से चली गई।

उस रात को प्रकाश थियेटर में कुछ देर से पहुँचा। मीरा विंग में अकेले खड़ी थी। वह तुरन्त उसके पास गया।

“मेरा तार तुम्हें मिल गया था ?” उसने पूछा।

“हाँ, मिल गया था।”

“लेकिन तुम रुकीं तो नहीं ?”

“मैं समझती हूँ कि प्रैंड होटल मेरे उपयुक्त स्थान नहीं है।”
उसने उत्तर दिया—“आप भी मुझसे सहमत होंगे।”

“हाँ, काफी अच्छा तो नहीं है।”

“निज़ाम स्ट्रीट के एक मकान में मुझे एक कमरा मिल गया है। वह तीसरी मंज़िल पर है और काफी अच्छा है। उस मकान की मालकिन भी थियेटर में काम कर चुकी हैं। उनका कहना है कि वह शयनागार भी है और बैठक भी। खैर, मुझे तो उससे दोनों का काम लेना ही है। उसका किराया १५) मासिक है। अगर मैं इतना भी न कमा सकूँ कि उसका किराया अदा कर सकूँ तो मुझे ज़िन्दा रहने का कोई हक़ नहीं।”

“जान पड़ता है कि अरुणा चटर्जी की ज़बान रुकी नहां रह सकी।”

“मिसेज़ चटर्जी ने आपके या मेरे बारे में कोई ऐसी बात नहीं कही जो बुरी हो।” मीरा ने उत्तर दिया।

“वे बड़ी नेक हैं, लेकिन बक्की भी हैं। मुझसे तो अब तुम्हें बड़ा डर लगने लगा होगा?”

मीरा हँस पड़ी।

“ज़रा भी नहीं। आपको मैं अब भी बहुत पसंद करती हूँ।”

“तो क्या खेल ख़त्म हो जाने के बाद मेरे साथ नाश्ता कर सकती हो?”

“क्यों नहीं कर सकती? ज़रूर करूँगी।”

“वाह! बड़ी अच्छी बात है। मुझे इस बात की बड़ी खुशी है कि छोटी-मोटी बातों से तुम घबरा नहीं जाती।.. ..अच्छा अब जाओ, तुम्हारा पार्ट आ गया। इतमीनान से जाओ। ग्यारह बजे के बाद फिर भेंट होगी।”

अपने वादे के अनुसार खेल समाप्त हो जाने के बाद मीरा ने प्रकाश के साथ क्रीसेंट रेस्तराँ में नाश्ता किया। प्रकाश ने कोई ऐसी हर्कत नहीं की जो उसकी दृष्टि में आपत्ति-जनक होती।

एक सप्ताह बीत गया। वह दिन आया जब उसे उस नाटक में अन्तिम बार पार्ट करना था।

उस रात को जब मीरा थियेटर से बाहर निकली, तो उसे बड़ी निराशा हुई। खेल अभी समाप्त नहीं हुआ था। पानी बरस रहा था। बहुत थोड़े लोग इधर-उधर आ-जा रहे थे। जिस लम्बे, दुबले-पतले नवयुवक को वह खोज रही थी वह वहाँ मौजूद नहीं था। उसने बेकार अपनी हेटी कराई। पत्र लिखकर उसने राजमोहन से अनुरोध किया था कि वह इस समय यहाँ उससे मिले। लेकिन राजमोहन ने उसका अनुरोध स्वीकार करने का कष्ट नहीं उठाया।

एक दीर्घ निःश्वास खींचकर वह घर जाने के लिए मुड़ी। एकाएक थियेटर के एक प्राइवेट दरवाजे से तेजी से निकलकर प्रकाश ने उसका हाथ पकड़ लिया।

“मैंने तो समझा था कि तुम चली गई,” उसने हँसकर कहा—
“चलो, क्रीसेंट रेस्तराँ में नाश्ता करें।”

अस्वीकृति-सूचक भाव से मीरा ने सिर हिलाया।

“माफ़ कीजिए, इस समय नहीं चल सकती। थक गई हूँ।”

प्रकाश ने आगे बढ़कर अपनी कार का दरवाजा खोला।

“खैर, इस तूफ़ान में तो तुम्हारा पैदल जाना हो नहीं सकेगा।”
उसने कहा—“आओ, बैठो।”

तब मीरा चुपचाप कार में बैठ गई। वह भी उसकी बग़ल में बैठ गया। कार चली।

“ड्राइवर से कहाँ चलने को कहा है?” मीरा ने पूछा।

“ग्रैण्ड होटल। नाश्ता तो तुम्हें करना ही पड़ेगा, करना चाहो या न चाहो।”

“मेरी समझ में नहीं आता कि आप मेरे पीछे इतनी परेशानी क्यों उठाते हैं?” दीर्घ निःश्वास खींचकर मीरा ने कहा—“सोचती हूँ तो मालूम होता है कि कुछ भूख तो जरूर लगी है।”

“क्यों, मीरा, क्या दुबली बनी रहने के लिए भूखी रहती हो?”

“नहीं, भूखी रहना मुझे अच्छा नहीं लगता।” उसने उत्तर दिया—“सच तो यह है कि करीब-करीब हर समय मुझे भूख लगी रहती है। अब मैं प्रसन्न हूँ कि भोजन के लिए चल रही हूँ। कल रात को क्रीसेंट रेस्तराँ में भोजन करूँगी। जहाँ तक होटल और रेस्तराँ का सवाल है, मैं अपनी हैसियत से कहीं अधिक खर्चीला जीवन व्यतीत कर रही हूँ।”

“क्रीसेंट रेस्तराँ में किसके साथ भोजन करोगी?”

“रामलाल सिनहा के साथ। वह उन दो नवयुवकों में से एक है जिनका लालन-पालन मेरे साथ हुआ था। वे चाचाजी के सम्बन्ध की खबरे सुनायेंगे और फिर हम उन दिनों की घटनाओं पर बात करेंगे जब हम सब वज्जीराबाद में एक साथ रहते थे।”

“न जाने क्यों रामलाल को मैं अच्छा नहीं समझता।” प्रकाश ने कहा।

“मैं भी वास्तव में उन्हें पसन्द नहीं करती। लेकिन कुछ भी हो, हमारा पालन-पोषण एक साथ हुआ था और इसके अलावा वे अपने ढङ्ग से मेरी कुछ भलाई करना चाहते हैं।”

“किस तरह की भलाई वह करेगा? तुम्हारे साथ भलाई तो मैं भी करना चाहता हूँ।”

“मेरी कैसी भलाई आप करना चाहते हैं?”

एकाएक मीरा को अनुभव हुआ कि उसका हाथ प्रकाश के हाथों में है।

“क्या तुम अनुमान नहीं लगा सकती, मीरा?” प्रकाश ने धीरे से कहा।

कार ग्रैंड होटल के सामने पहुँचकर रुक गई थी। मीरा ने हँसकर अपना हाथ छुड़ा लिया।

“रहने भी दीजिए।” उसने कहा—“अब भोजन का समय है; पहेलियाँ बूझने का नहीं। मेरे लिए कटलेट और हरी मटर आर्डर

कीजिए, और कोई ऐसी मेज़ लीजिए जहाँ लोग मुझे न देख सकें। मैं अच्छे वस्त्र पहनकर आती, लेकिन मुझे तो राजमोहन के साथ किसी मामूली रेस्तराँ में नाश्ता करने की आशा थी।”

“जो कुछ तुम्हें मुझसे मिल सकता है, जरूर मिलेगा।” उसे रेस्तराँ की ओर ले जाते हुए प्रकाश ने वादा किया।

वे एक कोने की मेज़ पर बैठे। कटलेट मीरा को बहुत पसंद आया। इसके बाद प्रकाश के आग्रह से वह थोड़ी-सी मदिरा पीने को भी राज़ी हो गई। बाहर की बूँदा-बूँदी और ठण्डक के बाद रेस्तराँ की सफ़ाई और गर्माहट बड़ी भली लग रही थी। मीरा के हृदय से निराशा की भावना क़रीब-क़रीब गायब हो गई। खिड़की के मोटे शीशे से वह सहन की ओर देख रही थी। सहन में धुँधला प्रकाश फैला था। सहसा उसे ऐसा ज्ञात हुआ जैसे एक सुपरिचित सूरत दृष्टिगोचर हुई हो। वह सिहर उठी, और उसका चेहरा बिलकुल उतर गया।

“कौन है?” उसने तेज़ी से पूछा

प्रकाश ने लापरवाही से बाहर दृष्टि डाली।

“कोई आवारा रहा होगा।” उसने उत्तर दिया—“ऐसे लोग यहाँ रोज़ ही दिखाई पड़ते हैं।”

उसकी आशंका दूर हो गई। उसने असीम संतोष से अपने चारों ओर दृष्टि दौड़ाई।

“मेरा स्वाभाविक उत्साह फिर लौटने लगा है।” उसने कहा—
“आज की दुःखद घटना मैं शीघ्र ही भूल जाऊँगी। अगर कभी कोई मेरा जीवन-चरित लिखेगा, तो उसे यह लिखना पड़ेगा कि रंगमंच पर मुझे काफ़ी समय तक कार्य करने का अवसर नहीं मिला। क्या आप कोई ऐसी चीज़ नहीं लिख सकते जिसमें मैं आसानी से पार्ट कर सकूँ?”

“मीरा !” सँभलकर आगे की ओर मुककर प्रकाश ने कहा—
 “तुम्हारे लिए मैं एक नहीं, दस नाटक लिखने का तैयार हूँ। लेकिन
 मैं तुम्हें धोखे में नहीं रखना चाहता। सफल अभिनेत्री बनने
 के लिए जिस स्वाभाविक प्रतिभा की आवश्यकता होती है वह तुममें
 ज़रा भी नहीं है। अगर यह बात न होती या मैं तुम्हें भुलावे
 में रखना चाहता, तो इस खेल से तुम्हें हटाने का कोई साहस न
 कर सकता।”

मीरा ने दीर्घ निःश्वास खींचा।

“मुझे केवल रुपये का खयाल है, किसी और बात का नहीं।
 ६०) की रकम मेरे लिए काफी अच्छी रकम है।”

“कुछ नहीं है !” प्रकाश ने कहा—“मैं तो चाहता हूँ कि
 तुम्हें इसी वक्त दस हजार का चेक दे दूँ या २००) मासिक दिया
 करूँ। लेकिन मुश्किल यह है कि दूँ तो कैसे दूँ। अगर तुम
 मेरी बहन या कोई और रिश्तेदार होती तो कोई कठिनाई न होती।”

मीरा की बड़ी-बड़ी आँखों में खेद का भाव व्यक्त हो गया।

“एक ही महाशय मेरे रिश्तेदार हैं,” मीरा ने कहा—“और
 उन्हें मेरी सहायता करने की कभी ज़रा भी इच्छा नहीं होती।
 आप मुझे गोद ले सकते हैं, मिस्टर हुक्कू ?”

“मुझे प्रकाश कहो।”

“नहीं, यह मुझसे नहीं हो सकेगा। आप बहुत बड़े
 आदमी हैं।”

“हिश ! खैर, तुम्हें गोद लेने को तैयार हूँ।”

“लेकिन आप तो शोघ्र ही यहाँ से जा रहे हैं।”

“तुम भी मेरे साथ चलना।”

“नहीं, इसे जाने दीजिए। आपकी अवस्था अभी कम है,
 किसी को दत्तक पुत्री बनाने के योग्य तो आप किसी तरह नहीं हैं।”

“अच्छा दत्तक पुत्री न सही, मेरी सेक्रेटरी बनेगी ?”

मीरा कई क्षणों तक विचार करती रही।

“आपका यह प्रस्ताव बेशक आकर्षक है, लेकिन कठिनाई यह है कि टाइपिंग में मैं कुशल नहीं हूँ, शार्ट में और भी कच्ची हूँ और हिज्जे की गलतियाँ तो बहुत ज्यादा करती हूँ।”

“मैं तमाम खतरे उठाने को तैयार हूँ।” प्रकाश ने आश्वासन दिया।

“नहीं, मिस्टर हुक्कू, मुझे माफ़ कीजिए। आपकी सेक्रेटरी बनने के योग्य मैं नहीं हूँ, और आपकी भलमनसाहत से अनुचित लाभ उठाना नहीं चाहती।”

प्रकाश विचारों में डूबा हुआ कई मिनट तक चुपचाप बैठा रहा। फिर उसने बिल माँगकर उस पर हस्ताक्षर किया।

“चलो, ऊपर बैठक में बैठकर काफ़ी पियें” उसने कहा।

कभी पहले उसने ऐसा प्रस्ताव नहीं किया था, लेकिन मीरा बिना किसी हिचक के राज़ी हो गई। जब वे उस कमरे से निकले, तो प्रकाश खोया हुआ सा, विक्षिप्त सा लग रहा था। अनेक परिचितों और मित्रों ने उसका अभिवादन किया, किन्तु उसने किसी को उत्तर नहीं दिया। किसी को जैसे उसने पहचाना ही नहीं। कुछ लोग आश्चर्य से देखते रह गये; कुछ हँसने और मुस्कराने लगे। लिफ्ट पर सवार होकर वे दूसरी मंज़िल पर पहुँचे, और गलियारे में आगे बढ़े। प्रकाश ने अपनी बैठक का दरवाज़ा खोला। अँगोठी में आग जल रही थी और एक आराम-कुर्सी उसके सामने पड़ी थी। सिगरेट, पत्र-पत्रिकाएँ, बिस्की और सोडा—अविवाहित जीवन के आराम और ऐश की तमाम चोज़ें क्रायदे से सजी रखी थीं। उसने दरवाज़ा बन्द कर दिया।

“मीरा !” उसके कंधों पर हाथ रखकर प्रकाश ने कहा—
“तुम मेरी दत्तक पुत्री नहीं बनोगी और मेरी सेक्रेटरी भी नहीं बनोगी। अब मैं अपने सम्पूर्ण हृदय से अपना तीसरा प्रस्ताव तुमसे करना चाहता हूँ। मेरी जीवन-संगिनी बनोगी ?”

देवी-देवताओं में प्रकाश का कभी विश्वास नहीं रहा, किन्तु उस समय मीरा की ओर देखते-देखते उसे सहसा ऐसा प्रतीत होने लगा, जैसे वह सचमुच किसी देवी के दर्शन कर रहा हो। मीरा के मुखमण्डल पर दिव्य आभा फूट पड़ी, और उसकी आँखों से अलौकिक आह्लाद की किरणें प्रस्फुटित होने लगीं।

“सुख रहा !” प्रकाश का मस्तक चूमकर उसने कहा—“सदैव सुखी रहो ! तुम्हारे इस प्रस्ताव से मैं निस्सन्देह सम्मानित हुई हूँ, लेकिन मुझे खेद है कि इसे स्वीकार करने में असमर्थ हूँ। मैं राज-मोहन वर्मा से प्रेम करती हूँ और किसी दिन उन्हीं से विवाह करूँगी।”

“उस—लड़के से ?”

“हाँ,” सिर हिलाकर मीरा ने कहा—“राजू मुझसे चार वर्ष बड़े हैं। मुझे विश्वास है कि किसी दिन सफल होकर वे गार्हस्थ्य-जीवन व्यतीत करने के योग्य बन सकेंगे। लेकिन अगर मेरा यह विश्वास असत्य सिद्ध हुआ, तो मैं जीवन भर किसी से विवाह न करूँगी। लोग इसे मूर्खता कहेंगे, लेकिन.....। तुम बड़े नेक हो, प्रकाश। सुखी रहो—सदैव सुखी रहो ! मैं अंधकार में भटक रही थी—तुम मुझे प्रकाश में खींच लाये। तुम्हारे सुख और शान्ति के लिए मैं जीवन भर प्रार्थना करूँगी।”

अंगीठी के समीप जाकर प्रकाश ने घंटी बजाई। फिर उसने एक आराम-कुरसी खींची।

“तो यह खेल समाप्त हो गया।” एक लम्बी साँस छोड़कर उसने कहा—“बैठो, मीरा। मैंने घंटी बजा दी है; काफी आ रही होगी।”

१२

अनेक इष्ट-मित्रों से मिलकर और क्रीसेंट रेस्तराँ में दावत खाकर प्रकाश साढ़े दस बजे रात के समय ग्रैंड होटल लौटा। उसके असबाब का एक बड़ा सा ढेर हाल में रक्खा था।

“सब ठीक हो गया, महँगूराम ?” उसने प्रधान बेटर से पूछा ।

“जी हॉ, हुजूर । डाकगाड़ी सबेरे नौ बजकर बीस मिनट पर रवाना होती है । कार पौने नौ बजे हाज़िर रहेगी । आपकी सीट रिज़र्व हो चुकी है । इतमीनान से जाइएगा; जल्दी करने की कोई ज़रूरत नहीं ।”

लिफ्ट पर सवार होकर वह ऊपर गया, अपने कमरों के सामने पहुँचा और दरवाज़ा खोलकर अन्दर गया । बैठक में जाकर उसने एक गिलास में विह्स्की डँडेली और उसमें सोडा मिलाया । गिलास उठाकर वह पीने ही जा रहा था कि एकाएक शयनागार का दरवाज़ा खुला । एक व्यक्ति हाथ में रिवाल्वर लिये हुए सामने खड़ा था । प्रकाश के शरीर में सनसनाहट दौड़ गई, और वह विस्मय भरी दृष्टि से उसकी ओर देखने लगा ।

“तुम कौन हो और क्या चाहते हो ?” मदिरा से भरा हुआ गिलास साइड-बोर्ड पर रखकर उसने पूछा ।

रिवाल्वर ताने हुए वह व्यक्ति बैठक में आ गया । वह लम्बा और दुबला-पतला था; उसके कपड़े मैले थे । उसकी दाढ़ी बढ़ी हुई थी, बाल बिखरे हुए थे और उसकी बड़ी-बड़ी आँखों में अस्वाभाविक चमक थी । देखने में वह बिलकुल पागल सा लग रहा था । लेकिन जब वह बोला, तो उसके कण्ठ-स्वर में उन्माद का कोई लक्षण नहीं था ।

“मैं राजमोहन वर्मा हूँ ।” उसने उत्तर दिया — “यहाँ मैं क्यों आया हूँ, इसका अनुमान तुम आसानी से लगा सकते हो ।”

प्रकाश कायर नहीं था, लेकिन इससे इन्कार नहीं किया जा सकता कि परिस्थिति विषम थी । वह अपनी आँखों से अपने और नवागन्तुक के बीच का फासला नापने लगा । रिवाल्वर उसी तरह तना रहा ।

“क्या तुम मेरी हत्या करना चाहते हो ?”

“बेशक ।”

“यह जानते हो कि इसके लिए तुम्हें फाँसी मिलेगी ?”

“फाँसी मुझे नहीं मिलेगी ।” राजमोहन ने स्थिर स्वर में उत्तर दिया—“तुम्हें मारने के बाद मैं आत्महत्या कर लूँगा ।”

“जल्दबाजी से काम मत लो ।” प्रकाश ने शान्त स्वर में अनु-रोध किया—“मेरा ख्याल है कि तुम समझदार आदमी हो । मैं न्याय का पक्षपाती हूँ और हर समझदार आदमी से ऐसी ही आशा रखता हूँ । मेरी हत्या और अपनी आत्महत्या क्यों करना चाहते हो ?”

“वही पुराना किस्सा है,” राजमोहन ने कटु स्वर में उत्तर दिया—“हम दोनों अपनी रचनाओं में इसे इतनेमाल कर चुके हैं—वही औरत वाला मामला है ।”

“मीरा कपूर ?”

रिवाल्वर कुछ और उठ गया ।

“उसका नाम लेने की जरूरत नहीं ।” राजमोहन ने गुर्राकर कहा—“हम दोनों सारी बातें जानते हैं ।”

“नहीं, सारी बातें हम नहीं जानते—कम से कम तुम नहीं जानते । उस आराम-कुरसी पर बैठ जाओ, तो मैं तुम्हें वह सब अभी बतला दूँ जो तुम नहीं जानते ।”

“नहीं, अब मैं कुछ नहीं सुनूँगा । तुम्हें अब दो-चार सेकेण्ड से ज्यादा जिन्दा रहना नहीं है, और मैं नहीं चाहता कि तुम्हें अब भूट बोलने का मौका दूँ ।”

“भूट बोलने को जरूरत नहीं । सच्ची बातें काफी हैं ।”

“सच्ची बातें ये हैं कि उस रात को जब तुमने भोजन और नृत्य का आयोजन किया था और उसके बाद कई दिनों तक वह इस होटल में तुम्हारी मेहमान बनकर रही, और दो-तीन दिन हुए एक

रात को इस होटल में उसने तुम्हारे साथ नाश्ता किया और बाद में तुम्हारे साथ यहाँ आई।”

“तुम्हें इतला तो बिलकुल ठीक मिली है।” प्रकाश ने कहा।

“मैं सहन में मौजूद था, और रोका न जाता तो उसी समय यहाँ आकर तुमसे निपटता। उस रात को मैं नशे में था।..... इस समय होश में हूँ। किसी के लिए कोई सन्देश छोड़ जाना चाहते हो? जल्दी करो।”

प्रकाश की दृष्टि बड़ी तीक्ष्ण थी। राजमोहन की आँखों में उसे एक विचित्र रहस्यमय भाव की झलक दृष्टिगोचर हुई। सहसा उस भाव का तात्पर्य उसकी समझ में आ गया। उसका सम्बन्ध था मदिरा से भरे हुए उस गिलास से जो प्रकाश ने साइड-बोर्ड पर रख दिया था।

“खैर, मुझे मारना ही चाहते हो तो मारो।” प्रकाश ने कहा—
“एक सन्देश छोड़ जाना जरूरी है। सिर्फ चन्द सतरें लिखूंगा। जरूरत से ज्यादा तुम्हें नहीं रोकूंगा।”

“तुम्हारे हक में यही अच्छा होगा।” राजमोहन मुनमुनाया।

“लिखने की मेज कमरे के बीच में थी। प्रकाश उस मेज पर बैठ गया। फिर उसने एक सादा कागज अपनी ओर खींचा और कलम उठाई। साइड-बोर्ड पीछे की ओर था। राजमोहन शयनागारवाले दरवाजे के समीप खड़ा था। कलम चलने लगी। प्रकाश लिख भी रहा था, और कनखियों से पीछे की ओर देख भी रहा था। पीने की इच्छा राजमोहन के मन में जोर पकड़ चुकी थी। उसकी सतृष्ण दृष्टि रह-रहकर मदिरा से भरी हुई सुराही और गिलास की ओर दौड़ रही थी। एक-एक कदम करके वह सावधानी से साइड-बोर्ड की ओर बढ़ने लगा। साइड-बोर्ड के समीप पहुँचकर, बायाँ हाथ फैलाकर, काँपती हुई उँगलियों से गिलास उठाकर वह पीने लगा। रिवाज़ बराबर तना रहा।

प्रकाश लिखता रहा। वह सब कुछ देख रहा था और सावधानी से अंदाज़ लगा रहा था। कार्रवाई करने का मौक़ा अभी नहीं आया था। उसकी क़लम खुरदरे काग़ज़ पर चलती रही। वह पत्र लिखने में निमग्न दिखाई देता रहा। राजमोहन ने ख़ाली गिलास मेज़ पर रख दिया। कई क्षणों तक वह रुका खड़ा रहा फिर हाथ बढ़ाकर उसने सुगही उठाई। बिहस्की उँडेली गई, सोडा मिलाया गया। राजमोहन की दृष्टि ध्यान बँट जाने के कारण प्रकाश की ओर से हट गई। मौक़ा आ गया। ज्यों ही राजमोहन ने गिलास होंठों से लगाया, प्रकाश घूमकर तेज़ी से उछला और उसके हाथ को झटका देकर रिवाल्वर छीन लिया। पाँच-छः सेकेंड में काम हो गया। प्रकाश के मथे पर पसीने की बूँदें उभर आईं और उसका हृदय कृतज्ञता से भर गया। वह कायर नहीं था, किन्तु आकस्मिक मृत्यु किसी को पसंद नहीं आती।

प्रकाश राजमोहन से कहीं अधिक बलिष्ठ था। रिवाल्वर छिन जाने के बाद राजमोहन कुछ देर तक हाथ-पैर चलाता रहा, फिर विवश होकर आरामकुर्सी पर गिरकर हाँफने लगा। उस ओर जाकर रिवाल्वर का अपने बिस्तरे पर फेंककर प्रकाश ने शयनागार का दरवाज़ा बन्द कर दिया। जब वह लौटा तो राजमोहन फिर उसकी ओर झपटा। उसका एक घूँसा प्रकाश के मुख पर लगा। प्रकाश ने उसे फिर शीघ्र ही काबू में करके आराम-कुर्सी पर गिरा दिया। फिर वह उसके सामने तनकर खड़ा हो गया।

“होश की दवा करो, हज़रत,” कड़े स्वर में उसने कहा—
“तुम्हारी क्या मंशा है? जेल की हवा खाना चाहते हो या पागलखाने की सैर करना?”

“मेरी मंशा सिर्फ़ यह थी,” राजमोहन ने गरजकर कहा—
“कि तुम्हारी हत्या कर डालूँ। आज तुम्हें नहीं मार सका तो न सही, एक न एक दिन तो तुम्हें ज़रूर ही मौत के घाट उता-

रूँगा। यह दूसरी बात है कि मेरे वामयाब होने से पहले ही तुम मुझे मार डालो।”

“मेरी हत्या तुम क्यों करना चाहते हो?”

“यह बतलाने की जरूरत नहीं। तुम खुद अच्छी तरह जानते हो।”

प्रकाश किसी को बुरा-भला कहने का आदी नहीं था, लेकिन उस समय उसने उसे जी भरकर फटकारे सुनाई। उसका एक-एक शब्द राजमोहन के हृदय में तीर की तरह चुभा। उन्माद के लक्षण अदृश्य हो गये। राजमोहन का चेहरा बिलकुल उत्तर गया।

“मैंने तुम्हें साफ-साफ बतलाने की कोशिश की है कि मैं तुम्हें क्या समझता हूँ, और मुझे विश्वास है कि तुम्हें दुःख पहुँचाने में सफल हुआ हूँ। मैं आशा करता हूँ कि मेरे शब्द तुम्हें जीवन भर न भूलेंगे। तुम कायर हो और तुम्हारा हृदय हत्यारे का हृदय है। अगर यह बात न होती तो अपने मन में हत्या का विचार लेकर मुझसे निपटने न आते। बिना सच्ची बातें जाने तुमने मान लिया कि मैं दोषी हूँ और मेरी हत्या कर डालने पर आमादा हो गये। इससे यह साबित हो जाता है कि तुममें बुद्धि और विवेक नाम-मात्र को भी नहीं है। तुम उस लड़की के पैर धोने के योग्य भी नहीं हो। तुम अधम हो, पातकी हो, वह पवित्रता के समान पवित्र है। लेकिन सत्य सत्य है। वह तुम्हें चाहती है, इसलिए मुझे सच्ची बातें तुम्हें बतलानी ही पड़ेंगी। उस रात को जब मैं उसे यहाँ ले आया तो मैंने उसे एक अर्धेड़ महिला, मिसेज़ चटर्जी, के सिपुर्द कर दिया। मिसेज़ चटर्जी मेरी माता की सखी थीं और वे मुझे मेरे बचपन से जानती हैं। वह जब तक यहाँ रही तब तक मिसेज़ चटर्जी की मेहमान रही। उस रात को जब तुमने उसे मेरे कमरों—यानी इन कमरों—से निकलते देखा था, उसने मेरे साथ नाश्ता किया था और बाद में थोड़ी देर के लिए वह

यहाँ आई थी। जानते हो, यहाँ मैंने क्या किया था? लो सुनो—कान खोलकर सुनो। मैंने उससे प्रस्ताव किया था कि वह मेरी जीवन-संगिनी बन जाय।”

राजमोहन ने अपना मुख अपने हाथों में छिपा लिया।

“हाँ, मैंने उससे अनुरोध किया कि वह मेरी जीवन-संगिनी बन जाय, लेकिन उसने इन्कार कर दिया। एक ईमानदार आदमी का प्रस्ताव, एक ऐसे आदमी का प्रस्ताव जो उसे सच्चे दिल से चाहता था, उसने अस्वीकार कर दिया। क्यों? इसलिए कि वह तुम्हें चाहती है! अगर वह तुम्हें इस समय इस हालत में देखे तो क्या कहे? ज़रा सोचो तो।”

राजमोहन एकाएक उठ खड़ा हुआ। वह रो रहा था; उसकी आँखें लाल हो गई थीं। लेकिन उस हालत में भी उसके चेहरे से एक अजीब शान टपक रही थी।

“अब आप मुझे जाने दें।” उसने कहा—“आपने जो कुछ कहा, बिलकुल ठीक कहा। मैं जीवित रहने के योग्य नहीं हूँ। मुझसे बड़ी भूल हुई और मैंने सारा खेल चौपट कर दिया। इस समय मुझे ऐसा अनुभव हो रहा है कि मैंने अपने विचारों से उसे दुःख पहुँचाया है। बात वास्तव में ऐसी नहीं है। वह ऐसी बातों से ऊपर है, मुझसे बहुत ऊपर है.....। क्या मैं अब जा सकता हूँ?”

प्रकाश ने उसे सिर से पैर तक देखा। पराजित आशाओं और महत्वाकांक्षाओं का वह जीता-जागता चित्र था।

“कहाँ जाओगे?”

“इससे कोई मतलब नहीं।” राजमोहन ने नैराश्यपूर्ण स्वर में उत्तर दिया—“अगर मेरा खिलौना आप मुझे दे दें तो बड़ी कृपा हो। उसे मैं आपके विरुद्ध इस्तेमाल नहीं करूँगा; विश्वास कीजिए।”

“आत्म-हत्या करने का विचार है ? अभी बच्चे हो । मिस कपूर ने मुझे बतलाया था कि तुमने कुछ कहानियाँ लिखी हैं और लेखक बनने का हौसला रखते हो ।”

“वह सब खत्म हो गया ।”

“क्यों ?”

“मेरी हालत देखिए ।” राजमोहन ने उत्तेजित स्वर में उत्तर दिया—“क्या मैं खुद आपके प्रश्न का उत्तर नहीं हूँ ? मेरा दिल टूट गया है, मेरी हिम्मत पस्त हो गई है । मैंने कुछ कहानियाँ लिखी थीं, और मैं उन्हें अच्छा समझता था । एक व्यक्ति ने एक ऐसे व्यक्ति से मेरा परिचय कराया जो एक सम्पादक था और एक नई पत्रिका निकालने जा रहा था । वह व्यक्ति मेरे लिए शानि बन गया । उसने मेरी कहानियाँ खीदीं और उन्हें एक निहायन रद्दी, गन्दी, पत्रिका में प्रकाशित किया । मुझे बड़ा दुःख हुआ, मैं सनक सा गया । वह इस बात पर जोर देने लगा कि मैं साधारण कोटि की सनसनीखेज चीजें लिखूँ । मेरे ऊपर उसका रङ्ग चढ़ने लगा । मैं उसके साथ शराबखानों और गन्दे कुर्शों में चक्कर काटने लगा । मुझे उसका साथ छोड़ देना चाहिए था, लेकिन मैं अपनी जरूरतों से लाचार था । मुझे रुपयों की सख्त जरूरत थी । मीरा का कर्ज मेरे ऊपर चढ़ा था, और यह बात मेरे दिल में नश्वर की तरह चुभती रहती थी । इसके अलावा अपने खर्च के लिए भी मुझे रुपयों की जरूरत थी । उस दिन जब मैंने आपकी पार्टी में जानवरों का-सा बर्ताव किया था, मेरी पहली कहानी उस गन्दी पत्रिका में प्रकाशित हुई थी ।”

“कहते जाओ ।”

“आगे का हाल और भी बुरा है । मैंने उसका साथ नहीं छोड़ा । मैंने अपना उपन्यास और नाटक लिखना बन्द कर दिया, कविताएँ लिखना भी छोड़ दिया । और मैं वैसी ही लचर चीजें

लिखने लगा जैसी वह चाहता था। जो मजदूरी मुझे मिलती उसका अधिकांश मैं उसके साथ शराबखानों में गँवा देता। अगर मैं आवारों का सा जीवन व्यतीत न करता होता, तो वैसी ओछी और निर्मूल बातों पर विश्वास न करता। मुझे इस बात की खुशी है कि मैंने आपकी हत्या नहीं की। अब आप कृपा कर मेरा रिवाज़ दे दे और मुझे जाने दें।”

“तुम्हारी उम्र क्या है?”

“चौबीस वर्ष।”

एक सिगरेट जलाकर प्रकाश ने बक्स उसकी ओर बढ़ा दिया। एक क्षण हिचकिचाकर राजमोहन ने भी एक सिगरेट जला ली।

“चौबीस वर्ष!” प्रकाश ने कहा—“इतनी कम उम्र में आत्म-हत्या की बात सोचते हो! अभी तुम जानते ही क्या हो? जीवन और मृत्यु के महत्त्व को समझते हो, अपने को अच्छी तरह जानते हो, इस बात की जाँच कर चुके हो कि तुम्हारे अन्दर क्या है, क्या नहीं? बहुतेरे मूर्खों से मेरी भेट हो चुकी है, लेकिन तुम सा बेवक़फ़ आदमी मैंने आज तक नहीं देखा।”

“मेरे न रहने से पृथिवी का भार कुछ हलका हो जायगा।” दुःख-सूचक स्वर में राजमोहन ने कहा—“मूर्खों को संसार से हटा देना चाहिए।”

“ठीक है। लेकिन अभी यह देखना बाकी है कि तुम पैदायशी बेवक़फ़ हो या केवल मूर्खतापूर्ण कार्य करने ही के आदी हो। मेरा खयाल है कि तुम्हें दूसरी श्रेणी के मूर्खों में रखना पड़ेगा। मेरी तरफ़ देखो। मैं यह जानना चाहता हूँ कि तुम ईमानदार हो या नहीं।”

राजमोहन की आँखें एक क्षण के लिए चमक उठीं। तब वह बात उसे याद आ गई।

“मैं ईमानदार हूँ।” उसने शान्त स्वर में कहा।

“जिस अनुराग की वह अधिकारिणी है वह तो तुम उसे नहीं दे सकते, लेकिन अपने ढङ्ग से क्या तुम मीरा कपूर को चाहते हो?”

“बेशक चाहता हूँ। मैं शराबी हूँ, आवारा हूँ, बदमिजाज हूँ, लेकिन किसी दूसरी लड़की का हाथ मैंने आज तक नहीं पकड़ा।”

“तुम्हें मौका दूँ?”

“किस तरह का मौका? आप मेरे लिए क्या कर सकते हैं? रुपये मैं आपसे ले नहीं सकता—कर्ज के तौर पर भी नहीं। मीरा अब कभी मुझसे बात भी न करेगी और रुपये लूँगा तो शराब में चढ़ जायँगे।”

“मैं तुम्हारे लिए कुछ और ही करूँगा। मीरा के बारे में तुम्हारा खयाल ठीक है। अभी कुछ समय तक तुम्हें उसके सामने जाने का भी हक नहीं है। अच्छा सुनो, तुम्हारे लिए क्या करूँगा। कल सबरे मैं लक्ष्मीनगर जा रहा हूँ और हो सका तो वहाँ से इंग्लैंड जाऊँगा। मेरी कई पुस्तकें इंग्लैंड और अमेरिका में छप चुकी हैं। एक नई किताब तैयार हो रही है। मैं तुम्हें अपने साथ ले चलूँगा।”

“आप क्या करेंगे?”

“तुम्हें अपने साथ ले जाऊँगा।” प्रकाश ने कहा—“तुम मेरे सेक्रेटरी के तौर पर कार्य करना। लक्ष्मीनगर में तुम्हारे लिए नये कपड़े खरीद दूँगा। अपना उपन्यास और नाटक भी साथ लेते चलना। मैं रास्ते में देखूँगा कि उनमें कितना तत्त्व है। बस एक शर्त है—मैं जब कहूँगा तभी तुम शराब पी सकोगे।”

राजमोहन बठ खड़ा हुआ। भावावेश से उसका साग शरीर थरथरा रहा था। ऐसा लग रहा था जैसे एकाएक उसकी काया-पलट हो गई हो। आशा की ज्योति उसके चेहरे से प्रस्फुटित हो रही थी।

“आप ठीक कह रहे हैं?”

“त्रिलकुल ठीक कह रहा हूँ। अपने कपड़े-लत्ते और कागज-पत्र लेकर कल सबेरे आठ बजे यहाँ आ जाना। रुपयों की जरूरत तो नहीं है?”

“जी नहीं। धन्यवाद। इस वक्त की जरूरतों के लिए मेरे पास काफी रुपये हैं। मेरी इतनी सहायता आप क्यों कर रहे हैं? कृपया बतलाइए।”

“मीरा के लिए। मुझे आशा हो रही है कि एक दिन मुझे यह सोचकर खुशी होगी कि मैंने तुम्हारे लिए जो कुछ किया उसके तुम योग्य थे। अपना रिवाज़ लो?”

“जी नहीं; धन्यवाद। उसकी अब मुझे जरूरत नहीं।”

“आदमी बनो और अपने को पूरी तरह काबू में रखो। शराब पियोगे?”

राजमोहन सिहर उठा।

“नहीं, माफ़ कीजिए। मैं कल सबेरे आठ बजे यहाँ आ जाऊँगा। नमस्कार।”

“नमस्कार।”

दूसरे दिन सन्ध्या के समय मीरा को दो तार मिले। दोनों नागपुर से आये थे। एक में लिखा था—

“नमस्कार! मुझे माफ़ करो।—राजमोहन।”

काँपती हुई उँगलियों से उसने दूसरा तार खोला। उसमें निम्नलिखित सन्देश था—

“राजमोहन को अपने साथ ले जा रहा हूँ। अगर वास्तव में उसमें कुछ तत्त्व है तो उसे आदमी बनाकर तुम्हारे पास भेजूँगा। अगर नहीं है, खुद तुम्हारे पास आऊँगा। मेरे ऊपर भरोसा कर सकती हो।—प्रकाश।”

१३

रामलाल धन के लिए सब कुछ कर सकता था। एक धनी विधवा, मिसेज़ उषा तोमर, से उसने विवाह कर लिया। मिसेज़ तोमर उससे बीस वर्ष बड़ी थीं, लेकिन उनके करोड़ों रुपये उस कम्पनी में लगे हुए थे जिसमें रामलाल काम करता था। उनके पहले पत, स्वर्गीय मिस्टर तोमर, उस कम्पनी के सांभालदार थे। पहले पति से आपके एक पुत्र भी था।

मिसेज़ तोमर से विवाह कर लेने के कुछ समय बाद रामलाल की सबसे बड़ी इच्छा पूरी हो गई। वह उस कम्पनी का हिस्सेदार बना दिया गया। हिस्सेदार तो वह बन गया, लेकिन चेकों पर हस्ताक्षर करने का अधिकार उसे नहीं मिला। कारण यह था कि कम्पनी में उसकी कोई पूँजी नहीं लगी थी। यह बात उसे बहुत बुरी लगी। उसने अपनी स्त्री से अनुरोध किया कि कम्पनी में लगा हुआ अपना धन वे उसके नाम कर दें, लेकिन उन्होंने इसे हँसकर टाल दिया।

अब रामलाल को दिन-रात यह चिन्ता सताने लगी कि वह जल्द से जल्द करोड़पति बन जाय। इसके लिए वह कम्पनी के बाहर भी प्रयत्न करने लगा। शेयरों के खरीद-करोख्त के सिल-सिले में वह एक प्रसिद्ध स्टॉक ब्रोकर के कार्यालय में अक्सर दिखाई देता। इस ओर भी उसे शीघ्र ही यथेष्ट सफलता प्राप्त हुई। उसका हौसला दिन-प्रति-दिन बढ़ता गया। लेकिन चालाक आदमी अक्सर धोखा भी खा जाता है। एक बार उसने एक रेलवे कम्पनी के शेयर खरीदे। उसे आशा थी कि शीघ्र ही उनसे उसे बहुत बड़ा मुनाफ़ा होगा। लेकिन पाँसा उलटा पड़ा। उसकी आशा के विपरीत उस कम्पनी में एकाएक हड़ताल हो गई। उसके शेयरों का मूल्य बहुत अधिक घट गया। मुनाफ़े के बजाय

घाटा हो गया। स्टाक-ब्रोकर रुपये अदा करने के लिए तत्काज्जा करने लगा। रामलाल बड़ी कठिनाई में फँस गया। जितने रुपये अदा करने थे उतने उसके पास नहीं थे। विकट समस्या सामने आ खड़ी हुई।

बाबू श्यामलाल वर्मा का व्यवसाय बिलकुल चौपट हो गया। फ़ैक्टरी बेचकर ऋण अदा कर चुकने के बाद वे बिलकुल निर्धन हो गये। कालीनगर आकर उन्हें नौकरी का आश्रय ग्रहण करना पड़ा। रामलाल के कार्यालय में वे चौकीदार हो गये।

रात के आठ बज चुके थे। मेसर्स स्टोन दारूवाला ऐंड कम्पनी के कार्यालय का सदर दरवाजा खोलकर रामलाल ने अन्दर प्रवेश किया। उसके ऊपर तुरन्त टार्च की तेज रोशनी पड़ी। श्यामलाल बेंच छोड़कर उठ खड़े हुए।

“मुझे यह देखकर खुशी हुई, वर्मा।” रामलाल ने शान से कहा—“कि तुम बड़ी मुस्तैदी से अपना काम करते हो। सब लोग चले गये?”

“कई घंटे पहले ही चले गये।” श्यामलाल ने कौतूहल भरे स्वर में उत्तर दिया।

“मिस्टर दारूवाला के कमरे में मैं कुछ कागज छोड़ गया था। उनकी इस समय मुझे बड़ी सख्त जरूरत है। उन्हें लेने आया हूँ। और यहाँ आ गया हूँ तो दो-चार जरूरी चिट्ठियाँ भी लिखूँगा। अगर मेरे चलने-फिरने की आहट मिले तो परेशान मत होना।”

वह आगे बढ़ गया। श्यामलाल फिर अपने स्थान पर बैठ गये। मिस्टर दारूवाला के कमरे में जाकर रामलाल ने रोशनी जलाई और दरवाजा बन्द कर दिया। कुर्सी पर बैठकर वह कई क्षण तक आहट लेता रहा। जब उसे विश्वास हो गया कि श्यामलाल टहल नहीं रहे हैं, तो उसने तालियों के एक गुच्छे से एक ताली चुनकर मिस्टर दारूवाला का डेस्क खोला। वह कुंजी

उसने कुछ विशेष कारणों से तैयार करवाई थी और कुछ विशेष सूचनाएँ प्राप्त करने के लिए उसे कई बार इस्तेमाल कर चुका था। इस बार वह एक दूसरी ही चीज़ खोज रहा था। पाँच मिनट तक खोजने के बाद वह चीज़ उसे मिल गई—चाभियों का एक गुच्छा जिसमें कम्पनी के स्ट्रांग-रूम की चाभी थी। डेस्क बन्द करके वह फिर आइट लेने लगा। इमारत के भीतर-बाहर विचित्र निःस्तब्धता छाई हुई थी। रोशनी बुझाकर वह उस कमरे से बाहर निकला और दबे-पाँव अपने कमरे में पहुँचा। वहाँ विचारों में डूबा हुआ वह कई क्षणों तक चुपचाप खड़ा रहा। फिर वह वहाँ गया जहाँ श्यामलाल बैठे हुए थे।

“श्यामलाल !” उसने कहा—“मुझे एक अस्त्रचार की बड़ी सख्त जरूरत है। जाकर खरीद लाओ। यह लो पैसे। तब तक तुम्हारे बजाय मैं रखवाली कर लूँगा।”

लाठी सँभालकर श्यामलाल धीरे-धीरे उठ खड़े हुए।

“मुझे हुकम मिला है कि अपनी ड्यूटी के समय मैं दफ्तर से कहीं बाहर न जाया करूँ। मुझे बाहर भेजने की जिम्मेदारी आप अपने ऊपर लेने को तैयार हैं ?”

“बेशक।” रामलाल ने उत्तर दिया—“सदर दरवाजा बन्द करते जाना। मैं अपने कमरे में रहूँगा।”

श्यामलाल चले गये। जब तक श्यामलाल के पैरों की आवाज़ सुनाई देती रही तब तक रामलाल चुपचाप खड़ा रहा। फिर वह तहखाने की ओर चला जहाँ स्ट्रांग-रूम था। स्ट्रांग-रूम के सामने पहुँचकर वह दारूवाला की चाभियों के गुच्छे में उस कमरे की चाभी खोजने लगा। इस काम में कुछ समय लग गया। कुंजी ताले में लगी। दरवाजा किसी तरह खुला। अन्दर जाकर, खटका दबाकर, उसने रोशनी की। लोहे की बड़ी-बड़ी आलमारियाँ चारों ओर दीवारों से लगी खड़ी थीं। हर

आलमारी पर लेबिल लगा था और नम्बर पेंट किया हुआ था। १८ नम्बरवाली आलमारी के सामने वह रुका। लेबिल पर लिखा था —‘सिक्योरिटीज’। बस इसी आलमारी से उसे काम था। वह उसकी कुंजी खोजने लगा। ज़रा देर में वह मिल गई। कुंजी ताले के अन्दर पहुँचकर घूमी, आलमारी का पट खिसककर आप ही आप खुल गया। कागज़ों के मुहरबन्द पैकेट आलमारी के खानों में बड़ी सफ़ाई से सजे रखे थे। उसकी आँखें चमकने लगीं।

वह उन पैकेटों को उलट-पलटकर देखने लगा। प्रत्येक पैकेट पर उसके अन्दर रखे हुए कागज़ों का संक्षिप्त विवरण और उनका मूल्य दर्ज था। कुछ देर तक देखते रहने के बाद उसने गवर्नमेंट बांडों के दो पैकेट चुन लिये। हिसाब लगाकर उसने देखा—उन बांडों की कुल कीमत थी ४१००००) रु०। करीब-करीब इतने ही रुपयों की उसे ज़रूरत थी। उन पैकेटों को उसने अपनी जेब में डाल लिया और अन्य बंडलों को फिर पहले ही की तरह तरतीब से रख दिया। इसके बाद उसने आलमारी बन्द कर दी। सहसा उसे ज्ञात हुआ कि उसका सारा शरीर काँप रहा है। एक विचित्र भय उसके हृदय में जोर मार रहा था और उसके हाथ-पैर बेक्राबू हुए जा रहे थे। उसने किसी के पैरों की आवाज़ नहीं सुनी, लेकिन वह जान गया कि वह वहाँ अकेला नहीं है। उसने घूमकर देखना चाहा। ठीक उसी समय श्यामलाल वर्मा की कड़ी आवाज़ कमरे में गूँज उठी।

“हाथ ऊपर उठाओ ! जल्दी करो !”

उसने तुरन्त उस आदेश का पालन किया। वह थर-थर काँप रहा था—कायरता की जीती-जागती मूर्ति बना काँप रहा था। हाथ में रिवाल्वर लिये श्यामलाल वर्मा दरवाज़े पर खड़े थे।

“रामलाल ! हे ईश्वर, यह तो रामलाल है !”

रामलाल कई क्षणों तक अपने को किसी तरह सँभाल नहीं सका। नवागन्तुक को पहचान लेने के बाद भी उसकी घबराहट कम नहीं हो सकी। बाद में उसे मालूम हुआ कि यदि वह शान्त रह सकता, तो स्ट्रांग-रूम में अपनी उपस्थिति का कोई न कोई बहाना अवश्य सोच निकालता और आसानी से अपनी सफाई दे देता। लेकिन उसके तो हाथ-पाँव फूल गये और उसने स्वयं अपना अपराध साबित कर दिया। लड़खड़ाकर वह पीछे हट गया। श्यामलाल वर्मा ने अपने रिवाज़ के मुख नीचे झुका दिया।

“मुझे नहीं मालूम था कि यहाँ तुम हो।” उत्तेजित, अस्वाभाविक स्वर में श्यामलाल ने कहा—“मैंने तो समझा था कि कोई चोर किसी तरह अन्दर आ गया है। अब यह उचित होगा कि तुम उन बांडों को चुपचाप रख दो।”

“नहीं, उन्हें मैं नहीं रख सकता।” रामलाल ने सँभलकर कहा—“दो-चार दिनों के लिए मुझे उनकी ज़रूरत है। मेरे कमरे में चलिए तो मैं सारा मामला आपको समझा दूँ।”

“तुम चाहे जो सफाई दो, लेकिन एक बात समझ लो। उन बांडों को मैं तुम्हें यहाँ से नहीं ले जाने दूँगा। इसलिए अच्छा यही होगा कि इसी वक्त उन्हें रख दो।”

“मैं उन्हें कर्ज़ के तौर पर कुछ दिनों के लिए ले रहा हूँ।” रामलाल ने कहा—“एक पखवारे के अन्दर वे वापस आ जायेंगे।”

“यह नहीं हो सकता। इस कमरे की कुंजी मुझे दो।”

विरोध करने की शक्ति अब भी रामलाल में नहीं थी। उसने चुपचाप चाभियों का गुच्छा दे दिया। दरवाज़ा बन्द कर दिया गया। तब बठोर दृष्टि से उसकी ओर देखते हुए श्यामलाल ने उसे चलने का इशारा किया।

“पैकेट मुझे दे दो।” उसके कमरे में पहुँचकर श्यामलाल ने दृढ़तापूर्वक आदेश दिया।

रामलाल ने जेब से दोनों पैकेट निकालकर मेज पर फेंक दिये । फिर वह अपनी कुर्सी पर अस्त-व्यस्त बैठ गया ।

“देखिए, जनाब,” वह मुनमुनाया—“यह याद रखिए कि मैंने हा आपको यहाँ नौकरी दिलवाई है । अपने स्ट्रांग-रूम में जाने का मुझे पूरा अधिकार है । मैं इस कम्पनी का हिस्सेदार हूँ ।”

श्यामलाल ने पैकेट उठा लिये । फिर रामलाल के सामने एक कुर्सी पर बैठकर वे आगे की ओर झुक गये ।

“रामलाल !” उन्होंने कहा—“जब मैं यहाँ नौकर हुआ था तो स्वयं मिस्टर दारूवाला ने मुझे कुछ बातें बतलाई थीं । उनमें से एक बात यह भी थी कि उनके और मिस्टर स्टोन के अतिरिक्त स्ट्रांग-रूम में किसी को जाने का कोई अधिकार नहीं है । स्ट्रांग-रूम की चाभियाँ उनके डेस्क में रखी रहती हैं । उनकी आज्ञा के बिना तुम्हें उनके कमरे में जाने और उनका डेस्क खोलने का कोई हक नहीं था । स्ट्रांग-रूम में तुमने एक चोर को हैसियत से प्रवेश किया था । इस बात से तुम इनकार नहीं कर सकते । तुम्हारा चेहरा खुद तुम्हारे खिलाफ गवाही दे रहा है । इसका क्या मतलब है ?”

“इसका मतलब साफ तौर पर यह है कि स्टाक-एक्सचेंज में मुझे घाटा हो गया है । कल मुझे चार लाख रुपये की जरूरत है । किसी और तरीके से कल तक इतने रुपये पा सकने की आशा मुझे नहीं है । मैं उन बांडों को दो-एक हफ्ते के लिए कर्ज के तौर पर लेना चाहता था । परिस्थिति सुधर जाने के बाद मैं उन्हें वापस कर देता । उन बांडों को गिरवी रखकर मेरा स्टाक-ब्रोकर मुझे रुपये कर्ज देने को राजी हो गया था और सब ठीक हो जाता अगर आप दखल न देते ।”

“कर्ज के तौर पर लेना चाहते थे !” कटु स्वर में श्यामलाल ने कहा—“कौन चोर ऐसा होगा जो पकड़ जाने पर इस तरह की सफाई न देगा ?”

“काश मैं आपको यहाँ नौकरी न दिलाता ! आपकी धार्मिकता आपको ले डूबी और आज मुझे भी डुबाये दे रही है। आप क्या लेकर उन बांडों को मुझे दे देंगे ? दस हजार रुपये ?”

श्यामलाल का ध्यान एकाएक दूसरी ओर चला गया। सहसा उन्हें याद आ गई एक दूसरी खाली इमारत, दबे पैरों की आहट, एक दरवाजे के बन्द किये जाने की आवाज। वे मेज पर झुक पड़े।

“रामलाल ! अगर तुम चाहते हो कि माफ़ कर दिये जाओ और तुम्हारे ऊपर दया की जाय, तो एक बात बतला दो। सच-सच बतलाना। वज्जोराबाद से तुम लोगों के खाना होने के समय मेरे कैश-बक्स से ५००) चोरी चले गये थे।”

“वह रकम मैंने ले ली थी।” रामलाल ने निर्लज्जतापूर्वक उत्तर दिया—“मैंने सोचा था कि उन रुपयों पर मेरा अधिकार है। जब तक मैं आपके कारखाने में काम करता रहा, आपने मुझे ठीक वेतन नहीं दिया और जब हम आपसे अलग होने लगे तो राजमोहन और मीरा को आपने पाँच-पाँच सौ रुपये भेंट किये लेकिन मेरे पैतृक धन के अतिरिक्त मुझे कुछ नहीं दिया। कारखाने की कुञ्जी मेरे पास थी, मैंने जाकर ५००) ले लिये।”

श्यामलाल के चेहरे पर शान्ति और घृणा के भाव व्यक्त हो गये।

“और मैंने समझा था कि वह राजमोहन की करतूत थी !” ग्लानि-सूचक स्वर में वे मुनमुनाये—“मैंने सोचा था कि राजमोहन ने चोरी की थी और मीरा को उस चोरी का हाल मालूम था। उस बेचारे को अपने मन में मैं चोर समझता था। मेरा हृदय उन दोनों के लिए पत्थर बन गया था।……हे ईश्वर !”

कई क्षणों तक श्यामलाल विचारों में डूबे हुए मूर्तिवत् बैठे रहे। फिर वे उठ खड़े हुए।

“मेरे साथ चलो और इन बांडों को रख दो,” उन्होंने कहा—
“उसके बाद मैं तुमसे एक जरूरी बात कहूँगा।”

“जरा सुनिए तो……।”

“नहीं, मैं उस समय तक कुछ नहीं सुनूँगा जब तक ये बांड स्ट्रांग-रूम में रख नहीं दिये जायेंगे।” कठोर स्वर में उन्होंने कहा —“यह काम हो जाने के बाद तुम्हारी परेशानी के बारे में मैं तुमसे बात करूँगा।”

रामलाल अनिच्छापूर्वक उठा। वे साथ-साथ उस कमरे से बाहर निकले, गलियारे में होकर तहखाने की सीढ़ियों से नीचे उतरे और स्ट्रांग-रूम के सामने पहुँचे। स्ट्रांग-रूम खोला गया। रामलाल ने चुपचाप १८ नम्बरवाली आलमारी खोली और दोनों पैकेट यथास्थान रख दिये। फिर वे रामलाल के कमरे में वापस आये। क्रोध और भय से रामलाल का चेहरा बिगड़ गया।

“तो इसका मतलब यह है कि मैं तबाह हो जाऊँ?” कराह-कर उसने कहा।

“बैठ जाओ और मुझे बतलाओ कि इस कठिनाई में तुम कैसे फँसे।” श्यामलाल ने शान्त स्वर में कहा।

“इस कम्पनी में पूँजी लगाने के लिए मुझे रुपयों की जरूरत थी।” रामलाल ने कहा —“हिस्सेदार बन जाने के बाद से स्टाक-एक्सचेंज में निजी तौर पर सफलतापूर्वक व्यवसाय करता आ रहा था। हाल में मुझसे एक भूल हो गई। मैंने एल० आई० पी० रेलवे के शेयर खरीद लिये। उस समय उन शेयरों का मूल्य घटा हुआ था और मुझे आशा थी कि उनकी स्थिति शीघ्र ही सुधर जायगी और मुझे काफी बड़ा मुनाफा होगा। लेकिन मेरा खयाल गलत निकला। उस कम्पनी में एकाएक हड़ताल हो गई और उसके शेयरों का मूल्य और भी घट गया। एक प्रसिद्ध राजनीतिज्ञ ने मुझे आश्वासन दिया था कि हड़ताल नहीं होगी। मैं धोखा खा गया।”

“तुमने जुआ खेला, हार गये और चोर बनने की तैयारी कर बैठे ! अच्छा, अब सुनो । कल तुम्हें कितने रुपये की जरूरत है ? ठीक रकम बतलाओ ।”

“चार लाख, पाँच हजार रुपये ।”

“मुझे अपने स्टाक-ब्रोकर का नाम बतलाओ । तुम्हारा हिसाब मैं साफ कर दूँगा ।”

रामलाल आश्चर्य से चकित रह गया ।

“फिजल की बात मत कीजिए, जनाब !” उसने झल्लाकर कहा—
“आप तो खुद तबाह हो चुके हैं । इतने रुपये कहाँ पा जायेंगे ? अपनी जान बचाने के लिए भी आपको इतने रुपये नहीं मिल सकते ।”

“मेरी आर्थिक स्थिति के बारे में तुम्हारा खयाल बिल्कुल गलत है । जो रकम तुमने बतलाई है वह मैं अदा कर दूँगा और जब तक हड़ताल समाप्त नहीं होगी तब तक तुम्हारे स्टाक की निगरानी भी करूँगा ।”

उनके स्वर और ढंग से यह स्पष्ट था कि वे बिल्कुल सत्य कह रहे हैं । लेकिन उनकी बातें समझने में रामलाल का कठिनाई हो रही थी । अब भी अविश्वास-सूचक दृष्टि से वह उनको ओर देख रहा था ।

“तुम उन लोगों में हो, रामलाल,” उसके भूतपूर्व अभिभावक ने कहा—“जो स्वभावतः चतुर होते हैं, लेकिन जिनमें अत्यधिक अहंमन्यता भी होती है । तुम अपने निर्णय पर निर्भर रहते हो और बिना अच्छी तरह सोचे-समझे दूसरों के बारे में राय क़ायम कर लेते हो । चूँकि मैंने अपनी फ़ैक्टरी में नई मशीनें लगाने से इन्कार कर दिया, इसलिए तुमने मुझे मूर्ख समझ लिया । उस फ़ैक्टरी में नई मशीनें न लगाने के दो कारण थे—पहला यह कि उस फ़ैक्टरी की इमारत पुरानी थी और काफ़ी बड़ी नहीं थी और

दूसरा यह कि वजीराबाद की तीन अन्य फ़ैक्टरियाँ, जिनमें बिलकुल नई मशीनें लगी हुई हैं और जिनका संचालन आधुनिक ढंग से हो रहा है, मेरी ही हैं। यह बात बिलकुल निर्मूल है कि मुझे कोई घाटा हुआ है। अपने धन के सम्बन्ध में मैंने कभी किसी से कुछ नहीं कहा—लाक़न यह सत्य है कि मैं अमीर हूँ।”

“तब आप यहाँ २५) महीने पर नौकरी क्यों कर रहे हैं?” रामलाल ने कौतूहलपूर्ण स्वर में पूछा।

“बतलाता हूँ। यह एक तरह का प्रायश्चित्त है। मैं तीन बच्चों के जीवन का संरक्षक था। उनका पालन-पोषण करने और उन्हें पढ़ाने-लिखाने की जिम्मेदारी मेरे ऊपर थी। संरक्षक की हैसियत से मेरे विचार चाहे कितने ही अच्छे रहे हों, सत्य यह है कि मैं असफल रहा। राजमोहन शराबी हो गया है और इधर-उधर भटक रहा है। मीरा की बात सोचने की भी मुझे हिम्मत नहीं होती। अगर वह अब भी बची हुई है, तो इसमें मुझे कोई श्रेय नहीं है। तुम हृदयहीन हो और तुम्हारी अन्त-रात्मा भी अन्धकार में पड़ी हुई है, फिर भी अपने ढङ्ग से तुम आर्थिक सम्पन्नता की ओर बढ़ रहे थे। लेकिन आज तुम्हारी हालत भी बिगड़ गई है। जब अपनी असफलता की बात मुझे ज्ञात हुई, तो मैंने प्रायश्चित्त करने का सङ्कल्प किया। मैंने भी अपना जीवन नये सिरे से आरम्भ किया और जो कुछ कर सका पैदा करने लगा। कभी-कभी मैं यह ज़रूर सोचता था कि तुम मुझे चौकीदारी से अच्छी जगह दिला सकते थे। खैर, मैं खुश हूँ कि भाग्य ने आज इस तरह मुझे इस कम्पनी की वास्तविक सेवा करने का अवसर प्रदान किया।”

रामलाल ने अपने माथे से पसीना पोंछा। उसकी जान में जान आई। अब वह तबाली और बेइज्जती से बच जायगा।

“तो आपकी फैक्टरी खरीदकर मैंने धोखा खाया ! आप बराबर जानते थे कि वहाँ का व्यवसाय आप ही के हाथ में रहेगा और हम आपसे किसी तरह पेश नहीं पा सकेंगे ?”

“बेशक !”

रामलाल उनकी ओर स्थिर दृष्टि से देखने लगा । उसकी आँखों में किञ्चित् सराहना का भाव था ।

“मैं नहीं जानता था,” उसने कहा—“कि व्यवसाय के मामले में कोई मुझे इस क्रूर बेवकूफ बना सकता है !”

“जो व्यक्ति अपने को बड़ा चालाक लगाता, और केवल अपनी बात सोचता है और अनुचित साधनों से काम लेता है, वह हर तरह के सौदे में अकसर घाटा उठाता है । मेरे विश्वासी क्लर्क को फोड़ लेने की कोशिश करना और उसकी अन्तरात्मा को एक मामूली रकम देकर खरीद लेना, तुम्हारे ही अनुरूप था रामलाल । वह बड़ी बेवकूफी का काम था ।”

“क्यों ?” रामलाल ने पूछा—“आपने उस बेचारे को बीस वर्ष तक बुरी हालत में रक्खा । ऐसी हालत में उसे आपके विरुद्ध विद्रोह करने का मौका देना कैसे बुरा कहा जा सकता है ?

श्यामलाल मुस्कराये । उनकी उस मुस्कान में अपार घृणा भरी थी ।

“जिस जानकारी के बल पर तुम शान बघार रहे हो,” उन्होंने कहा—“उसे अनुचित रूप से मेरे कार्यालय के रजिस्टर देखकर तुमने प्राप्त किया था । यह दिखलाने के लिए कि अनुचित साधनों से काम लेने के कारण तुम कैसे मूर्खतापूर्ण निर्णय पर पहुँचते हो, अब मुझे वास्तविक स्थिति तुम्हें बतलानी पड़ेगी । दसवें वर्ष मैंने उसे पाँच हजार रुपये दिये, पन्द्रहवें वर्ष सात हजार और बीसवें वर्ष दस हजार । वह क्लायत से चलनेवाला आदमी है । अपनी सामाजिक स्थिति के अनुसार वह काफी खुशहाल है ।”

रामलाल अपनी जिद पर अड़ा रहा ।

“इसका मतलब यह है कि आपने अपने आश्रितों को उस उदारता के योग्य नहीं समझा जो आप अपने सेवकों के साथ दिखलाते हैं ।” उसने कहा ।

“मैंने अपने आश्रितों के साथ वैसा ही बर्ताव किया जैसा लड़कपन में मेरे साथ किया गया था । मुझसे यह भूल जरूर हुई कि स्वभावों की विभिन्नता की ओर मैंने ध्यान नहीं दिया । उसी भूल के कारण ही तो मैं आज प्रायश्चित्त कर रहा हूँ । केवल तुम्हीं को मैं समझता था और तुम्हारे साथ मैंने वैसा ही व्यवहार किया जिसके योग्य तुम थे । अगर तुम अच्छे आदमी होते और नैतिक सिद्धान्तों के प्रति तुम्हारे मन में अवहेलना का भाव न होता, तो मैं तुम्हें अपना हिस्सेदार बन सकने के योग्य बना देता । मैं जानता था कि तुम विश्वास के योग्य नहीं हो, इसलिए मैंने तुम्हें उस ओर प्रोत्साहन नहीं दिया । अगर किसी कारण से तुम्हारा खयाल हो कि मैंने तुम्हें कोई नुकसान पहुँचाया है, तो याद रखो कि आज मैं चोरी के अपराध से तुम्हांगी रक्षा कर रहा और कल तुम्हें तबाही से बचाऊँगा ।”

रामलाल ने अपना माथा पोंछा । वह निरुत्तर हो गया । श्यामलाल उठ खड़े हुए ।

“अच्छा, अब याद करो कि मैं यहाँ चौकीदार हूँ । तुम्हें अब यहाँ से चल देना चाहिए ।”

रामलाल उठ खड़ा हुआ, और जरा देर में बाहर की सूनी गली में पहुँच गया । उस समय उसकी मनःस्थिति विचित्र थी । श्यामलाल अपने स्थान पर आ बैठे । सीने पर हाथ बाँधे हुए वे सारी रात चुपचाप बैठे रहे । उपर्युक्त घटना से सम्बन्ध रखने-वाली कोई बात उन्हें उतना तंग नहीं कर रही थी जितना एक बात—‘राजमोहन निर्दोष था ।’

१४

प्रकाश की सहायता से राजमोहन की दशा शीघ्र ही सुधर गई। उसकी रचनाएँ प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होने लगीं और साहित्य के क्षेत्र में वह दिन-प्रति-दिन उन्नति करने लगा।

उसका नाटक भी तैयार हो गया। एक नाट्य-कम्पनी उसे खेलने को राजी भी हो गई। लेकिन उस कम्पनी के मालिक महोदय जब कालीनगर से वापस आये, तो उन्होंने उस नाटक को अपनी नाट्यशाला में खेले जाने की आज्ञा नहीं दी। तब अपने एक घनिष्ठ मित्र की सहायता से राजमोहन ने लक्ष्मीनगर की अन्य नाट्यशालाओं में कोशिश करने की एक योजना तैयार की। मिसेज़ अरुणा चटर्जी से भी उस सम्बन्ध में उसने भेट की। मिसेज़ चटर्जी को यह सुनकर आश्चर्य हुआ कि सेठ विमलचन्द्र रेहन ने उसके नाटक को खेलने से इन्कार कर दिया। उन्होंने अन्य दिशाओं में प्रयत्न करने का उसे आश्वासन दिया। दिन बीतते गये। कोई नई बात नहीं हुई। राजमोहन को निराशा तो ज़रूर हुई, लेकिन उसे भूलने की कोशिश करता हुआ वह अपना उपन्यास लिखने में लगा रहा। एक दिन मिसेज़ चटर्जी ने उसे बुला भेजा। आध घण्टे में वह उनके कार्यालय में उपस्थित हुआ। आँखों से चशमा उतारकर उन्होंने एक कुरसी की ओर संकेत किया।

“राजमोहन !” मिसेज़ चटर्जी ने कहा—“लक्ष्मीनगर का कोई थियेटर तुम्हारा नाटक खेलने को राजी नहीं हो रहा है। लेकिन एक खुशख़बरी भी है। यहाँ का सबसे ज़बरदस्त आदमी तुम्हारे नाटक पर लट्टू हो गया है। वामनराव देशमुख कल खुद यहाँ आये थे। उन्होंने तुम्हारे नाटक की बेहद तारीफ़ की।”

“वामनराव देशमुख ! उनसे बढ़कर तो कोई कलाकार मिल नहीं सकता । नाटक लिखते समय मुझे बार-बार उनका खयाल आ रहा था ।”

“लेकिन कठिनाई यहाँ भी है । देशमुख को हाल में एक खेल में बहुत बड़ा घाटा उठाना पड़ा । इस समय उनके पास काफ़ी रुपये नहीं हैं । कमला थियेटर में अभी कुछ समय तक खेल दिखाने का उन्हें अधिकार है, लेकिन वे मजबूर हैं । तुम्हारा नाटक खेलने को उन्हें बड़ी इच्छा है, लेकिन रुपये के बिना तो काम चल नहीं सकता । किसी से सहायता लेना उन्हें ज़रा भी पसंद नहीं है, लेकिन कोई और उपाय नहीं है । तुम्हारा कोई ऐसा मित्र है जो रुपये लगा सके ?”

“कोई नहीं है ।” खेदसूचक स्वर में राजमोहन ने उत्तर दिया—“मेरे तमाम दोस्तों की हालत मेरी ही सी है ।”

मिसेज़ चटर्जी ने दीर्घ निःश्वास खींचा ।

“बड़े दुर्भाग्य की बात है ।” सिर हिलाकर उन्होंने कहा—
“सबसे बड़ी खराबी की बात यह है कि कमला थियेटर पर देशमुख का अधिकार शीघ्र ही समाप्त हो जायगा, और मैंने सुना है कि सेठ विमलचन्द उसे लने के लिए पूछ-ताछ कर रहे हैं ।”

“ये वही हैं न जिन्होंने मेरा नाटक खेलने से इन्कार कर दिया है ?”

“हाँ, वही हैं ।” सिर हिलाकर मिसेज़ चटर्जी ने उत्तर दिया—
“उनसे कभी तुम्हारा झगड़ा तो नहीं हुआ था ?”

“कभी नहीं । मैं तो उनसे परिचित भी नहीं हूँ ।”

“अज्ञात बात है, राजमोहन । मुझे मालूम हुआ है कि अन्य कम्पनियों की अस्वीकृति के पीछे भी सेठ विमलचन्द का हाथ है । कोई न कोई ऐसी बात ज़रूर है जिसके कारण ये हज़रत तुम्हारे पीछे पड़े हुए हैं । खैर, देखा जायगा ।”

राजमोहन बिदा हुआ। उसे खेद तो अवश्य हुआ, लेकिन यह जानकर प्रसन्नता भी हुई कि महान् अभिनेता देशमुख को उसका नाटक पसन्द आया और वह उसे खेलने को उत्सुक है। अपने निवास-स्थान पर पहुँचकर वह फिर उपन्यास लिखने में लग गया। दिन भर वह लिखता रहा। शाम हुई और अँधेरा भी हो गया, लेकिन वह लिखता ही रहा। एकाएक दरवाजे पर थपकियाँ पड़ीं। फिर दरवाजा खुला। एक लम्बे, तगड़े महाशय सामने खड़े थे। राजमोहन उन्हें पहचान नहीं सका।

“आपको मैं पहचान नहीं सका।” उसने कहा—“अन्दर तशीफ़ लाइए।”

उसने उठकर खटका दबाया। कमरे में बिजली की रोशनी फैल गई। वह आश्चर्य से चकित रह गया।

“अरे—चाचाजी!” वह खुशी से चीख पड़ा।

इसमें सन्देह नहीं कि वह राजमोहन के जीवन का सबसे बड़ा आश्चर्य था। मोरा ने अपने एक पत्र में श्यामलाल वर्मा की दयनीय दशा का करुण शब्दों में वर्णन किया था। उसने उसे बतलाया था कि वे तबाह हो गये हैं और रामलाल के कार्यालय में चौकीदारी का काम कर रहे हैं, और राजमोहन ने सोचा था कि उसे किसी तरह उनकी कुछ सहायता करनी चाहिए। लेकिन यहाँ तो, एक चौकीदार के रूप में नहीं, आधुनिकता के रंग में रंगे हुए एक सम्पन्न व्यक्ति के वेष में वे उसके सामने खड़े थे। उनके चेहरे का विकट गाम्भीर्य भी कुछ समय के लिए लुप्त हो गया था।

“सब कुशल है, राजमोहन?” उन्होंने कहा—“तुमसे मिलकर मुझे बड़ी खुशी हुई।”

“मुझे भी आपसे मिलकर बड़ी प्रसन्नता हुई।” राजमोहन ने कहा—“लेकिन आपने तो मुझे चौका दिया। क्या मोरा को यह मालूम था कि आप यहाँ आ रहे हैं?”

श्यामलाल के चेहरे पर एक छाया दौड़ गई ।

“मीरा से इधर मेरी भेट नहीं हुई ।” खेद-सूचक स्वर में उन्होंने कहा—“कई महीने हुए, कालीनगर में एक बार उससे मुलाकात हुई थी । वह खुश दिखाई दे रही थी और अपनी हालत ठीक करने के प्रयत्न में लगी थी । मैंने उससे प्रस्ताव किया कि वह मेरे साथ रहे, लेकिन उसने मेरा आश्रय स्वीकार नहीं किया । उसने कहा कि वह अपनी आजादी नहीं छोड़ सकती ।”

राजमोहन मुस्कराया ।

“थोड़े ही दिनों में वह जो कुछ चाहेगी पा सकेगी ।” उसने कहा—“यहाँ मेरी हालत कुछ सुधर गई है । एक ही अभिप्राय से मैं काम कर रहा हूँ, और वह यह है कि जितनी जल्दी हो सके उससे विवाह करने के योग्य हो जाऊँ ।”

“यह तो बड़ी अच्छी खबर है ।” श्यामलाल ने कहा—“बहुत दिनों से ऐसी खुशखबरी सुनने को नहीं मिली थी ।”

“रामलाल का क्या हाल है ?”

“कालीनगर में व्यवसाय के क्षेत्र में उसने अपने लिए एक विशिष्ट स्थान बना लिया है । उसने गलतियाँ की हैं, लेकिन मेरा खयाल है कि वह सबकुछ भा सीख गया है । वह शीघ्र ही बड़ा अमीर हो जायगा और यही उसकी सबसे बड़ी इच्छा भी है ।”

“अच्छा, अब अपनी बात बतलाइए, चाचाजी । आप यहाँ क्यों आये हैं ?”

“खासकर तुमसे माफ़ी माँगने के लिए ।”

“माफ़ी माँगने के लिए !” आश्चर्य-सूचक स्वर में राजमोहन ने कहा ।

“मैंने अपने मन में तुम्हारे साथ एक बहुत बड़ा अन्याय किया था । उसी के कारण मैं तुमसे अलग रहा, जब मुझे तुम्हारी सहा-

यता करनी चाहिए थी। वह रविवार याद है जिसके दूसरे दिन तुम लोग वज्जीराबाद से खाना हुए थे ?”

“जी हाँ।”

“तुम अकेले फ़ैक्टरी गये थे।”

“बेशक। मुझे वहाँ काराजात वगैरह तरतीब से रखने थे।”

“उस दिन मेरे कैश-बक्स से ५०० निकल गये थे।” श्यामलाल ने कहा—“पाँच सौ के नोट गायब हो गये थे। मुझे यह उसी दिन मालूम हो गया था, क्योंकि मैं भी उस समय फ़ैक्टरी में मौजूद था। मैंने समझा था कि तुम्हीं ने चोरी की थी।”

“हे ईश्वर !” विकल स्वर में राजमोहन ने कहा—“मैं एक हद तक निकम्मा जरूर था चाचाजी, लेकिन अपने जीवन में मैंने कभी किसी का एक पैसा भी नहीं चुराया।”

“मुझे विश्वास है, बेटा।” श्यामलाल ने गम्भीरतापूर्वक आश्वासन दिया—“जिस व्यक्ति ने चोरी की थी उसने अब खुद अपना अपराध स्वीकार कर लिया है। जब मुझे मालूम हुआ कि मैंने तुम्हारे साथ अन्याय किया तो मुझे गहरा धक्का लगा। अपना खेद प्रकट करने के लिए मैं यहाँ चला आया। यह काम अब हो गया, मेरे मन का भार कुछ हल्का हो गया। अच्छा, अब मेरे साथ चलो और मेरे होटल में भोजन करो।”

“जो आज्ञा। आप कहाँ ठहरे हैं ?”

“रङ्गमहल में। भोड़-भाड़ तो वहाँ बहुत रहती है, लेकिन है वह काफी साफ़-सुथरा।”

राजमोहन दङ्ग रह गया।

“बड़ा खर्चीला होटल है।” हैट सिर पर लगाकर राजमोहन ने कहा।

“हाँ, है तो बेशक खर्चीला,” लम्बी साँस छोड़कर श्यामलाल ने कहा—“लेकिन कहीं न कहीं तो ठहरना ही था। इसके

अलावा यह बात भी है कि यहाँ मुझे बहुत दिनों तक रहना भी नहीं है।”

होटल में राजमोहन को श्यामलाल के अनेक नये गुणों की जानकारी प्राप्त हुई। उनके व्यवहार से असीम सहानुभूति और स्नेह टपक रहा था। प्रोत्साहन पाकर वह उन्हें अपना हाल विस्तार-पूर्वक सुनाने लगा। उसने अपनी कठिनाइयों और नाउम्मीदियों का जिक्र भी किया। सेठ विमलचन्द का नाम सुनते ही उनके मन्थे पर बल पड़ गया। उन्होंने राजमोहन को तुरन्त रोका।

“क्या कहा तुमने—विमलचन्द ? उधर मीरा जिस दूकान में काम करती थी वहाँ मैंने इस आदमी के बारे में कुछ सुना था।”

“क्या सुना था आपने ? मुझे भी बतलाइए।”

श्यामलाल एक क्षण तक सोचते रहे।

“उस भेट के बाद बहुत दिनों तक मुझे मीरा का कोई हाल नहीं मालूम हो सका था। मुझे खयाल आया कि सम्भव है, उसे कुछ सहायता की जरूरत हो। एक दिन मैं उस दूकान में पहुँचा जहाँ वह काम करती थी। शृङ्गार और फ़ैशन की चीजों की वह एक बहुत बड़ी दूकान है। मुझे सूचना दी गई कि अब वह वहाँ काम नहीं करती। फिर एक अघेड़ स्त्री मेरे पास आई और मुझसे बात करने लगी। उसने मुझसे कहा कि उसे नहीं मालूम कि वह कहाँ है और उसने यह भी कहा कि मीरा ने उसके साथ बड़ा खराब बर्ताव किया; क्योंकि उसके चली जाने के कारण वह आफ़त में फँस गई। मैं आने लगा तो उसने मुझे रोका और कहा कि मीरा बिना उसकी आज्ञा के विमलचन्द रेहन नामक एक सेठ के साथ कुबेरपुर भाग गई। उसकी इस बात का कुछ खयाल मत करना, राजू। वह स्त्री भूठी है। शुरू से ही मैं यह समझ गया था।”

“अच्छा तो यह आदमी वही है !” राजमोहन मुनमुनाया ।

“मेरा तो यही खयाल है । उस घटना के बाद बहुत दिनों तक मुझे उसकी कोई खबर नहीं मिली । लेकिन अभी चार-पाँच दिन हुए मुझे पता लगा कि वह कालीनगर में मौजूद है । मैंने सोचा कि उससे मिल लूँ, लेकिन बाद में मैंने अपना इरादा बदल दिया और निश्चय किया कि यहाँ से वापस जाने के बाद उससे भेट करूँगा । एक वकील के पास उसके लिए कुछ रुपये छोड़ आया हूँ, ताकि चाहे जो कुछ हुआ हो उसे कोई तकलीफ न हो ।”

“लेकिन, चाचाजी, मीरा ने तो मुझे लिखा था कि आप निर्धन हो गये हैं और एक कारखाने में चौकीदारी का काम कर रहे हैं ।”

श्यामलाल मुस्कराये ।

“उस खबर में थोड़ी सी अतिशयोक्ति थी ।” उन्होंने कहा—
“मैं निर्धन नहीं हुआ हूँ ।”

“बड़ी खुशी की बात है ! मीरा के बारे में आप चिन्ता न करें । एक बार मुझे उसके सम्बन्ध में भ्रम हुआ था और उसका खेद मुझे अभी तक है । अब मैं कभी उसके बारे में कोई सन्देह नहीं करूँगा । हम लोगों से वह बहुत अच्छी है । मुझे तो विश्वास है कि अगर वह एक बार गुएडों के जाल में भी फँस जाय, तो भी सही-सलामत और बेदाग वापस आ जायगी ।”

श्यामलाल के चेहरे से अशान्ति के चिह्न दूर हो गये । आगे मुककर उन्होंने राजमोहन की पाँठ पर थपकियाँ दीं ।

“बहुत ठीक कहा तुमने ! अच्छा, अब कोई नाटक देखने चलो ।”

“अच्छा ! आप नाटक देखेंगे ?”

श्यामलाल मुस्कराये ।

“मेरा दृष्टिकोण अब कुछ बदल गया है । मेरे विचारों में अब पहले की सी कट्टरता नहीं रही । मनोरंजन की हर व्यक्ति

को आवश्यकता होती है। अब मैं उस नियम का अपवाद बना रहना नहीं चाहता।”

×

×

×

×

दूसरे दिन प्रातःकाल जो महाशय उनसे सबसे पहले भेट करने आये वे मिसेज़ चटर्जी के लिए विलकुल अजनबी थे। उनका नाम भी उन्होंने कभी कहीं सुना था।

“मिस्टर श्यामलाल वर्मा ?” आँखों पर चशमा चढ़ाकर नवागन्तुक की ओर कौतूहलपूर्ण दृष्टि से देखते हुए मिसेज़ चटर्जी ने कहा—“कहिए, क्या आज्ञा है ?”

“मैं आपसे एक नाटक के सम्बन्ध में भेट करने आया हूँ।” श्यामलाल ने उत्तर दिया—“राजमोहन वर्मा नामक एक नवयुवक ने उसकी रचना की है।”

मिसेज़ चटर्जी की दिलचस्पी तुरन्त जाग्रत् हो गई।

“बैठिए, जनाब।” उन्होंने कहा—“काम तो मुझे बहुत है, लेकिन उस नाटक के बारे में बात करने के लिए मेरे पास काफी समय है।”

“मैंने सुना है कि वह नाटक यहाँ के एक खास थियेटर में खेला जानेवाला था, लेकिन विमलचन्द रेहन नामक एक व्यक्ति के हस्तक्षेप करने के कारण अस्वीकृत कर दिया गया।

“वेशक,” मिसेज़ चटर्जी ने कहा—“सेठ विमलचन्द न जाने क्यों राजमोहन के विरुद्ध हैं। वह नाटक बड़ा सुन्दर है और लोगों की राय है कि ऐसी अच्छी चीज़ एक मुद्दत से यहाँ के किसी रंग-मंच पर नहीं खेली गई।”

“मैंने यह सुना है कि यहाँ के एक प्रसिद्ध अभिनेता...”

“वामनराव देशमुख ! उन्हें वह नाटक बहुत पसंद है और उनकी प्रबल इच्छा है कि उसे खेलें, लेकिन उनके पास रुपया नहीं है। मैं किसी ऐसे आदमी की खोज में हूँ जो उस खेल में रुपया

लगा सके। अगर आप इसी के सिलसिले में आये हैं, तो बड़ी खुशी की बात है।”

“उस खेल के लिए कितने रुपयों की जरूरत होगी और किसके जरिये से यह काम हो सकेगा?”

“मेरे जरिये से सारा काम हो सकता है।” मिसेज चटर्जी ने उत्तर दिया—“लेकिन यह समझ लीजिए, मिस्टर वर्मा, कि लक्ष्मी-नगर में नाटक खेलना बच्चों का खेल नहीं है। थियेटर का किराया ४०००) मासिक पड़ेगा और उसे कम से कम छः महीने के लिए लेना पड़ेगा। इसके अलावा अन्य कामों के लिए कम से कम पचीस हजार रुपयों की जरूरत होगी।”

श्यामलाल ने तुरन्त जेब से चेक-बुक निकाली।

“तो यह काम आपके ही द्वारा होगा न?”

“क्या आप अकेले ही सारा रुपया लगायेंगे?” मिसेज चटर्जी ने उत्सुकता से पूछा।

“बेशक! इसी के लिए तो यहाँ आया हूँ।”

“वाह! बड़ी खुशी की बात है। मैं अभी देशमुख को फोन करती हूँ। एक थियेटर में उनका कुछ अधिकार है। आप मिस्टर देशमुख से भेट करेंगे न?”

“जरूर! यह अच्छा होगा उस थियेटर के स्वामियों के पास मैं भी उनके साथ चला जाऊँ। मैं चाहता हूँ कि अगर सम्भव हो तो तीसरे पहर तक साग काम पूरा हो जाय।”

टेलीफोन के द्वारा मिसेज चटर्जी ने मिस्टर देशमुख से अनुरोध किया कि वे तुरन्त उनके पास आ जायें।

“सम्भव क्यों नहीं है?” टेलीफोन का रिसीवर रखकर मिसेज चटर्जी ने कहा—“लेकिन ऐसी क्या जल्दी है?”

“बात यह है कि मैं चाहता हूँ कि अगर यह काम पूरा हो जाय तो रात की ही गाड़ी से कालीनगर चला जाऊँ।”

“अगर रुपये पास में हों तो दुनिया का कोई ऐसा काम नहीं जो लक्ष्मीनगर में चन्द घंटों के अन्दर पूरा न हो सके। देशमुख आने ही होंगे।”

“उनके आने के पहले मैं आपको उस कृपा के लिए धन्यवाद देना चाहता हूँ जो आपने मेरी एक भतीजी के ऊपर की थी।”

“आपकी भतीजी? क्या नाम है उसका?”

“मीरा कपूर—वही नवयुवती जिसे एक रात को ग्रैंड होटल में आपने अपने यहाँ आश्रय दिया था।”

“अच्छा! तो आप ही मीरा और राजमोहन के चाचा हैं? आपका जिक्र तो मैंने अकसर सुना था, लेकिन उन लोगों ने मुझे कभी आपका नाम नहीं बतलाया था।”

“उस रात को आपने मीरा के ऊपर बड़ी कृपा की थी।” श्यामलाल ने कहा—“और मुझे बड़ी खुशी है कि आज मुझे आपको धन्यवाद देने का अवसर मिला है।”

“वह तो एक मामूली सी बात थी।” मिसेज़ चटर्जी ने कहा—“मेरी समझ में वह बड़ी नीच स्त्री होगी जो कठिनाई में पड़ी हुई किसी नवयुवती की सहायता न करे। लेकिन आज चूँकि आपसे परिचित हो चुकी हूँ, इसलिए एक बात पूछना चाहती हूँ। क्या आप समझते हैं कि मीरा जैसी सुन्दर लड़की को अपनी रोज़ी कमाने के लिए कालीनगर में अकेली छोड़ देना उचित कार्य था?”

“नहीं, वह मेरी भूल थी।” श्यामलाल ने स्वीकार किया। “अपने तीनों आश्रितों के साथ मैंने कुछ अन्याय किया था और अब प्रतिशोध करने का प्रयत्न कर रहा हूँ। अभी हाल ही में रामलाल को मैंने एक बहुत बड़ी मुसीबत से बचाया है। राजमोहन के लिए जो कुछ कर रहा हूँ वह आप खुद देख रही हैं। मीरा इन दोनों से भिन्न है। उसे मैं अभी तक नहीं समझ सका हूँ। उसके लिए कालीनगर के एक वकील के पास मैं कुछ रुपये छोड़

आया था, लेकिन कल रात को मुझे तार से सूचना मिली कि उसने रुपये लेने से इनकार कर दिया। इसी लिए मैं कौरन कालीनगर जाना चाहता हूँ।”

“मीरा बड़ी प्यारी लड़की है।” मिसेज चटर्जी ने कहा—“अगर हो सका तो मैं उसकी शादी में शरीक होऊँगी।”

“जरूर आइएगा। बड़ी कृपा होगी।”

“लीजिए, मिस्टर देशमुख आ गये।” बाहरवाले कमरे से आई हुई एक सुपरिचित आवाज सुनकर मिसेज चटर्जी ने कहा—“यहाँ आओ वामन और मिस्टर श्यामलाल वर्मा से हाथ मिलाओ।”

१५

मीरा जब तक मिसेज क्रोमर की दुकान में काम करती रही तब तक काफ़ी आराम से रही। लेकिन सेठ विमलचन्द रेहन के कारण उसे वह नौकरी छोड़ देनी पड़ी। सेठजी जैसे धनी थे वैसे ही रसिक भी थे। मैडम की शानदार दुकान में आपके रुपये लगे थे, इसलिए उनके ऊपर आपका दबाव था। आप इस स्थिति से लाभ उठाते थे। मैडम की दुकान में काम करनेवाली नवयुवतियों को अक्सर आपके मनोरञ्जन का साधन बनना पड़ता था। मीरा के ऊपर भी आपकी दृष्टि पड़ी। लेकिन मीरा साधारण नवयुवती नहीं थी। मैडम ने उससे इशारा किया कि अगर वह सेठजी की दावतें क़बूल न करेगी तो उसके हक़ में अच्छा न होगा। विवश होकर मीरा दो-एक बार सेठजी के साथ गई, लेकिन उन्होंने उसके साथ कोई अनुचित व्यवहार नहीं किया। वे जानते थे कि इस मामले में साधारण उपायों से काम नहीं चलेगा। वे धीरे-धीरे जाल फैलाने लगे। एक दिन रात के समय मीरा को मैडम का एक सन्देश मिला, जिसका आशय यह था कि वह माल की खरीदारी के सिलसिले में दूसरे दिन उनके साथ

कुबेरपुर जाने को तैयार हो जाय और नियत समय पर उनसे स्टेशन पर मिले। दूसरे दिन नियत समय पर जब वह स्टेशन पर पहुँची, तो मैडम के बजाय सेठजी से उसकी भेंट हुई। सेठजी ने एक डिब्बे में उसे सवार कराया और बाद में गाड़ी छूटने के समय खुद भी उसी में आ बैठे। मीरा के पूछने पर उन्होंने बतलाया कि मैडम दूसरी गाड़ी से चली गई और वह उनके साथ कुबेरपुर जा रही है। कुबेरपुर पहुँचकर सेठजी ने उसे एक बड़े सुन्दर मकान में ठहराया और उसे बतलाया कि वह एक होटल है। यहाँ भी मैडम से उसकी भेंट नहीं हुई लेकिन उसे उनका एक दूसरा सन्देश इस आशय का मिला कि वह डिनर के समय सेठजी के साथ अमुक रेस्तराँ में उनसे भेंट करे। रात में नियत समय पर मैडम के आदेशानुसार सज-धजकर वह सेठजी के साथ उस रेस्तराँ में उपस्थित हुई। लेकिन मैडम वहाँ भी दिखाई नहीं दीं। संयोगवश महाराजकुमार भीमसिंह उस समय उस रेस्तराँ में मौजूद थे। उनसे मिलकर मीरा को बड़ी प्रसन्नता हुई। अपने निवासस्थान पर वापस आने पर उसे मालूम हुआ कि वह मकान होटल नहीं, सेठजी का निजी घर है। उसकी विकलता अत्यधिक बढ़ गई। उस समय सौभाग्यवश महाराजकुमार वहाँ आ पहुँचे और उन्होंने मीरा से भेंट करने की इच्छा प्रकट की। उन्हें किसी तरह ढाला नहीं जा सका। मीरा ने उनसे सहायता करने का अनुरोध किया। महाराजकुमार ने सेठजी को जी भरकर फटकारें सुनाई और मीरा को अपने साथ लिवा ले गये। मीरा कालीनगर वापस आई। उसने निश्चय कर लिया कि अब वह मिसेज क्रोमर की दूकान में काम न करेगी।

मैडम की दूकान से अलग होने के बाद मीरा की आर्थिक स्थिति फिर डाँवाडोल हो गई। इधर-उधर से ठेके पर टाइप का काम लाकर वह किसी तरह अपना काम चलाती थी। उसके दिन

बड़ी कठिनाई से बीत रहे थे। एक दिन एक वकील का सन्देश पाकर वह उसके कार्यालय में उपस्थित हुई। वकील ने उसे बतलाया कि उसके एक मुअकिल ने उसे आदेश दिया है कि वह मीरा को (१५०) प्रति मास दे दिया करे। अपने उस मुअकिल का नाम उसने बतलाने से इनकार किया। मीरा ने यह समझा कि सेठ विमलचन्द इस तरह उसकी सहायता करना चाहते हैं। उसने रुपये लेने से इनकार कर दिया।

सबेरा हो गया था। बिस्तरे पर पड़ी-पड़ी मीरा धूप की उन मोटी रेखाओं की ओर देख रही थी जो खुली हुई खिड़की से आकर कमरे के फर्श पर पड़ी हुई थीं। वह कमरा था तो बिलकुल मामूली, लेकिन खूब साफ-सुथरा दिखाई दे रहा था। एक ओर एक छोटी सी मेज पर एक टाइपराइटर रक्खा हुआ था और उसकी बगल में टाइप किये हुए कागज तरतीब से सजा कर रखे हुए थे। उसके कपड़े आलमारी में तहाकर रखे थे। एक ट्रे में चाय की एक केटिल और पावरोटी के तान-चार टुकड़े रखे हुए थे। कमरे का कोना-कोना धनाभाव की करुण कहानी कह रहा था। वह जानती थी कि उसे भूख लगी है और पावरोटी के उन टुकड़ों से उसकी भूख मिट नहीं सकेगी। और वह यह भी जानती थी कि अपनी एक प्रिय सखी के साथ वह बाहर घूमने जाना चाहती है, लेकिन उसी कमरे में बन्द रहकर उसे दिन भर काम करना पड़ेगा। बिस्तरे से उठकर, एक झाँकर खोलकर, उसने अपनी पर्स निकाली और उसे खोलकर देखा। पर्स में केवल चार रुपये दस आने थे और आज ही मकान की स्वामिनी को उसे किराये के पन्द्रह रुपये देने थे।

एक दीर्घ निःश्वास खींचकर, पर्स झाँकर में रखकर, वह कमरे से बाहर निकली और गुसलखाने में चली गई। नहा-धोकर आध-घण्टे के बाद जब वह अपने कमरे में वापस आई, तो उसका चित्त

शान्त हो गया था और उसका स्वाभाविक उत्साह लौट आया था। केश सँवारकर और कपड़े बदलकर उसने चाय तैयार की। सूखी हुई पावरोटी खाकर और बिना दूध की चाय पीकर वह मेज के सामने कुर्सी पर बैठ गई और टाइपराइटर खोलने लगी। एकाएक दरवाजे पर थपकियाँ पड़ीं।

“आइए।” दुबिधा-सूचक स्वर में उसने कहा।

दरवाजा खुला। एक सजी-धजी हुई नवयुवती अन्दर आई।

“अच्छा, तुम हो! मैंने तो समझा था कि मिसेज मित्र किराया वसूल करने आई हैं।”

“क्यों, मीरा! आज का प्रोग्राम तुमने क्यों रद्द कर दिया? आज तो रविवार है। क्या आज भी दिन भर इसी कमरे में सड़ती रहने का इरादा है?”

“क्या करूँ नलिनी, मजबूर हूँ। पिछले रविवार को तुम्हीं ने सारा खर्च बर्दाश्त किया था। आज भी मेरे पास सैर के लिए रुपये नहीं हैं और यह अन्याय की बात होगी कि आज का खर्च भी तुम्हीं को बर्दाश्त करना पड़े।”

“यह कोरा स्वार्थ है!” नलिनी ने कहा—“मैं तो सैर के लिए मरी जा रही हूँ और तुम किजल के बहाने कर रही हो। मुझे १०० मासिक मिल रहे हैं, और कपड़ों के लिए भी मुझे बहुत कम खर्च करना पड़ता है। चलो, चलो।”

मीरा चठकर आई और अपनी सखी की बगल में बैठ गई।

“तुम बड़ी प्यारी हो, नलिनी।” उसके कन्धे पर सिर रखकर उसने कहा—“और मैं घृणा के योग्य हूँ। लेकिन वह बात मुझे अच्छी नहीं लग रही है। मैं तुमसे कुछ कर्ज ले लेती अगर यह समझती कि आगे कभी अदा कर सकूँगी।”

“यह बड़ी बेवकूफी की बात है, मीरा।” नलिनी ने कहा—“कभी न कभी तुम्हारे दिन जरूर लौटेंगे और तब तुम्हें धन क

कोई कमी नहीं रहेगी। उस वक्त अगर मैं परेशानी में रहूँगी, तो क्या तुम मेरी मदद नहीं करोगे? जरूर करोगे, मुझे विश्वास है। अगर तुम चाहो तो आज भी तुम्हारी परेशानी दूर हो सकती है। तुम मैडम की दूकान में वापस जा सकती हो। मैडम तुम्हें काट न खायेंगी। जो हो गया सो हो गया। तुम मुझ में यहाँ पड़ी-पड़ी भूखों मर रही हो। अगर तुम्हारा यही हाल रहा, तो तुम्हारा स्वास्थ्य बिगड़ जायगा और यह रङ्ग-रूप गायब हो जायगा। उठो, चलो। अगर तुम नहीं चलोगी तो मैं भी यहाँ से नहीं टूँगी। यह नहीं हो सकता कि तुम इस कमरे में सड़ो और मैं सैर करूँ।”

सहसा दरवाजे पर फिर थपकियाँ पड़ीं। मीरा सिहर उठी।

“शायद मिसेज़ मित्र किराये के लिए आई हैं।” मीरा ने कहा—“उन्हें पन्द्रह रुपये देने हैं और मेरे पास सिर्फ़ चार रुपये दस आने हैं। आइए, मिसेज़ मित्र।”

दरवाजा खुला। हाथ में छड़ी और हैट लिये हुए श्यामलाल वर्मा अन्दर आये। आश्चर्य से चकित होकर दोनों लड़कियाँ उनकी ओर देखने लगीं। श्यामलाल किंचित् अकचका गये।

“अगर मैंने यहाँ आकर गलती की है, तो मुझे अफ़सोस है,” उन्होंने कहा—“लेकिन मैं तुमसे भेंट करने को उत्सुक था, मीरा।” मीरा संभल गई।

“आप हैं मेरे चचा मिस्टर श्यामलाल वर्मा।” उसने कहा—“ये हैं मेरी सखी—मिस नलिनी दास। मैं...”

आगे वह कुछ नहीं कह सकी। श्यामलाल की वेषा-भूषा एक चौकीदार के अनुरूप नहीं थी। उनके शरीर पर एक बहुत बढ़िया सूट था, पैरों में चमकते हुए जूते। हैट भी क्रीमती थी। उनके चेहरे पर भी पहले की सी कट्टरता नहीं थी। ऐसा लग रहा था जैसे उनकी पूरी तरह कायापलट हो गई हो।

“अगर आप मीरा के चचा हैं।” नलिनी ने मुस्कराकर कहा—
 “तो मैं आपसे यह कहना चाहती हूँ कि आप एक योग्य भतीजी के चचा हैं। आप लोगों में से कोई इनकी देख-रेख क्यों नहीं करता ? मेरी धृष्टता माफ़ कीजिएगा। ये बिलकुल बच्ची हैं और इनका स्वाभिमान ऐसा है कि कुछ न पूछिए। आज ही की बात ले लीजिए। इधर हर रविवार को हम दोनों साथ-साथ सैर करने जाती थीं। यह सैर हम दोनों को बहुत पसंद थी और इसमें दोनों रुपये से ज्यादा खर्च नहीं बैठता था। आज भी सैर करने का निश्चय हो चुका था। कल रात को इन्होंने कहला भेजा कि आज मैं नहीं चल सकूँगी। मैंने सोचा कि चलकर देखना चाहिए कि बात क्या है। यहाँ अभी आई तो कारण मालूम हुआ। अपने हिस्से के खर्च के लिए इनके पास रुपये नहीं हैं और इन्हें यह असह्य है कि मैं कुल खर्च बर्दाश्त करूँ। मैं इसरार कर रही हूँ और ये अपनी ज़िद पर अड़ी हुई हैं। बतलाइए, साहब, यह इनका अन्याय है या नहीं।”

“इनकी बात में न आइए, चाचाजी।” मीरा ने कहा—
 “बात यह है कि इधर दो सप्ताह से मुझे काफी काम नहीं मिल रहा है। बड़ी पागल हो, नलिनी ! चाचाजी की आमदनी भी तो ठीक नहीं है। पचीस ही रुपये तो इन्हें मिलते हैं। बड़ा पाजी है रामलाल !”

“तुम्हारे चाचाजी को देखने से तो यह नहीं मालूम होता कि इन्हें सिर्फ पचीस रुपये मिलते हैं।” आश्चर्य-भरी दृष्टि से श्यामलाल की ओर देखकर नलिनी ने कहा।

“यह सच है,” श्यामलाल ने मुस्कराकर कहा—“कि इधर कुछ समय तक मैंने चौकीदारी का काम किया था और मुझे पचीस रुपये मिलते थे। लेकिन वह नौकरी मैंने रुपये के लिए नहीं की थी। उसका असली कारण एक दिन तुम्हें बतलाऊँगा, मीरा।

इस समय जाने दो उस बात को । सैर का विचार बड़ा अच्छा है । आज अगर मैं तुम लोगों का मेज़बान बन जाऊँ तो कैसा रहे ? अपने चाचा का आतिथ्य स्वीकार करने में तुम्हें कोई आपत्ति तो न होगी, मीरा ? तुम्हारी ये सखी—इनका क्या नाम तुमने बतलाया था ? मिस दास ?.....”

“मुझे नलिनी कहिए । मैं तैयार हूँ । हमने चिड़ियाघर जाने का निश्चय किया था ।”

“कार बाहर खड़ी है ।” श्यामलाल ने कहा—“जहाँ कहीं तुम लोग चलना चाहें चलो ।”

“वाह !” बिस्तरे से उछलकर नलिनी ने आह्लाद भरे स्वर में कहा—“आप तो परीदेशवाले चाचा निकले ! आप हम लोगों को बेवकूफ तो नहीं बना रहे हैं ?”

“मेरी भतीजी तुम्हें बतलायेगी कि मैं मज्जाकर करने का आदी नहीं हूँ ।” श्यामलाल ने मुस्कराकर कहा ।

“आप सचमुच इनके चाचा हैं ?”

“बेशक ।”

“तो कृपा कर इस मकान की मालकिन को पन्द्रह रुपये दे दीजिए ।” नलिनी ने कहा—“मीरा का हाथ इस वक्त तङ्ग है और वह कम्बख्त इन्हें किराये के लिए तङ्ग किये डाल रही है ।”

“नलिनी !” विरोधसूचक स्वर में मीरा ने कहा ।

श्यामलाल ने तुरन्त जेब से पर्स निकाली और उसमें से दस-दस के दो नोट निकाले ।

“धन्यवाद, मिस दास !” मीरा की आर नोट बढ़ाकर उन्होंने कहा—“हिसाब साफ कर दो, मीरा । यहाँ के एक वकील के पास मैं तुम्हारे लिए कुछ रुपये छोड़ गया था । लक्ष्मीनगर में मुझे तार से खबर मिली कि तुमने रुपये नहीं लिये । इसलिए मुझे वहाँ से फौरन् वापस आना पड़ा ।”

मीरा उनकी ओर स्थिर दृष्टि से देखने लगी ।

“तो वह रुपये आप ही छोड़ गये थे ?”

“बेशक । मैं समझता था कि तुम रुपये ले लोगी । वकील को मैंने हिदायत कर दी थी कि वह तुम्हें मेरा नाम न बतलाये, ताकि अगर तुम्हें मुझसे रुपये लेने में कोई आपत्ति हो तो भी तुम ले लो ।”

मीरा हाथ मलने लगा । उसकी आँखें सजल हो गईं ।

“और मैंने समझा कि वह रुपये एक दूसरे व्यक्ति के हैं !” उसने कहा—“मैंने बड़ी बेवकूफी की । अगर मैं यह जानती कि वह रुपये आपने दिये हैं, तो जरूर ले लेती । उधर एक बार मैं आपसे नाराज़ जरूर हो गई थी, लेकिन उस वक्त कसूर खासकर राजमोहन का था । मैं हैरान हो गई थी और मैंने समझा था कि आप दोनों को मेरे चरित्र के सम्बन्ध में सन्देह है ।”

“अगर मीरा के ऊपर विश्वास न किया जा सके ।” नलिनी ने जोर देकर कहा—“तो दुनिया की किसी लड़की पर विश्वास नहीं किया जा सकता । ये लाखों में एक हैं । बाज़ वक्त तो इन्हें देखकर हम सी बहुतों को अपने ऊपर लज्जा आती है ।”

“मैं भी शर्मिन्दगी उठा चुका हूँ ।” श्यामलाल ने कहा—“और अब अपनी उस गलती के लिए कुछ जुर्माना देना चाहता हूँ ।”

“अच्छा, अब चलना चाहिए ।” नलिनी ने कहा ।

वे नीचे उतरे । मन में अपार शान्ति अनुभव करते हुए मीरा ने किराया चुकाया । वे मकान से बाहर निकले । नलिनी प्रसन्नता से चीख उठी ।

“अरे यह तो रोल्स रोआयस है ! देखो तो, मीरा !”

“क्या इसी पर चलना होगा ?” मीरा ने सन्देहसूचक स्वर में कहा ।

“जी चाहे तो इस पर रोज सवारी कर सकती हो बेटी । लक्ष्मीनगर जाने से एक दिन पहले मैंने इसे खरीदा था ।”

मीरा ने उनकी बाँह पकड़ ली ।

“राजू से भेट हुई थी ?” उसने धीरे से पूछा ।

“हाँ, मैंने उससे भेट की थी और उसका नाटक भी पढ़ा था । उसका नाटक श्रेष्ठ ही लक्ष्मीनगर के कमला थियेटर में खेला जानवाला है । मिस्टर वामनराव देशमुख नायक की भूमिका में अभिनय करेंगे और वहाँ सब लोग कह रहे हैं कि वह नाटक खूब चलेगा और राजू अमीर हो जायगा । जो हो, दो-तीन महीने के अन्दर राजू यहाँ जरूर आयगा ।”

बड़ा आनन्द रहा । दिन भर वे सैर करते रहे । एक शानदार रेस्तराँ में उन लोगों ने जलपान किया । फिर वे देहात की ओर निकल गये । नलिनी और मीरा की खुशी का ठिकाना न था ।

सन्ध्या के समय नगर की ओर लौटते वक्त श्यामलाल ने देर से छाई हुई निःस्तब्धता भङ्ग की ।

“अच्छा, अब तुम लोगों का क्या प्रोग्राम है ?” उन्होंने पूछा ।

“मुझे कोई काम नहीं है ।” मीरा ने कहा ।

“मुझे भी नहीं है ।” नलिनी ने कहा ।

“तो मुझे बड़ी खुशी होगी अगर तुम दोनों आज रात को मेरे साथ भोजन करो ।” श्यामलाल ने कहा ।

मीरा ने अपनी बाँह उनकी बाँह में डाल दी । नलिनी का स्वीकृति तुरन्त मिल गई ।

“चाचाजी !” मीरा ने कहा—“मैं बड़ी बेवकूफ हूँ । मेरे पास कोई अच्छी साड़ी नहीं है । जो थी, मैंने बेच डाली ।”

“इसकी चिन्ता मत करो ।” नलिनी ने कहा—“मेरे पास कई अच्छी साड़ियाँ और जम्पर हैं । उनमें से एक साड़ी और जम्पर तुम पहन लेना ।”

“ठीक है।” श्यामलाल ने कहा—“मीरा अब उस मकान में नहीं जायगी, नलिनी। तुम एक साड़ी और जम्पर लेकर आठ बजे प्रैण्ड होटल में आ जाना।”

“वहाँ नहीं तो कहाँ जाऊँगी?” मीरा ने कौतूहल-सूचक स्वर में कहा।

“अपना सामान लाने के लिए मैं तुम्हें दस मिनट का समय दूँगा।” श्यामलाल ने कहा—“उसके बाद तुम्हें उस मकान को बिलकुल भूल जाना होगा। प्रैण्ड होटल में मैंने एक सूट ले रक्खा है। मेरा खयाल है कि तुम्हें वह पसन्द आयेगा। तुम्हारी सखी भी चलकर देखें और राय दें कि वह कैसा है।”

एक घण्टे में वे प्रैण्ड होटल पहुँच गये। चाय पीने के बाद वे ऊपर पहुँचे। मीरा को अपना शयनागार और गुसलखाना बहुत पसन्द आया। नलिनी भी बड़ी प्रसन्न हुई।

“काश, मुझे भी एक ऐसे ही चचा मिल जाते!” एक दीर्घ निःश्वास खींचकर नलिनी ने कहा—“अब मैं जाती हूँ, मीरा। तुम्हारे लिए साड़ी और जम्पर लेकर मैं आठ बजे आ जाऊँगी। बड़ा मज़ा रहेगा।”

वह चली गई। मीरा कुछ लजाती हुई अपने चचा की आराम-कुरसी के पास आई और फर्श पर बैठ गई।

“अगर मैं कुछ मूर्ख सी लग रही हूँ, चाचाजी,” उसने कहा—“तो इसमें मेरा कुछ दोष नहीं है। लेकिन अभी तक मैं यह सब नहीं समझ पा रही हूँ। इस जीवन से कुछ ऊबने लगी थी। अब भी मुझे पूरी तरह विश्वास नहीं हो रहा है कि आप मेरे वही पुराने चाचाजी हैं।”

“हम दोनों अब जीवन को एक दूसरे ही दृष्टिकोण से देख रहे हैं, बेटी।” श्यामलाल ने कोमल स्वर में कहा—“हम दोनों ने भूलों की हैं। फर्क सिर्फ इतना है कि तुम्हारी भूलों का कारण

तुम्हारी कम उम्र थी लेकिन मेरी भूलों का कारण मेरी कट्टरता थी। अच्छा, अब मैं कुछ देर के लिए यहाँ से जाता हूँ। तब तक तुम आराम कर लो।”

भोजन का समय आया। वे रेस्तराँ में पहुँचे। श्यामलाल एक बढ़िया डिनर-सूट पहने हुए थे। मीरा और नलिनी सुन्दर साड़ियाँ धारण किये हुए थीं। श्यामलाल ने उपयुक्त मेज़ और बहुत बढ़िया भोजन का आर्डर दिया था। तमाम चीज़ें बड़ी स्वादिष्ट थीं। थोड़ी सी हलकी मदिरा भी थी।

भोजन जब समाप्त के समीप पहुँचा, तो श्यामलाल ने जेब में हाथ डालकर चमड़े का एक छोटा सा सुन्दर बक्स निकाला। बक्स के ऊपर जवाहरात की एक बड़ी प्रसिद्ध दूकान का नाम लिखा था और उसके अन्दर बहुमूल्य मोतियों का एक बड़ा सुन्दर हार था।

“मैं नहीं जानता, मीरा,” श्यामलाल ने कहा—“कि तुम्हें कौन सी चीज़ पसन्द है, लेकिन लक्ष्मीनगर की इस दूकान के मालिक ने मुझे सलाह दी कि मैं तुम्हारे लिए मोतियों का यह हार खरीदूँ। इसे पहन लो, बेटी।”

मीरा ने हार पहन लिया। उसकी आँखों में आँसू छलक आये और मोतियों से खेलती उसकी उँगलियाँ काँप उठीं।

“वहाँ एक चीज़ और मुझे पसन्द आई थी।” जेब में फिर हाथ डालकर श्यामलाल ने कहा—“उसे भी मैंने खरीद लिया था। यह है वह चीज़। इसे मैं आज की स्मृति में तुम्हारी सखी को भेंट करना चाहता हूँ।”

उन्होंने नलिनी की उँगली में हीरे की एक सुन्दर अँगूठी पहना दी। हर्षातिरेक से नलिनी स्तब्ध रह गई।

“मीरा!” उसने कहा—“अगर मैं जाग पड़ूँगी, तो मर जाऊँगी। इस तरह की अँगूठी के लिए मैं एक ज़माने से लाला-

थित थी, लेकिन मुझे स्वप्न में भी यह आशा नहीं हुई थी कि एक दिन मुझे ऐसी चीज़ मिल सकेगी। मुझे ऐसा लग रहा है जैसे मैं स्वप्न देख रही हूँ। बेलो, मीरा, नहीं तो मैं पागल हो जाऊँगी।”

मीरा आगे झुक पड़ी। उसके गले से लटकते हुए मोती झलमला उठे।

“यह स्वप्न नहां है, नलिनी।” उसने कहा—“सब कुछ यथार्थ है—“अत्यन्त सुन्दर, अत्यन्त अद्भुत यथार्थ है।”

१६

एक वर्ष बाद।

अर्ध-रात्रि का समय था। ग्रैंड होटल के जगमगाते हुए हाल में मीरा, उसके पति, गजमोहन वर्मा, और उसके चचा, श्यामलाल वर्मा, एम० एल० ए० अपने मेहमानों की प्रतीक्षा में खड़े थे। राज-मोहन का नाटक उस रात को कालीनगर में पहली बार खेला गया था, और वे अभी थियेटर से वापस आये थे। हाल में उस समय काफी भीड़ थी, और हर तरफ उसी नाटक की चर्चा थी। टीका-टिप्पणी के बड़े मनोरंजक शब्द रह-रहकर उनके कानों में पड़ रहे थे। एक प्रसिद्ध समालोचक मीरा के समीप ही खड़े हुए अपने मित्रों से बातें कर रहे थे। उन्होंने बड़े स्पष्ट रूप से अपनी सम्मति प्रकट की।

“इस नाटक का रचयिता एक नया लेखक है,” उन्होंने कहा—“और अभी नवयुवक ही है। लेकिन बड़ी ज़बरदस्त चीज़ उसकी कलम से निकली है। कल क्लब में उससे मेरी भेंट होगी, हम लोग उसे एक दावत दे रहे हैं। शायद वर्मा ही वह व्यक्ति है जिसकी हम प्रतीक्षा कर रहे थे। एक महान् कलाकार की समस्त विशेषताएँ उसमें मौजूद हैं। प्राचीन यूनानी कलाकारों के दृष्टि-

क्षेत्र की तरह उसका दृष्टि-क्षेत्र भी विशाल और भव्य है और उसके ऊपर आधुनिकता का भी गहरा रंग चढ़ा हुआ है। जीवन की उन साधारण बातों पर भी उसकी दृष्टि रहती है जो छोटी होते हुए भी अत्यन्त महत्वपूर्ण और प्रभावशाली होती हैं।”

“रहने दो, यार।” उसके एक साथी ने कहा—“यह सब ‘क्लेरियन काल’ के लिए रख छोड़ो।”

“अभी दफ़्तर जाकर इस नाटक की समालोचना लिखूँगा।” समालोचक ने कहा—“जो कुछ इस समय कह रहा हूँ वह सब उसमें भी रहेगा।”

वे आगे बढ़ गये। मीरा ने हँसकर अपने पति की ओर देखा।

“होशियार रहना।” उसने कहा—“कहीं ऐसा न हो कि कल तुम्हारा दिमाग़ फिर जाय।”

“मेरा दिमाग़ तो इस समय ही फिर गया है, मीरा।” अनु-रागभरी दृष्टि से उसकी ओर देखकर राजमोहन ने कहा।

तब रामलाल सिनहा क्लोथ-रूम से निकलता हुआ दृष्टिगोचर हुआ। सदैव की भाँति उसके चेहरे और वेष-भूषा से मिथ्या-भिमान टपक रहा था और वह कुछ मोटा भी हो गया था। एक क्षण रुककर वह मीरा के समीप आया। श्यामलाल और राज-मोहन एक प्रसिद्ध राजनीतिज्ञ से बात कर रहे थे।

“कहो, मीरा, क्या हाल है।” रामलाल ने कहा—“मामाजी के ऊपर तो तुमने खूब रंग जमा रक्खा है।”

मीरा हँसने लगी।

“मैं क़रीब-क़रीब हर सौदे में सफल रहता हूँ,” रामलाल ने कहा—“लेकिन अगर कभी हार खा जाता हूँ तो हार स्वीकार करने में मुझे शर्म भी नहीं मालूम होती। मामाजी से मैं पेश नहीं पा सका। इनके मुक्काबले में मुझे मुँह की खानो पड़ी। लेकिन मुझे इसका कोई अफ़सोस नहीं है। आखिर ये मेरे मामा ही

तो हैं। एक बात आज तक मेरी सभझ में नहीं आई। इन्होंने मेरे कार्यालय में चौकीदार बनना क्यों पसंद किया था ?”

“शायद अन्तर्गतात्मा की प्रेरणा के कारण,” मीरा ने कहा — “यद्यपि मेरी सभझ में उनसे कोई बहुत बड़ी भूल नहीं हुई थी। तुम उन्हीं से क्यों नहीं पूछते ?”

“मामाजी मुझसे ज्यादा बात करना पसंद नहीं करते। मैं तुम दोनों से अच्छा निकला, लेकिन न जाने क्यों मामाजी मुझसे भागते हैं। राजमोहन का क्या हाल है ? उसकी हालत कुछ सुधरी ?”

“हाँ, कुछ तो जरूर सुधरी है। अब वे मेरे पति हैं। हाल ही में उनके साथ मेरी शादी हुई थी।”

“अच्छा !” आश्चर्यपूर्ण स्वर में रामलाल ने कहा—“खैर, तुम जानो तुम्हारा काम जाने। तुम्हें अब कोई डर भी नहीं है, मामाजी की सहायता तो तुम्हें प्राप्त ही है। आज तो तुम लोगों की खूब खातिर हो रही है। हम लोग यहाँ सप्ताह में तीन बार आते हैं। मेरी पत्नी का रंग-मंच से बड़ा प्रेम है।”

जिन महाशय से श्यामलाल ने राजमोहन का परिचय कराया था वे एक प्रसिद्ध साहित्यकार और पर्यटक भी थे। वे राजमोहन से घुल-घुलकर बातें करने लगे। श्यामलाल धूमकर मोरा और रामलाल के समीप आये। रामलाल ने तुरन्त उनकी ओर हाथ बढ़ाया।

“बधाई, मामाजी !” रामलाल ने कहा—“चुनाव में आपकी जीत की खबर सुनकर मुझे बड़ी खुशी हुई।”

“धन्यवाद, रामू !” श्यामलाल ने कहा—“मीरा को तुम नहीं भूल सके ?”

“जी नहीं। इन्हें भूल सकना असम्भव है। पहले भी मैं इनसे बराबर भेट करता था।”

मिसेज रामलाल सिनहा आ पहुँचोँ । आपका भारी भरकम शरीर खूब सजा-धजा था ।

“चलो, रामू !” अपने पति के कंधे पर थपकी देकर मिसेज सिनहा ने कहा ।

“आओ, उषा !” रामलाल ने कहा—“मामाजी से तुम्हारा परिचय करा दूँ । मिस्टर श्यामलाल वर्मा—मिसेज उषा सिनहा ।”

मिसेज सिनहा ने कुछ हिचक के साथ श्यामलाल से हाथ मिलाया । वे मीरा की ओर अवहेलना की दृष्टि से देखने लगीं ।

“आपसे मिलकर मुझे बड़ी खुशी हुई ।” श्यामलाल ने कहा—“रामू, यह भूल गये कि मीरा भी यहाँ मौजूद है । मिसेज सिनहा, ये हैं मेरी भतीजी, मिसेज मीरा वर्मा । मैं इनका भी अभिभावक था ।”

मिसेज सिनहा ने अन्यमनस्कता से सिर हिला दिया । अपने पति को चलने का आदेश देने के लिए उन्होंने मुख खोला ।

“मामाजी केन्द्रीय एसेम्बली के मेम्बर हैं, उषा ।” रामलाल ने कहा—“मैंने सुना है कि आप यहाँ एक कोठी भी खरीद रहे हैं ।”

“अच्छा, आप केन्द्रीय एसेम्बली के मेम्बर हैं !” कृपा-सूचक स्वर में मिसेज ने कहा—“बड़ी खुशी की बात है । मैं तो चाहती हूँ कि अब रामू भी राजनीति में दिलचस्पी लेना शुरू कर दें ।” आज यहाँ खूब चहल-पहल है, मामाजी ।”

उत्तर में श्यामलाल ने कुछ मुनमुना दिया । उन्होंने मीरा की बाँह अपनी बाँह में ले ली ।

“हम लोग अभी थियेटर से चले आ रहे हैं ।” मिसेज सिनहा ने शान से कहा—“आज ‘मेरी दुनिया’ की पहली रात थी । बड़ा सुन्दर नाटक है ! खूब चलेगा ।”

“हम लोग भी उसे देखने गये थे ।” श्यामलाल ने कहा ।

“अच्छा ! आज तो वहाँ बड़ी मुश्किल से जगह मिल रही थी।”

“बात यह है कि वह नाटक मेरे पति ने लिखा है।” मीरा ने मुस्कराकर कहा।

“वह नाटक आपके पति की रचना है !” अविश्वास-सूचक स्वर में मिसेज सिनहा ने कहा।

“वह तो प्रेममोहन नामक किसी लेखक की रचना है।” रामलाल ने कहा—“उसने इस खेल से बड़ा रुपया पैदा किया है। साल भर से यह लक्ष्मीनगर में चल रहा है।”

“प्रेममोहन राजू का कर्जी नाम है।” श्यामलाल ने कहा—“लो राजू खुद आ गये।”

राजमोहन ने कुछ हिचक के साथ रामलाल से हाथ मिलाया। फिर मिसेज सिनहा से उसका परिचय कराया गया।

“मैंने बड़ी आश्चर्यजनक बात सुनी है, राजू !” रामलाल ने कहा—“क्या सचमुच तुम्हीं प्रेममोहन हो ?”

राजमोहन ने सिर हिलाकर स्वीकार किया।

“लक्ष्मीनगर में लोगों ने राय दी कि पहले खेल के लिए कर्जी नाम ज्यादा अच्छा रहेगा।” उसने कहा।

मिसेज सिनहा एकाएक मुकीं और बड़े जोश के साथ मुकीं।

“मिस्टर वर्मा !” राजमोहन से हाथ मिलाकर उन्होंने कहा—“मैं हृदय से आपको मुबारकबाद देती हूँ। एक दिन हमारे घर आने का कष्ट कीजिए। अपने साथ मिसेज वर्मा का भी ले आइएगा।”

“आप बड़ी मेहरबान हैं।” राजमोहन ने कहा।

“मिस्टर देशराज टण्डन।” मिसेज सिनहा ने कहा—“जो आपके नाटक में नायक का अभिनय कर रहे हैं, बड़े जबरदस्त अभिनेता हैं। जिस किसी खेल में वे अभिनय करते हैं उसे मैं प्रशंसित देखती हूँ।”

राजमोहन ने बिदा लेने के लिए सिर झुकाया ।

“मिस्टर टगडन महान् अभिनेता हैं ।” राजमोहन ने कहा—
“देखिए वे अपनी पत्नी के साथ उतरे आ रहे हैं । आज वे हमारे मेहमान हैं । अब आप हमें माफ़ करें, मीरा !”

मिस्टर और मिसेज़ सिनहा अनिच्छा-पूर्वक आगे बढ़े । मीरा शोघ्र ही नये और पुराने मित्रों से घिर गई । प्रकाशनारायण हुक् भी उपस्थित थे । नलिनी भी मौजूद थी । उन लोगों की वह ‘सपर-पार्टी’ बड़ी अद्भुत रही । रेस्तराँ के मध्य में एक सुन्दर गोल मेज लगाई गई थी । सब लोगों की दृष्टियाँ उन लोगों की ओर लगी थीं । दूर के एक कोने में बैठे हुए मिस्टर और मिसेज़ सिनहा भी उन लोगों को ओर ईर्ष्या-पूर्ण दृष्टि से देख रहे थे ।

“ठीक ठङ्ग के लोगों से मेल-जोल बढ़ाना तुम्हें नहीं आता ।” मिसेज़ सिनहा ने चिढ़कर कहा—“मिस्टर बमो तुम्हें देखकर खुश नहीं हुए ।”

“तुमने उसकी बीबी का बड़ा अपमान किया था ।” रामलाल ने याद दिलाया ।

“मैं क्या जानती थी कि वह छोकरी कौन है ।” मिसेज़ सिनहा ने क्रोधपूर्ण स्वर में कहा—“उस दिन उस पार्क में तुम्हें उससे घुल-घुलकर बातें करते देखकर मेरा उससे चिढ़ जाना स्वाभाविक था ।”

“और मुझे ही क्या मालूम था कि राजू एक दिन इतना आदमी बनगा । पहले तो वह पूरा गधा था । थोड़ी सी रक़ भी वह ठीक-ठीक नहीं जोड़ पाता था ।”

“वहाँ वे हैं, यहाँ हम हैं !” खेदसूचक भाव से सिर हिलाकर मिसेज़ सिनहा ने कहा ।

दावत के दौरान में राजमोहन के नाम लक्ष्मीनगर से आया हुआ एक तार पढ़कर सुनाया गया—

“कम्पनी की ओर से शुभ कामनाएँ और बधाइयाँ ! चौदहवाँ महीना आज पूरा हो गया । आज भी थिएटर बिलकुल भरा हुआ था ।—वामनराव देशमुख ।”

“हम यह रेकार्ड तोड़ देंगे !” टंडन ने विश्वासपूर्वक कहा ।

“नाटक और नाट्यकार दीर्घजीवी हों !” किसी ने प्रस्ताव किया ।

टोस्ट उत्साहपूर्वक पान किया गया । राजमोहन और मीरा की आँखें मिलीं । मीरा ने अपना गिलास उठाकर अँधेरे सहन की ओर देखा । राजमोहन उसका मतलब समझ गया । वह भी अपना गिलास उठाकर सहन की ओर देखने लगा । एक विचार एक-के मस्तिष्क से उड़कर दूसरे के मस्तिष्क में पहुँचा । अज्ञ आलोक है—कल अन्धकार था ! आज खुश होना चाहिए, लेकिन कल को न भूलना चाहिए ।

